ISSN : 2582-1342

खेती-किसानी विशेषांक

भोजपुरी साहित्य सरिता

जुलाई 2023 / वर्ष 7, अंक-4

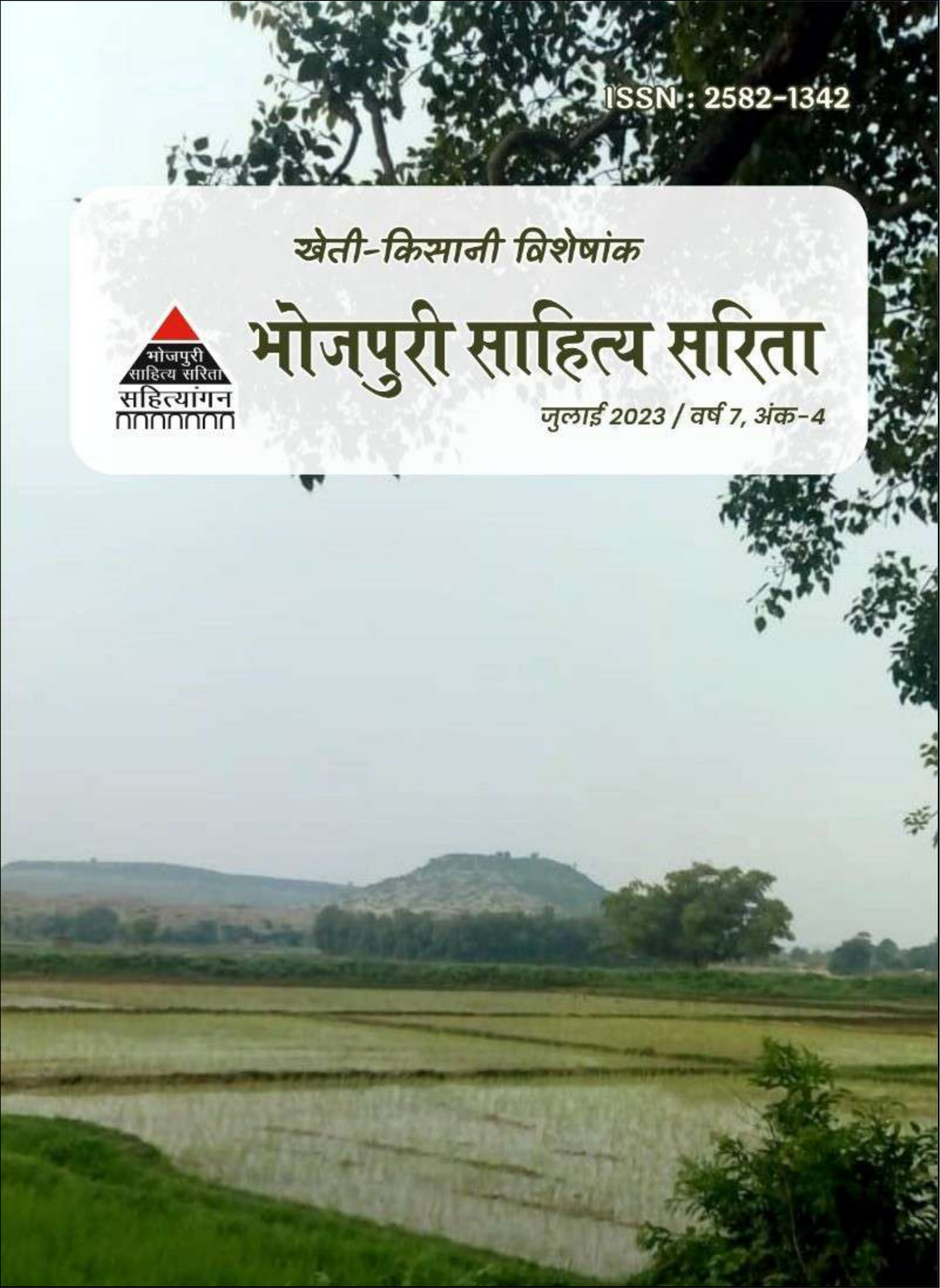

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518
CNS
Network Services
CompuNet Solution
COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING
GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
बुकिंग मात्र
11000 में
FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक
जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक
डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक
केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक
डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

सलाहकार सम्पादक
मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग
सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग
आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना

♦ **कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से** ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

खेतिहर अजुवों जस के तस बा
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

• धरोहर

किसान – रामजियावन दास बावला /6

आलेख / शोध लेख / निबंध

घोड़परासी–डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण / 7–9
लोकउकितन में खेती के बात
– दिनेश पाण्डेय / 25–30
खेती–बारी: बेद से लबेद तक
–डॉ रामरक्षा मिश्र विमल / 32–34
जिनगी गाँव के : रोज जीये मुवे वाला सुभाव के
–भगवती प्रसाद द्विवेदी / 35–36
जैविक खेती: एगो विचार– ज्योति द्विवेदी / 38
भोजपुरी के किसानी कविता
– डॉ सुनील कुमार पाठक / 43–46
लोक–परंपरा आ लोकगीतन में
खेती–किसानी, परब–त्योहार
– केशव मोहन पाण्डेय / 47–49

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

बिजुली–सविता गुप्ता / 15
उमेद–आरती श्रीवास्तव 'विपुला' / 15
अपनइत– डॉ रजनी रंजन / 17–20
बाएन– विद्याशंकर 'विद्यार्थी' / 21–22

• संस्मरण

हर के मुठिया–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 10–11
इयाद के मोटरी–मीनाधर पाठक / 12–14
कृषि प्रधान देश–राजू साहनी / 31
आजु गउवाँ के खेती सपना भइल
– डॉ सच्चिदानन्द द्विवेदी / 39–40

• कविता/गीत/गजल

गीत–सुरेश कांटक / 9
किसान–अजय साहनी / 11
हम किसान हईं–योगेन्द्र शर्मा 'योगी' / 14
अन्नदाता–चंद्रेश्वर / 16
खेत– सविता गुप्ता / 20
उहवाँ उ जवान त हमहूँ किसान इहवाँ–अंकुश्री / 22
पइचा पर पानी–सन्नी भारद्वाज / 23
गीत–धीरेन्द्र पांचाल / 23
खेतिहर–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 24
देशवा के शान मोर किसान–लाल बिहारी लाल / 37
बरखा बहार– हीरालाल द्विवेदी 'लाल' / 37
दुख के चादर हरदम ओढ़ेला किसनवाँ
– डॉ राम बचन यादव / 40
जिनगी रोटी ना है– केशव मोहन पाण्डेय / 41
सृजन के ताप बटोरत–डॉ बलभद्र / 41
भारतीय किसान–डॉ राजेश कुमार माँझी / 42
महिनका धान–लालबहादुर चौरसिया 'लाल' / 42
गीत–सरोज त्यागी / 49
ए सरकार! किसान हईं हम–संजीव कुमार त्यागी /50

गीत–संतोष भोजपुरिया / 50

■■

खेतिहर अजुवों जस के तस बा ----

'खेती बाढ़े अपने करमे', 'आगे खेती आगे-आगे, पाछे खेती भागे जोगे' जइसन कतने कहाउतन से भोजपुरिया लोक गह गह बाटे। बाकिर कतों न कतों ई कुल्हि कहाउत कई गो बातिन के खुलासा करे क समरथ रखले बाड़ी स। पहिल बात ई कि भोजपुरिया समाज के अर्थव्यवस्था के रीढ़ खेती-किसानी आ पशुपालने रहल बा। कवनो दौर के भोजपुरी लोक साहित्य होखे भा भोजपुरी भाषा साहित्य संत आ कवि लोग खेती-बारी पर जनता के जगावे आ उनुका तकलीफ बतावे में कबों कोताही नइखे कइले। बाबा कबीर के समय से भोजपुरी कविताई में खेती किसानी के बात जवन शुरू भइल, उ स्वतन्त्रता के पहिलहूँ होत रहल बा, स्वतन्त्रता के बादो हो रहल बा। अउर त अउर एहु घरी ठसक का संगे हो रहल बा। एह देश के सभेले निरीह जीव किसाने नु ह,ओही के जिआवत, मुआवत आ बेंचत पहिलो के सरकार रहल आ एहू घरी के सरकार बा। जवना का चलते खेती-किसानी से एगो बहुत बड़ जनसंख्या अलग होके मजूरी कइल सवीकार क लेहलस भा अउर कवनो दोसर पेसा अख्तियार क लेवे में आपन भलाई मान लेहलस। ई गलतो नइखे। खेती-किसानी सामूहिक श्रम के सभेले लमहर उदाहरण हवे। गाँव-गिराव में खेतिहर मजूर मिलते नइखे आ जवन लोग हइयो बा, कइल नइखे चाहत। कारण सोझा बा-मुफतखोरी। खेती-किसानी आजु अपना संगे चुनौतियन के अंबार बटोर चुकल बा। आजु के नवहा लोगन के खेती किसानी में कवनो संभावनो नइखे देखात। अजुवो खेती सुखार आ दहार के भेंट चढ़ रहल बा। पशु पालन से लगाव कम भइला के कारण रासायनिक खाद आ कीटनासक दवाइयन के बोलबाला हो चुकल बा। जमीन के उर्वरा लगातार घट रहल बा। किसानन के उपज के उचित मूल्यो नइखे मिल पावत। किसान दिनो-दिन अउर गरीब भइल जा रहल बा।अजुवो सरकार किसान के बाति सुने के तइयार नइखे। एही से एह देस में किसानन के आत्महत्या के खबर आम बात बन चुकल बाटे।

गाँवन से नवहा सहर का ओर पलायन कर चुकल बा। सहर में कामो बा आ पइसो मिल रहल बा। साक्षरता बढ़ला का चलते नौकरी के पाछे युवा भाग रहल बा। खेती में सबकुछ कइला का बादो ओकर मूल्य के निर्धारन सरकार के लगे बा। जबकि कवनो अउर धंधा में अइसन नइखे।एही का चलते किसान आंदोलन आपन सकल अख्तियार कइलस। किसान सड़क पर आइल, तमाम कष्ट उठवलस आ सरकार किसानन पर मुकदमो लाद देलस। एम एस पी के बाति पर अजुवो सरकार गोलमोल जबाब दे रहल बा।खेती में खरच बहुत बढ़ चुकल बा, उहें प्राप्ति ढाक के तीन गो पतई।

भोजपुरी साहित्य सरिता के खेती किसानी विशेषांक बहुत कुछ समेटे क परयास कइले बा। खेती-किसानी अइसन बिसे बा जवना के एकाध अंक में समेटल मोसकिल बा। बाकि एकरा के कुछ त समेटे क परयास मानल जा सकेला। पाठक लोगन के लगे कुछ त समृद्ध सामग्री चहुंपी, ई हमार बिसवास बा। हमरा एह बिसवास के रउरा सभे के नेह छोह जरूर भेंटाई। एही कामना के संगे, एगो साँच उकेरत -----!!

कब ले रोई, कहाँ ले गाई
कब ओकर किस्मत फरिआई
जब ले ओकर पेट जरत हौ
अन्नदाता का कहल सोहाई ?
कब ले ओकर मास बेंच के
ओही के मुअवावल जाई
हेरत बानीं एकर उत्तर
झूठिया आस धरावल जाई
जागीं जागीं ए सरकार
एह दुख पर रउरे बस बा। खेतिहर---

■■

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

किसान

1

ढोवै दुनियाँ भर के भरवा खेतिहरवा।

भोरहीं क चलल किरिन डूब जात बाय
तरई गिनत सारी रतिया सिरात बाय
टूटि जाला अपने न टूटे दे असरवा खेतिहरवा।

केहू न भुलाई रे किसान तोर करनी,
तोहई खेवइया सारी दुनियाँ क तरनी
कठिन करेज तोर कठिन जंगरवा खेतिहरवा।

तपती तपन चाहे सीत क लहरिया
देहियाँ अंगेज लेत बरखा बयरिया
सपना बोलावे बदे खोदैला पहरवा खेतिहरवा।

भोग रोग जानि के मचान क निवासी
खेत में किसान के प्रयाग तीर्थ कासी
बावला कुदार लेइके कन्हवा पर हरवा खेतिहरवा।

2

चाहे केहु केतनों दुखाइले दबाइले
चाहे अजमाइ केहु मारिलेउ पेटा
दउ रूठ जाँय चाहे रजवा कोंहाइ जाव
ससुरी समइया अइठि जाउ घेंटा
दुनिया के जाल–जंजाल समेटले बा
कसले बा कसिके कमरिया में फेंटा
साहसी सपूत अनुकूल बल बहियाँ क
कबों न निरास हो किसनवा क बेटा॥

■■

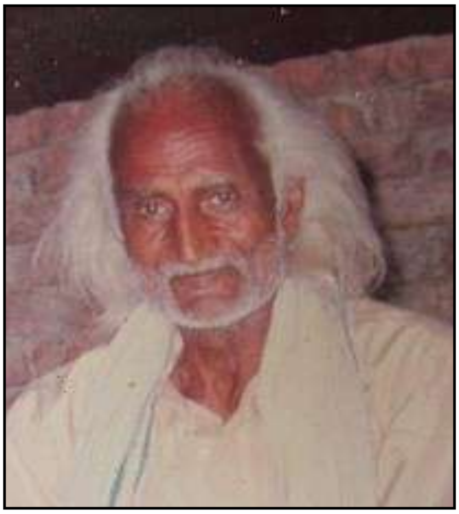

रामजियावन दास 'बावला'

जन्म– 1 जून 1922

मृत्यु– 1 मई 2012

पता–
भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.) – 232103

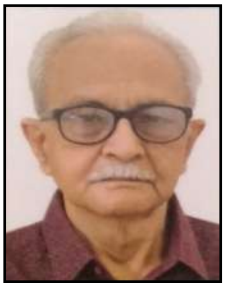

घोडपरासी

डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण

बसंती गीत गुनगुनावत मस्ती में पथरौर पर गोइँठा पाथत रहली। उनकर मुहबोला भाई रामप्यारे भइया के मेहरारू चुपके से दबे पॉव आके बसंती के पास खाड़ भगइली। बसंती मुसुका के गोंइठा पाथत बोलली,''चोरी–चोरी खाड़ हो के का निहारत बाड़ू।''
''हम ना जानत रहीं कि हिरनी के पीछहूं ऑख होखे ला!''
''देख लेहलू नु! आज ननदिया के इयाद कइसे आगइल ?''
''तू त पूरा जवार के हिरोइन भ गइल बाड़ू।जेने जा तोहरे चर्चा सुने के मिलत बा!''
''अच्छा ई बात बा!आजु तोहरा कोई आउर ना भेंटाइल हा।सबसे बेवकूफ हम हीं भेंटइली हॉ नु? असल बात बतावे काहे खातिर अइलु हा।''
''कुछ बतावे के बा आ कुछ पूछे के बा आउर कुछ बुझे के बा। बिसनाथ चउधरी कहलहन हा कि उनकर टराक्टर मरम्मत हो के आगइल बा।दू दिन में तोहरा जवन काम करावे के बा ऊ करा ल। ओकरा बाद फिर उनकर काम में लाग जाई।
''आउर जाने के का हवे?''
''जाने के त ढेर बा। पहिले ई बताव कि बासमति चाउर के कौन किसिम रोपले रहू तोहनी के।उपज भी निकहा अच्छा भइल बा आ सुगंध अतना बा कि तोहरा खलिहान के पास से गुजर ते गम–गम महकत बा!मन खुस हो जाता।अभी ना दौनी भइलबा, ना ओसवनी भइल बा, तब एतना गमकत बा।''
''दू किसिम के बासमती के बीज लगवले रहन नवल के बाबू।नवल के कहला पर पूसा–1460 आ पूसा सुगंध ३।पूसा 1460 बासमती धान के एगो उनत किसिम हे। एकर दाना लमहर आउर खाए मे सुआदिष्ट होखे ला।ओसही पूसा सुगंध ३ भी उनत किसिम के बासमती धान हउवे। तोहरा पूछे के ना पड़े हम ही बता देत बानी कि बाकि खेत में पंत धान –१२ दू बिगहा आ आई आर 64 तीन बिगहा में रोपाइल रहे!''
'' 'ई आर चउंसठ' के त हमनींओ के रोपले रहीं जा।एकरा में कीरा आउर रोग–बीमारी से लड़े के ढ़ेर छमता बा।''
''जानत बाड़ू भउजी एकर सबसे बड़हन गुन बा कि ई सूखा के इस्थिति के सहनउक हवउवे।''
''अच्छा बुझे के ई बा कि डीह के माटी काट के समतल करववत बाड़ू लोग।बड़ नीक काम हो खत बाटे।बहुत पहले ही हो जाए के चाहत रहे। खैर,ई बताव कि ओकर माटी से जवन तोहार चार कठ्ठा के डबरा बेकार परल रहे, ओकरा के भरवावे के जगह चारो ओरिआ ऊँचा मेढ़ बनवावत बाड़ू हो!काहे वास्ते?''
''पूरा हो जाइ तब देखीह!ओकरा में काट छांट के चौखूंटा, कम गहराई वाला तालाब बनी आ खास किसिम के धान रोपाई आ मछली पालन भी कइल जाई। बाकि बचल माटी से खेत के मेढ़ ऊँचा करके धान रोपनी आउर मछली पालन ओहनिअन में भी करब जा।सरकार परोतसाहन देत बा।धान के खेत में मछली भी साथ–साथ पालल जाय।''
''एकरा से त खेती खराब ना होखी? मछरी कम गहीर होखे के कारन मर ना जइहन?''
'' ना भउजी।नोकसान के जगह फायदे–फायदा बा।धान के खेत में मछली पाले से ओकरा सब जरूरी पोसक तत्व मिल जाए ला।मछलीयन सब कीट नियंत्रण में मदद करेली सन। एह से कीटनासक के जरूरते ना पड़े ला।ई सब कारन से खेती के लागत में भी कमी आजाए ला।''
''इ त बहुते बढ़िया बात बतवलू।तू लोग के एकर जनकारी कइसे भइल हा?''
''नवल बतइलस हा।''
''हँ त खेतिए के इंजीनिअरिंग के पढाई करत बा त ठीके बतइले होई। खेतिहर के तरक्की होखबे करी।गॉव के लोग भी देखादेखी फायदा उठइबे करी हें।ठीक कहतनी नु?''
''सोरहो आने!हमार बेटा केवल हमरे ना ह ,ओकरा पर गॉव के लोग के भी हक बा।देखी ह अगला सावन में पढ़ाई पूरा करके आई ता ई गॉव के खेती के काया पलट दी।ई ओकर सपना बा।''
''देवर बबुआ कहवॉ बाड़न।तीन–चार दिन से दे खाई नइखन देत ?''
''एके साथे ढ़ेर काम ले के गइल बाड़न।सबौर जइहें,बेटा से भेंट करीहें।दूनो बाप–बेटा में सलाह मसवरा होखी।लउटानी में पटना रुकीहें।ओहीजा कृषि विभाग में जइहें।सरसों के उनत बीज के बारे में पूरा जानकारी लीहिहें।आउर ढ़ेर सारा किसान हित में सरकारी अनुदान आ सबसीडी वगैरह के जानकारी लीहिहें।पावर वीडर भा पावर–टीलर के

सरकरी सब्सिडी के बाद केतना रुपिया हमनी के देवे के होई पता करीहें।लोन त हमनी के बिकरमगंज के ग्रामीण बैंक देवे के तइआर बा।इहे सब काम लेके गइल बाड़न।आजु सांझ ले लौटीहें।''

''सरकार किसानन के बहुते मदद कर रहल बा।ज. ानकारी होखे के चाहीं।''

''भउजी सरकार किसानन के हित में ढ़ेरो योजना चलावत बा।सरकार किसानन के खेत से लेके घर तक के बारे में सोच रहल बा।इ उद्देस्य खातिर बहुते हितकारी योजना द्वारा आर्थिक मदद के ब्यवसथा कइले बा।जानकारी के अभाव में किसान फायदा नइ खन उठा पावत। कृषि बिभाग आ ग्रामपंचायत आफिस से सारा जानकारी लेहल जा सकेला।''

''अच्छा बसंती चलत बानी।तोहार ढ़ेर माथा चटन. ी।अब बकस देत बानी! लेकिन बबुनी हमार, अतना मेहनत जनि करे! कुसुम कली कुम्हिला जइहें त हमार देवरा के दिल टूट जाई।हाहाहा!''

रामप्यारे बो चल गइली त बंसती गीत गुनगुनावत बाकी बचल गोबरा के मस्ती में पाथे लगली।

''अरे बड़की!''सुगनी के माई आपन बड़की पतोहिया बसंती के दू–तीन बार पुकरली ।जब उत्तर ना मिलल त खीझ के पुकरली,''अरे घोड़पड़ासी सुनात नइख हू ?कहवाँ बाड़ीस रे?''

एह बार भी जब उत्तर ना मिलल त दिकिआके कमर के हाथ के सहारा देके कस हूं चौउकी पर से उठ ली।कहरत–कहरत डेहरी से बाहर निकसली। बसंती गीत गुनगुनावत मस्ती में पथरौर पर गोइँठा पाथत रहली।ओकरा होस ना रहहिस कि अँचरा सरक के छाती के उभार देखावत बा।इ देख के सुगनी के माई के पारा चढ़ गइल।घोघिआ के बोलली,

''अरे घोड़परासी लमघोड़ी!लाज–सरम के घोर के पी गइल बाड़ीस।लुगा ठीक कर।घोड़परास अस लमहर हो गइल बाड़ू आ अकिल जरा भी नइखे! नइहर में छोड़ आइल बाड़ू का?आव भीतरा।''

ओनही से रामजनम बो जात रहली। पूछली,''का भइल चाची? बसंती पर घोघिआत काहे बाड़ू?''

''तें जो आपन रहता नाप!''आ बुदबुदइली,''पतोह सरम के आ बेटी करम के! अरे बड़की आव भीतरा! '',एतना बोलके कहरत–कहरत भीतरा चल गइली।

हाथ के गोबर के लोंदा खीसी पटक के, चापा नल पर हाथ धोके कुढ़त भीतरा गइली आ खखुआइले बोलली,''का भगइल रहे कि अतना कोसत रहीं? हमार त जीअल हराम कइले रही ला।ऊ काम काहे ना कइलू,ऊ काम करे त ई काम काहे ना भइल!दिन भर पेर ले रही ला। बोलीं अब!..का करेके बा?''

''करुआ तेल में लहसुन पका के कमर आ पिठिआ में मालिस कर।दरदवा उठल–बइठल मोहाल कइले बा।''

बसंती सास के कमरा से बोरसी लेके चुल्हानी मे गइली। बोरसी के खोरके अगिआ के जिन्ना कइली। कटोरी में करुआ तेल में लहसुन डारके गरम करे लगली आ बोलत जात रही,

''सास घरु आरी, पतोहिया दरबारी!''

'' हं रे,अइसन रहतीं हम त ना जाने तू का कइले रहतू! सासवा मुए चाहे जीये तोहरा के का फरक पड़े के बा ! ढकोस आ टंगड़ी पसार के सुते।''

रमेश के अनुपस्थिति में तीन दिन के धनकटनी, डीह–डबरा के कटाई–भराई,मेढ़ के ऊंचा कराई के निगरानी आउर आज के कमर तोड़ खलिहान लिपाई से थाकल बसंती के दिलो–दिमाग पर काबू ना रह गइल रहे।पलट के जवाब दिहली, ''हॅ हमही त कोठिला के सब अनाज भकोसी ला।सुरुज माथा पर आ गइलन अबहीं तक एक भी दाना मुँह में नइखे गइल।'',रोअत–रोअत बोलत गइली,'' बाबू जाने का देख के ई जेहल खाना में डाल देहलन!हमरे करमवा फूटल होई।ओह जनम में जाने कौन करम कइले रहलीं कि ई ससुरार माथे मढ़ा गइल।'',सिसके लगली, ''भगवान हमरा के उठा ल।अब आउर सहात नइ खे !ई त लिखवा के आइल बाड़ी कि बसंतीया के मुआ के ही मुअब।''

ओकर सासु सब बतवा सुनत रहली।कुछ बोलली ना।चुप रहे में ही आपन भलाई समझली।जब बसंती तेल मालिश करके जाये लगली त एतना ही बोलली कि रमेश आवस ता हमरा भीरी भेज दी ह।

खा–पी के बसंती जब दुपहरिया में खाट पर लेटली त ऑख लाग गइल।जब गहीर नींद सुतके उठली त मन हलुक हो गइल रहे।मन सास के प्रति सरधा से भरल गइल रहे।अम्मा बोलेली कड़ुवा लेकिन छाती में पिआर भरल हइन।अहलादित मन पछताए लगली।काहे अइसन बात बोल दिहनी!केतना चोट लागल होई उनका दिल पर!चाय बनावे खातिर कमरा से निकसते रही कि रमेश आगइलन।बसंती पूछली, अम्मा के गोड़ लगनी हां कि ना?''

रमेश बतवलन,''गहीर नींद में बेखबर सुतल बाड़ी।''

''नवल त ठीक बा नु?कवन–कवन काम भइल?''

''बाद में असथिर से बात होई।अबही एतना जान ल कि पावर वीडर अगला दस दिन में आजाई।पचास प्रतिसत सब्सिडी मिली।

मिली।अबकी सरसोंके नवका किस्म के बीआ पूसा२७ डलाई। एक हेक्टेयर में1४३७से1639 किलो के उपज देहेला इ बीआ।गेंहू खातिर जी डब्लू–३२२ आ पूसा तेजस 8759 के डाले के बिचार बा।पूसा तेजस एक हेक्टेयर में ७०क्विंटल उपज दे ला आउर110 से115 दिन में पक के तइआर हो जाला।सिंचाई भी कम करे के पड़ेला।जी डबलू३२२ करीब १२०दिन में तइयार हो जाला।तीन से चार बार सिंचाई के जरूरत पड़ेला।इ हो एक हेक्टेयर में ७०किलो उपज देवे ला।''

''जाईं अम्मा भीरीआ बइठीं।फस्ट कलास के चाय पीआइब।'' खुस मन से चुल्हानी में गइली।मसती में गुनगुनावत चाय खातिर अदरख आ इलाइची कूट के खूब नीक चाय बना के सासु के कमरा में ले गइली।तीनों जने चाय पीअत रहलन।बसंती चोरी–चोरी सास के मुंह निहारत रही लेकिन उनकर मुँह अभीओ फूलले रहे। इ देख के आपन बढ़िया बनल चाय के सुआद भी फीका लागे लागल।

अगला दिन सुबह सासु के कमरा में झड़ू लगावे गइली बसंती त देखली कि अम्मा धोअल नवका साड़ी पहिर के कहीं जाये खातिर तइयार बैठल बाड़ी।एक गो बिसतर बांधल चौकी पर रखल बा। सूटकेस भी बगले में रखल बा।कुछुओ ना बोलली ना पूछली।झाड़ू लगाके अपना कमरा में गइली।रमेश भी कहीं जाए खातिर तइआर होत रहन।

''कहॅवा जाये के तइआरी होत बा महतारी–बेटा के?''

''हरिद्वार।अम्मा अब ओहीजे रहीहें।''

''हमरा जीयते जी ई ते ना हो सके ला।रउआ कपड़ा खोल के बदल लीहीं।'' अतना बोल के तेजी से निकस गइली सास से मिले। कमरा में तेजी से गइली आ सास के बांधल बिछौन के खोलके दरी,चादर, तकिया चौकी पर रखत गइली आ बोलत गइली,

'' बड़ भइल बाड़ी हरिदुआर जाये वाली! हमरा जीते जी सन्यासीन बनी हें!गॉव–जवार में थूथू करईं हें! बेटी के छोड़के जात बाड़ी!'' रोअत रही आ सूटकेस के खोल के ओह में के लुगा कपड़ा निकास–निकास के अलमारी में रखत गइली आ बड़बड़ात गइली, ''तनीको ना सोचली की हमरा बिना पतोहिया दूओ दिन जिन्ना रही कि ना!चल दिहली ओकरा के छोड़ के!सासुए के ईरखा लागेला! पतोहिया त पथरा के ह।ऊ त कठकरेजी ह, ओकर का! इनकरे पुन–परताप से पावर टिलर आवत बा। ओकर पूजा के करी ई घोड़परासी? नवका सरसों आउर नवका गेंहू के खेती होखे जाता, पूजा करके खेतवा में के बीया के डाली, ई घोड़परासीया? पोता के बियाह बइसाख में होखे वाला बा, त ई घोड़परासी केकर पैर–पूजी करी?.......''

रमेश के अम्मा बोलली ना। बइठल लोर बहावत रही।

❑❑

❍ पटना, बिहार

सुरेश कांटक

गीत

ए राजा भइया !
ए राजा भइया !
ए राजा भइया !

छीन मत किसान के कमइया
ए राजा भइया !

एकरे से पालींलाजा पूरा परिवरवा
बाल बाचा के बा इहे जीये जीए के अधरवा
मति कर हते के उपइया
ए राजा भइया ....!

मति दुहराव हिटलर के कहानी
कामे नाहीं अइहें अडानी अंबानी
छीड़ी जब लमहर लड़इया
ए राजा भइया ....!

धरती के हमनी का हईं जा सपूतवा
तहरो के हमहीं बनवनी राजदूतवा
आगे पीछे देख ना समइया
ए राजा भइया.............!

गम गम गमकेला फूल फुलवरिया
लह लह लहरेला खेतवा बधरिया
खोन जनि बड़े बड़े खइया
ए राजा भइया ....!

कल बल छल से तू कर जनि घितिया
कील कॉंटा बेड़वा से रोक मत रहतिया
बनल बाड़ बड़का कसइया
ए राजा भइया.............!

मूएलें कसाई सभ तड़पि तड़पि के
होला पछतावा सभ हड़पि हड़पि के
कांटक कहेलें ई सचइया
ए राजा भइया ....!

❑❑

❍ बक्सर, बिहार

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

हर के मुठिया

लइकई के अलमस्त उमंग,हुलास से भरल मन, चंचलता एतनी कि कतों जाये खातिर वाहन/साइकिल के कवनों जरूरत महसूसे क मोके ना भेंटाइल। भोरहीं से घर के कामन में हांथ बटावे के नियम आ उछाह दूनों रहे। भोरही दुआर बटोर के, बरदवानी के झार–झूर के, गोबर बटोर के अलियार के अलगा आ गोबर के अलगा खाँची भरा जात रहे। जइसे लइका सभ उठें, उनुका कह दियात रहे के मर–मैदान जात बेरा भरलकी खाँची लेले जइहा लोग। ई हाल भर गाँव के छोट लइकन के रहे। गोबर आ अलियार लेके लइका सभ अपना खेत का ओर निकल जास आ अलियार आ गोबर के खेत में फेंकला का बादे नित्यक्रिया करे लोग। तलाब,गरही आ नहर पानी छुवे आ कुल्ला करे के साधन रहे। भोरही से सिवान मनसायन हो जात रहे, काहें से कि हर घर के सभे बड़–बुजुर्ग लोग भोरे सिवान में चहुंप जात रहे। मर–मैदान के बाद नीम भा बबूर के दतुइन के साथे एक–दोसरा से परनाम–पाती करत, हाल–चाल बतियावत, खेती बारी के जोगाड़ में जुट जात रहे।

दिन उगते हरवाह लोग हर–जुआ का संगे आ घर के लइका बैलन के हाँक के खेत तक चहुंपावे खातिर निकल जात रहलें। हर नधववला के बाद लइका लोग अपना घरे आ जात रहे। घर के मरद लोग हरवाहन से संउजा बतिया के तब आवे। ई बाति 70 आ 80 के दसक के ह, तब तक गाँवन में ट्रैक्टर ना चहुंपल रहनी सन। असाढ़ के पहिलकी बारिस भइला के बाद हर गाँवन के सिवान के इहे सुघरई रहे। हर नधवइला के दू–अढ़ाई घंटा के बाद हरवाहन के ‘खराई मारे के’ पानी का संगे पहुंचावल जात रहे। इहो काम घर के छोट लइकन के करे के परत रहे। एह काम के बादे लइका लोग अपना इस्कूल जात रहलें। दुपहरिया के बेरा हरवाह लोग हर जुआ के संगे घरे आ जात रहे आ फिर खा के आराम क के फेरु 3 बजे का बाद फरसवाही भा कुछ अउर काम करत रहलें। रोपनी आ बोवनी के बेरा भर दिन हर चलत रहे तब दुपहर के खइका खेते पर हरवाहन के चहुंपावल जात रहे, तब घर के कवनों ना कवनों लइकन के इस्कूल से छुट्टी लेवे के परत रहे। ई हर ओह घरन के हाल रहे, जवना घर के सवांग लोग नोकरी करत रहलें।

हमरो लइकाई गाँवे में बीतल बा आ अपना घर के बड़ लइका भइला का वोजह से हर नधवावे आ ‘खराई मारे के’ चहुंपावे के जीमवारी हमरे रहे। जब हम चउथी–पंचवीं में पढ़त रहली, तबे से ई काम हमरा जी में लाग गइल रहे। रोपनी आ बोवनी के बेरा महिना–दू महिना ई जीमवारी बेगर कवनों बहाना बनवले निभावे के परत रहल। बाबूजी सिंचाई विभाग के नोकरी में रहनी, उनुका घ

ार से जाये निश्चित समय रहे। हरवाहन के ‘खराई मारे के’ चहुंपावे वाला काम तनि टेंढ रहे, काहें से कि हरवाह लोग जब खराई मारे बइठे त आधा घंटा लगावे, आ ओह घरी जे चहुंपावे गइल बा, ओके पैना लेके बैलन के आगु ठाढ़ होखे के परत रहे । अइसन ना कइला पर बैल डाँड़ के घास चरे का फेरा में गोड़ में फार मार के घवाहिल हो जात रहलें। ई काम हमहूँ दू बरीस ले बेसिये कइले हो खब। मने पैना लेके बैलन के आगु ठाढ़ होखे वाला काम। ओह घरी ई काम सजा लेखा बुझाय बाकिर ओकरा से कवनों छुटकारा मिले के सवाल कहाँ रहे।

हमरा इहाँ जे ओह घरी हरवाह रहे उनुका नाँव ललता रहल। उ जाति के बहेलिया रहलें आ ओह घरी उनुका उमिर 36–37 बरीस के रहल होई आ उहाँ के भरूहिया बनूक से कबों–कबों शिकारों करत रहलें। उनुका गाँव के नाँव रहे मगरौर। मजगूत कद–काठी होखला का बादो बहुत मीठ बोलवा रहलें आ संगही ईमानदार आ बेवहारिक। ललता भइया के गाँव जंगले में रहे । हाँ, गाँव से पक्की सड़क गुजरत रहे आ गाँव थाना, तहसील से जुड़ल रहल। कहल त इहो जाला कि मारीच के कोट मंगरौर में रहल आ अबहियों एगो बहुते बड़ माटी के टीला बाटे, जवना के मारीच के कोट कहल जाला। हम उनुके ललता भइया कहत रहलीं आ उ हमरा के बड़कू भइया कहें। हमरा जहाँ तक धियान बाटे कि उहाँ के हमरा इहाँ 8–9 बरीस हरवाही कइनी।उहाँ के जानत रहनी कि हम मास मछरी ना खाइले, एही से अक्सरहाँ उहाँ के हमरा के रिगावत कहें ‘ बड़कू भइया ! हमरा इहाँ आजु संझा के बगेड़ी के शिकार बने वाला ह, राउर भउजी बहुते नीक बनावेली। चलीं , आजु संझा

हमरा इहाँ खायेब आ उहवें सूत रहेम । काल्हु भोरे संगही आ जाइल जाई।' तब हम ई कह के हँस देत रहनी कि 'ओह दिन नेवतब, जब भउजी खीर, पूरी आ खेकसा के भुजिया बनइहें।' एकाध बेर हम उनुके घरे गइबो कइलीं आ भउजी के बनावल खीरो खइलीं। बतावत चलीं कि हमनी के गाँव के लगही जंगल आ विंध्याचल पहाड़ियन के घाटी बाटे । खेकसा जंगली तरकारी हवे आ पहरी पर खूब फरबों करेला।

भोरे घरे अइला का बाद हाँक लगावें ' बड़कू भइया चलीं खेते' आ हम 'आवत हई भइया' कह के उनुका संगे बैलन के लेके हर नधवावे खातिर चल देत रहनी। फेरु दू घंटा के बाद उनुका के 'खराई मारे के' पहुंचावे जाये के परत रहे। रवि आ खरीफ दूनों समय इहे रोज के हाल रहे। रोज रोज पैना लेके खड़ा होके बैलन के अगोरल हमरा बहुत अखरे। हमार एगो खेत चमारीपुर मौजा में हउवे, हमरा ओह चक से जंगल आ पहाड़ मोसकिल से 500 मीटर हो खी। भोरे भोरे जंगल के हावा बड़ सुखकर लागेले। हावा खात गाँव के आधा से बेसी लोग भोरे ओहर भेंटा जाला। एक दिन भोरे हर नधवावे चमारीपुर जात रहनी त मन में एगो खियाल आइल कि काहें ना हर चलावे सीखल जाव। ओह दिन अतवार रहे आ इस्कूलो जाये के ना रहे । हम जब 'खराई मारे के' पहुंचावे गइनी त डाँड़ पर पानी आ नसता राखि के सीधे ललता भइया के लगे गइनी आ उनुका संगे हर के पाछे घूमे लगनी, आ उनुका से कहनी कि भइया हमरा के सिखाईं कि हर के कइसे चलावल जाला? जवना में बैल घवाहिल ना होखे आ कब कवना बरध के टिटकारल जाला आ कब कवना के इहो बताईं । संगही इहों बताईं कि नवकी हराई कइसे फानल जाई ? ललता भइया ओह दिने हमरा के हाथे हर के मुठिया पकड़ा दीहलें आ 5–6 चक्कर साथे घूमलें। फेर उहाँ के खराई मारे लगलें । पानी पीके फिर खैनी दबा के 20 मिनट में हमरा लगे अइलें। तब तक हम जवना हराई में छोड़ के गइल रहलें, उ पूरा हो गइल रहल। फेर उहाँ के नई हराई फान के जोते लगलें आ हम घरे आ गइनी। ओकरा बाद त ई रोज के क्रम बन गइल, हम 'खराई मारे के' हाली लेके जाये लगलीं, उहाँ रोज आधा घंटा हर जोते लगल. ीं। एक दिन चमारीपुर में जब हम हर हाँकत रहनी, त दयादी में के बड़का बाबूजी हमरा के देख लेहनी, बाकिर उहाँ कुछो ना कहनी। संझा खानि बाबूजी के लगे अइनी आ बड़ नेवर बाति लेखा बाबूजी से हमार दिन के करनी बतवनी आ कहनी कि आजु ले अपना खानदान में केहु हर के मुठिया ना धइले रहल ह, बड़कू ढेर नेवर काम कइले बाड़न। इनका के समझाईं कि अब कबों अइसन काम मति करिहें।

अगिला दिन तक पूरा गाँव में हमरा 'हर के मुठिया' धरे वाली बड़–छोट सभेके मालूम चल गइल रहल। ओह घरी का हिसाब से अपना गाँव के बभनइया के 'हर के मुठिया' धरे वाला हम पहिल लड़का के ठप्पा अपना ऊपर लगवा चुकल रहनी। एक साल बाद हम शहर पढे चल गइनी आ हमार हर चलावल छूट गइल बाकिर हमार परतोख देके बभनइया के ढेर नवहा लोग हर के मुठिया धरे लागल रहे।कुछ लोग त जब जवान भइल त हरवाह राखल छोड़ देहलस आ आपन खेती खुदे हर–बरधा से करे लागल। अजुवो ले हमरा गाँव में हर के मुठिया पकड़े ला हमार परतो ख देहल जाला।

❑❑

❍ संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

अजय साहनी

किसान

देश में भरल धन धान
किसान जान देवे काहे?

करज ले ले सपना ऊ बोवे
पूरा भला कब सपना ऊ होवे
सूखा में–––सूखे किसान
बाढ़वा में–––––– बहे किसान
दु:ख सुनी ई कब आसमान
किसान जान देवे काहे?

माटी से सोना उपजावे किसान
बाकिर खुद भूखा रह जालें किसान
'जय–जय किसान'––के नारा
सत्ता गूंजवावेले दे दे के भाड़ा
''किसान–नीति''त बा बेईमान
किसान जान देवे काहे?

❑❑

❍ **रोहिणी सेक्टर 7 नई दिल्ली**

इयाद के मोटरी

मीनाधर पाठक

हमरी इयाद के मोटरी हमेशा लगवे रहेला। जब मन करेला खोल के बोल बतिया लेनी आ फेरु से गठिया के ध देनीं। घर के काम–काज की साथे साथे इहो चलल करेला। कबो कबो त अकेले में कुछु इयाद क के हँसी आ जाला आ कबो आँखि में लोर भरि जाला। ए समय फेरु से हमरी मन की गठरी में कुच्छु इयाद कुलबुला रहल बिया।

घर में बड़े स्तर पर खेती होत रहे। ऊँखि, दलहन, तेलहन की साथे किसिम किसिम के धान गोहूँ आ सन के खेती भी होत रहे। ओ समय ज्यादातर खेत हल से जोतल जात रहे। ट्रेक्टर कमे चलत रहे। लगभग सब केहू के आपन आपन हरवाह रहे। दुवारे दुवारे बैल बान्हल रहे। हमरो घर के खेत हरवाहे जोतें। ओकरी बदले आपन परिवार जिआवे की खातिर ओकरा के खेत दिहल गइल रहे आ दुनू समय के भोजन पानी घर की रसोई से दियात रहे। हर जोते खातिर हमरियो दुआर पर बैल बान्हल रहे।

त दुपहरिया में खेत पर खेलावन काका, माने हरवाह खातिर खाना पानी पहुँचावे के पड़त रहे। ध ार में जब अउरी केहू ना होत रहे त ई काम हम लइका लोग की माथे आ जात रहे।

दुआर पर नीबी तरे बाबा अपनी खटिया पर ना रहलें आ भइया कहीं गइल रहलें।

"आजु त दुवारे पर केहू नइखे। हरवाहे के खैका कइसे जाई?" दोगहा की चउकठ लगे ठाढ़ काकू ईया दुवार खाली देखि के कहली।

"बिंदिया की हाथे भेज दा।" ओसारा में बइठल साधू बाबा (मझिले बाबा) ईया की समस्या के समाधान बता दिहलन।

अब घर में बिंदिया दीदी के जोहाई होखे लागल। दीदी पुरनका दोगहा में दुसूती के चादर पर कढ़ाई करत मिल गइली। हम दीदी लगे बइठल उनका के लाल,पीयर, हरियार धागा से जवन सुन्दर–सुन्दर फूल–पत्ती काढ़त देखत रहनीं।

"छोड़ इ कुल। उठ जल्दी से आ महुवा लगे खेत पर खेलावन खातिर खाना ले के जो।" ईया के आदेश भइल। दीदी काढ़ल फूल में सुई फँसा के चादर एक ओर ध दिहली।

"चल उठ ।" बिंदिया दीदी हमरी ओर देख के कहली।

"हँ, एकरा के पानी थमा दे।" काकू ईया हमरा खातिर काम बता दिहली। बाकिर दीदी हमके खाना के गठरी थमा के अपना पानी के लोटा ले लिहली। दूनू जनी खेते की ओर चल दिहनीं जाँ।

हमरी गाँव की किनारे एगो मंदिर बा आ मंदिर किनारे पोखरा, जवना में बारहों मास पानी रहेला। गर्मी के दिन में पानी तनी कम हो जाला बाकिर बरखा में उफनाए लागेला। ए पोखरा के बारे में गाँव के बुढ़ पुरनिया लोग कहेला कि मंदिर में जवन विशाल शिवलिंग स्थापित बा ऊ एही पोखरा से निकलल बा एहीसे ए पोखरा के पानी कबो ना सूखेला।

हँ, त गाँव से निकल के महुवा तर जाए खातिर जवन पगडण्डी रहे ऊ बरखा में पोखरा की पानी से डूब जात रहे। कारण ई रहे कि हमार गाँव तनी ऊँचाई पर रहे आ पगडण्डी नीचे। आधा सावन बीति गइल रहे आ पोखरा के पानी फैलाव ले के पगडण्डी के कुछ हिस्सा डूबा दिहले रहे।

हम आ दीदी गाँव की बहरा पगडण्डी ले आ गइन. ीं। दीदी आपन फराक समेट के धीरे से पानी में उतर गइली आ हम रुक गइनीं। दू चार डेग पानी में चलि के दीदी पीछे देखली आ हमके ठिठकल देखि के पानी में उतरे के कहली। हम एक हाथ में खाना आ एक हाथसे आपन फराक समेट के डेरात डेरात पानी में गोड़ ध दिहनीं। धीरे–धीरे हमनिका ठेहुना से तनी ऊपर ले पानी पार क के निकल गइनीं जाँ।

बरखा से रास्ता की दूनू ओर खर पतवार जामि गइल रहे। बेंग आ बेंगची एने ओने फुदकत रहें। लाल लाल गेंडुवारि के जत्था के जत्था देखा जात रहे। ओकनी के देखि के हमार जीवु गिनगिना जात रहे। दीदी त बेधड़क चलत रहली बाकिर हम बड़ी देखि देखि के धरती पर गोड़ धरत रहनीं। ऊ हमरी खातिर थोड़ी थोड़ी दूर पर रुक जात रहली काहें से कि हम नीचे देखि–देखि के धीरे–धीरे चलत रहनीं। ऊ रिसियातो रहली। जल्दी चले के कहत रहली बाकिर हमार गोड़ जल्दी ना उठत रहे। तब्बे एकदम से एक ओर से सरसरात करिया के कीड़ा निकल के रास्ता काटि गइल। मजगर लमहर के रहे। दीदी आगे आ हम पाछे, बीच में ऊ। देखि के हम जड़ हो गइनीं। बस परान भर ना निकलल। दीदी कहली की "चुपचाप ठाढ़ रहु, बाबा निकल जइहें। आखिर ई धरती खाली हमनिए के ना नु ह !"

हम हँ में मूड़ी हिला दिहनीं। बाबा मस्ती में लहरात निकलियो गइलें। बाकिर हमार परान अबहिन ले

हलक में अटकल रहे। दीदी आ के हमार हाथ पकड़ लिहली। हमनिका बगइचा में पहुँच गइनी जाँ।
"बिसखापड़ देखले बाड़े ?" दीदी एकदम से पुछली।
हम उजबक अइसन उनके मुँह देखे लगनीं।
"ई का होला ?"
"साँप।"
कहि के हमरी ओर देखली आ जोर से हँसे लगली। लोटा के पानी छलके लागल। ऊ साफ जगहि देखि के लोटा नीचे ध दिहली आ पेट पकड़ के खूब हँसली। कारण, हमरी मुँह पर बारह बजल रहे।
"डेरो मति, एने ना आई।" आपन हँसी रोक के कहली ऊ आ लोटा उठा के चल दिहली। अब बाबाजी (साँप) के दर्शन ना होखे। मनेमन भगवान से मनावत हम फिर से उनकी पाछे चल दिहनी।

धान बोवे खातिर सभे आपन आपन खेत तइयार करत रहे। ढेर लोग के खेत में धान रोपा गइल रहे बाकिर आबो कहीं–कहीं क्यारी में बेहन जवन लहर लहर हरियर मखमल जइसन लहरात रहे। जे पिछुवा गइल रहे ओकरी खेत में हल चलत रहे। बैल की गले में बान्हल घंटी के टुन्न–टुन्न आवाज हवा में घुल के काने में उतरत रहे। घाम भइल रहे बाकिर बयार चलत रहे। कबो कबो एक टुक्का बादर आ के छाँह क देत रहे। बिलकुल ओइसहीं जइसे हरिऔध जी अपनी 'प्रिय प्रवास' में राधा जी से कहवावतानी कि ––
"कोई क्लांता कृषक–ललना खेत में जो दिखावे
धीरे धीरे परस उसकी क्लांतियों को मिटाना
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला
छाया द्वारा सुखित करना तप्त भूतांगना को।"
त रहि रहि के छाँह के सुख उठावत हमनिका अपनी खेत में पहुँच गइनीं जाँ। हमनीके देखि के खेलावन काका बैलन से का जाने का कहलें कि बैल रूकि गइलें कुल। दूनू के पीठि ठोकि के काका हमनीकी लगे आ गइलन।
"आजु हिरिया जिरिया के आवे पड़ि गइल ?" कहते कहत ऊ अपनी मूड़ी पर बान्हल अंगौछा खोल के फटक दिहलन जेसे ओकर अँइठन छूटि गइल आ मेड़ लगे बिछा के आपन दूनू हाथ आगे बढ़ा दिहलन। दीदी उनकी हाथ पर पानी ढार दिहली। खेलावन मुँह हाथ धो के ओही माटी पर पलथी मार के बइठ गइलन। हम उनके खाना अंगौछा पर ध दिहले रहनीं। ऊ गाँठ खोल के सबसे पहिले पियाज उठवलन आ मेड़ पर ध के एक मुक्का मरलन। पियाज छितरा गइल फिर ओकरा के छील के अपनी आगे ध लिहलन। एगो कागज पर लहसुन, मरिचा, नून बुकल चटनी धइल रहे। आ रोटी पर साग आ दू तीन गो हरियर मरिचा। ईहे उनकर खाना रहे। माने आजु काल्हि के लंच।

हम ओहिजा मेड़ पर बइठ गइनी। दीदी अपनी सखी के देखि लिहले रहली। ऊ उनकी ओर बढ़ि गइली। हम देखनीं कि उनकी सखी की खेत में सोहनी होत रहे। उनके खेत पहिले रोपा गइल रहे तबे सोहात रहे। हम उनकी ओर से नजर घुमा के खेलावन काका के देखे लगनीं। काका साग चटनी आ पियाज से रोटी अइसे खात रहलें जइसे केतना सवदगर भोजन उनकी आगे परोसल होखे। उनके खात देखि के हमरी मुँह में पानी आवत रहे। हमरी देखते देखत ऊ सब रोटी खा गइलें आ अँजुरी बना के मुँहे से लगा लिहलें। हम लोटा उठा के एक धार से अँजुरी में पानी गिरावे लगनी, ऊ गट गट पिए लगलें। लोटा खाली हो गइल। खेलावन काका एगो लमहर डकार लेत उठ गइलें। आपन अंगोछा उठा के फेरु से फटक के हाथ मुँह पोंछलें आ अपनी मूड़ी पर बान्हत ऊ हल बैल की ओर बढ़ि गइलें।

हम दीदी की ओर देखनीं। ऊ अपनी फराक में ढेर के साग खोंट के ले आइल रहली। हमनीके वापस ऊहे राहि ध के घर की ओर चल दिहनीं जाँ। फेरु से ऊहे पानी राहि रोक के ठाड़ रहे। घाम से हम दूनू लोग के मुँह लाल हो गइल रहे। घरे पहुँचे के जल्दी रहे। दीदी अपनी फराक में साग सुरक्षित बाँध लिहली आ पानी में उतर गइली। हम फेरू से पानी में उतरे के हिम्मत ना कर पावत रहनीं। ओहिंगा रुकल रहनीं। दीदी पानीं में जा के घूम के पीछे देखली आ जोर से बोलली, "काहें नइखें आवत रे! ओहिजा ठाड़ रहबे का !"

उनके डाँट सुनि के आपन फराक समेटत हमहूँ पानी में गोड़ ध दिहनी। बाकिर बुझा कि कवनों साँप गोड़ में न लिपट जा। चाहे कवनों केचुवा पाँव की नीचे ना दबा जा। चाहे ईया की कथा के बुड़ुवा सुरती मांगे ना आ जाउ। हमरी भीतर के भय का जाने का का सोचवावत रहे। डेरात डेरात हम आगे बढ़त रहनीं। दीदी हमरी आगे पानी चीरत चलत रहली जेसे पानी में लहर उठत रहे। बीचधार में आ के हम देखनीं कि दीदी पार होखे वाला रहली बाकिर अबहिन ले पानी उनकी घुटना के ऊपर ले रहे। तब्बे हम उनकी गोरहर जाँघ में दू–तीन गो करिया करिया जोंक चिपकत देख लिहनीं। ऊहो कुल 'बाबा' जी की तरे पानी पर लहरात रहलीसन। हमार होश फाख्ता हो गइल। ऊपर के साँस ऊपर आ नीचे के साँस नीचे। अब त हम जोर जोर से चिल्लाए लगनीं।

जोंक के नाँव सुनि के दीदी आगे भगली आ पार हो गइली। उनके फराक के सब साग पानी में गिर गइल। हम पीछे भगनी। बाकिर पानी में हम अपनीं मन मोताबिक भाग ना पावत रहनीं। पानीं में भागल केतना कठिन बा ई बाति हमके ओ बेरा बुझाइल। बुडुवा, साँप, केंचुवा, सब भुला गइल। जोंक के रूप में हमके साक्षात 'जम' देखाई देत रहलें। बुझात रहे कि हमके दबोचे खातिर ऊ हमरी पीछे दउड़ल आवत रहलें।
दीदी ओने से चिल्लात रहली आ हम चिल्लात भागत भगत कइसो बहरा निकले के प्रयास में रहनीं बाकिर पानीं हमरी वेग के रोकत रहे। कवनों तरे हम बहरा निकल अइनीं। घूमि के देखनीं त पाछे केहू ना रहे। ना जम, ना बुडुवा कीरा, ना जोंक, बाकिर पानी पर उतरात साग हमके मुँह रिगावत रहे। हमार साँस चढ़ल रहे आ धड़कन काने ले सुनाई देत रहे।

अब दीदी ओने। हम एने। बीच में पोखरा के पानी। कइसे पार होखे ! दीदी कहते रहि गइली कि चलि आउ बाकिर हमार हिम्मत जवाब दे दिहले रहे। दीदी जोंक के नोंच के हटा दिहले रहली आ खून के धार अपनी फराक से पोछ्त रहली। हमके आवे के कहत कहत हारि के ऊ घरे चल गइली आ हम दूसर लमहर राहि पकड़ लिहनीं। ट्यूबेल से खेत खेत में पानी जाए खातिर पक्की नाली बनल रहे। ऊहे नाली पकड़नी आ भर दुपहरिया में घरे पहुँचनीं। लाल मुँह लिहले पसीना से तर, सिर दर्द से बेहाल। हमार ईया हमके छाती से लगा लिहली।
"हमार बाबू! अब कबो हरवाहे के खाना ले के तू मति जयिहा।" ईया कहते रहली कि तब्बे हमके काकू ईया (मझली ईया) के बोली सुनाई पड़ल।
"हरे! तहनीके लोटा कहाँ छोड़ि अइलसन ?"
सुनि के हम सब पीर भुला गइनीं। का जाने कब लोटा हमरी हाथ से पोखरा की पानी में छुटि गइल रहे।

❑❑

❍ कानपुर, उ0प्र0
चलभाष–9838944718

योगेंद्र शर्मा 'योगी'

हम किसान हई

करीं किसानी खाली पेट
झूक गइल करजा से घेंट
सूद भरीं की मूर चुकाई
सोच सोच हैरान हई
हे गोइयाँ हम किसान हई
जग जानै हिन्दुस्तान हई ।

गार पसीना धरती सींची
एक एक अन्न धरा से बिछीं
केतनो समय परीक्षा ले
हर मुश्किल में इंसान हई
हे गोइयाँ हम किसान हई
जग जानै हिन्दुस्तान हई।

मोटहन पहिरीं मोटहन खाईं
मन मसोस के दिन बिताईं
नून तेल रोटी में खोजत
आपन जीव जहांन हई
हे गोइयाँ हम किसान हई
जग जानै हिन्दुस्तान हई।

साँझ सबेरे मानस गावत
मड़ई में संसार सजावत
घर गोरु गोरुआर में अपने
मय पीढ़ी हलकान हई
हे गोइयाँ हम किसान हई
जग जानै हिन्दुस्तान हई।

कहीं अँजोरिया पहरा देले
लेखे मोर अन्हरिया खेले
झेलत बाढ़ कबो हो सूखा
देश के ''योगी'' शान हई
हे गोइयाँ हम किसान हई
जग जानै हिन्दुस्तान हई।।

❑❑

❍ भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

सविता गुप्ता

बिजुली

चल रे !परवतिया झटक के चल आज बाड़ा देरी हो गइल ,बाबूजी भूखे बइठल होंइहे।सुशीला देवीबेटी से कहली।
आवतनी माई ,चटी पहिन ली।
"छाता ले लेलू?"
हाँ !माई "ले लेने बानी।"
अरे !माई,"ई छाता जन ले एकरा में लोहा के हैंडल लागल बा।"बुनी पानी के दिन में "लकड़ी केहैंडिल वाला ठीक होखे ला।"
"चल चल शिक्षा मत दे।"
माई के साथ पार्वती खेत पहुँच गईली।बाबूजी मचान पर सुसतावत रहन।
"एतना देरी काहें भइल हो ,विमला?"
हाँ !"तनी कटहर के आचार सिखत रहनी टी वी पर , "हँस के विमला देवी बोलली ।"कटनी हो गईलत आजे बोझा सब खरिहान में रखे के पड़ी ,'टी वी में बोलले बा पानी बूनी साँझ तक पड़ी।"

हाँ !हाँ ,"आज हो जाई।"राम बाबू खात खात जबाब दिहलन आ मचान से उतर के खेत पर चलगईलन।मजदूरन के खाए के भेज के ,अपने कटनी करें लगलन।बाबूजी के साथे साथे परवतिया केकटनी करत देखलन त बेटी के बारे में सोचे लगलन की शहर में पढ़े के बाद भी हमार बेटी में तनी साभी घमंड नइखे आइल।
"सब काम आज हो गईल देरी भईल
लेकिन सब काम निबट गइल ३"इहे सब बतियावत सभे घरे जात रहन लोग।

परवतिया अउर विमला जी साथे घर जात रहली।आधा रास्ता पर जोर के आँधी पानी शुरु हो गईल...बिजली जोर जोर से चमके लागल।

पार्वती,माई बाबूजी के कहली कि बिजुली गिरे के डर बा पेड़ के नीचे मत रहऽ चलअ उ घर के नीचेछुपल जाए।
आरे ,"घरे दस गो काम बा "कहके विमला देवी छाता ओढ़कर हाली हाली चल दिहली।

जोर के बिजली कड़कल आ लोहा के हैंडल लागल छाता पर गिर गइल ...विमला देवी के आधा देहजर गइल।बैद्य जी गोबर के लेप लगा दिहलन३ पार्वती के जिद पर एक दिन बाद माई के शहर लेग. इलन लोग लेकिन तब तक देर हो गइल।

❑❑

❍ राँची झारखंड

आरती श्रीवास्तव विपुला

उमेद

''सुनतारु ए सोना,एह बार फसल बढ़िया होखे के उमेद बा।'' हरिया घर में घुसऽते अपना पत्नी के पुकार के कहलस।
ओही घड़ी ओकर नजर गइल कि सोना उदास आँ ख से आपन टपकत छत के निहारत बाड़ी।
तब हरिया अपना मेहरारू के पास आके बोललस–''सुनऽ एह बरीस हम घर के छत के ठीक करा देम।तब बरखा के पानी से हमनी के घर के छत ना टपकी। खेत के फसल के कीटन आ चिरईयन से बचावे के उपायो मिल गइल बा। घर से खरिहान ले दुनो में से अब कुछो खराब ना हो खी।'' खराब फसल वाला खेत के सब ऋण सरकार माफ कर देले बा।
भगवान करे अइसने होखे। ई कहके सोना आपन तीन बरीस के बेटा के गोद में समेट लेहली।। बेटा के भविस अब उमेद के किरिण बन के साफ लउकत रहे।
उ रात दुनो परानी के आंख से नींद बिला गइल रहे। घर परिवार आ खेत के भविस के सपन बिनत आ उमेद के आस से कब भोर हो गइल पते ना चलल।

उ रात दूनों जन रातभर भविष्य के सपना संजोते रहे लोग निम्न फसल के उमेद में।

❑❑

❍ जमशेदपुर, झारखंड

चंद्रेश्वर

अन्नदाता

ढेर पुरान बात हे
तबो पइसल आ बसल बा
उन्हुका इयादन के पिटारी में
गेहुँअन सांप मतिन
फन कढ़ले

ऊ संपेरे ना,
जानेलन कुल्हि करतब
मदारियो के

ऊ बहुरूपिया हँउवन
भेख बदले में माहिर
हरमेस

कब्बो
उतरवा लिहल करेलन
करन अस वीर के
कवच –कुण्डल
उन्हुकर
चाकर छाती के

कब्बो
माँग लिहल करेलन
दधीचि अस
उदार मनइयन के
देह के मए हड्डियो
मोका अइला प–

आपन आजु आ काल्हु
के चमकावे खातिर
सियासत में हतेयो
जायज होला
केवनो बेगुनाह के
उन्हुका खातिर

कब्बो जाति –धरम के
दे के नारा
वोट खातिर बाँटि दिहें
तोहरा लोगन के

नेयाव आ हक माँगे खातिर
जब उतरब लोगन
राजधानी के राजमारग पे
ते छछनावहूँ जानेलन

उन्हुका जिनगी के एगुड़े
मकसद हे
रोआइ –रोआइ मारल
पदा–पदा रोआवल
तोहरा अस लोगन के

ढेर बढ़ि जाला प्रतिरोध ते
देश के दरोही बतावेलन
जुझारू लोगन के

आगि लहका के
चूल्हा के तवा पै
रोटियो सेंके सियासत के
खूब जानेलन आ अतने ना
ललचाइ –ललचाइ के खाइलो
जानेलन
तोहारा लोगन के

ऊ रोज रोज
गाइ–गाइ के/गुनगुना –गुनगुना के
त कब्बो चीख–चिल्लाइ के
कहेलन तोहरा लोगन के
अन्नदाता ......अन्नदाता
आ तू लोग हो जालै लाचार
अन्हरियो आ अंजोरियो पख में
आतमहतेया खातिर

उन्हुका खलिसा गरब होला
पुरान बातन आ परंपरा पै
आ होला तै होला
जब होला ते
डोल जाला
संवसे देसवे

अगर सीखही के बा तै
सीखो केहू उन्हुका से
खलिसा गरब करे
आ लगावे जय–जयकार
देबे साथ–संग
आँखि मूँद के
नव कुबेरन के!

❑❑

ईमेल––cpandey227@gmail-com
मोबाइल नंबर ––7355644658

अपनइत

डॉ रजनी रंजन

गाँव के महौल आज बड़ी शांत रहे। पूरा गाँव अन्हरिया में डूबल रहे। शांत महौल में अइसन बुझात रहे कि आज अन्हरिये काजर के लोर बन के बरसत बाड़ी।

रात के सुनहट में, ना त कवनो दूर से आवाज आवत रहे ना लगहीं से। हँ भूँकत कुकुरन के शोर जरूर सुनाई पड़त रहे। दूर से तनि तनि गीदड़न के भी कोरस सुनाई देत रहे।

जमींदार साहब, जे अब जमींदार ना रहलन बाकिर रोबदाब आजुवो मालिके जइसन रहे, मखमली गद्दा में धँसल पड़ल आपन रुआब अकेलहीं इयाद कऽ के खुस होत रहलन।

अचानक मानुष के रोवाई के आवाज सुनाई देवे लागल। जमींदार साहेब हड़बड़ा के बाहर गइनी त कुछ लोग आपस में बतियावत रहे कि बुधना के बाप मर गइल बाकिर मालिक अबहीं ले निचिन्त बारन। उनका अब खाली अपना से मतलब बा।

तेजन ओह गाँव के गरीब किसान रहलन। उनकरा नाम से तनी सा खाली जमीन रहे।एह से बाकी लोग के जमीन लेके बटाई फसल पर खेती करस। कवनो तरह से ऊ अपना परिवार के चलावत रहलन। जबले बुधन के बाप जिन्दा रहले तबले जमींदार साहेब के गुलामी कइले। उनका बैलन के चारा खियावे के काम भी कइले। एक दिन पहिलहीं उ गरीब के शरीर ठंडा हो गइल रहे। अइसहूं ऊ त बूढ़ आदमी रहले। जाड़ा में सबेरे सबेरे काम करे के पड़त रहे। तनिको देर भइल त रजइये से मालिक के खरहर आवाज निकले – "अरे तेजना, पांच बजऽता। अबहीं ले बैलन के नाद पर ना बान्हल गइल बा।"

"पाँच बजे ले तऽ बहुते अन्हार रहेला"– तेजन सोचस, लेकिन ऊ कुछ कह ना सकत रहन।। सबेरे उठहीं के पड़त रहे। अगर उ ना उठितन त मालिक कुछ पुरान भा किस्सा कहानी जरूर सुना देत रहलन जे रामायण के अंश होत रहे।।त मजबूरी में बस उठहीं के रहे।

जाड़ा बुढ़ापा के सहन करे के ताकत ना देला। काँपत हाथ से बैल के रस्सी खोल के नाद से बान्ह देस। बैल के बान्ह के, पानी भरस आ भूसा के बनावे में लाग जास।

ओकरा बाद अलाव जरा के बइठ जास। अलवुओ बुढ़ापे जइसन रहे। तनी भूसा लेके फूंक फूंक के जरावे के पड़त रहे। बुधन केतना बेर कहलन – "बाबूजी अब एतना बूढ़ हो गइल बानी। ई हाल में काम कइल उचित ना होई एह से रउआ ई सब छोड़ दीं। हम कर देब। ई तकलीफ जानबुझ के ठीक नइखे।एकर जरूरतो हमरा नइखे लउकत। रउरा बेमार पड़ जाईब त हमार त सब खतम हो जाई।"

बाकिर तेजन मुस्का के बतिया टाल देस। "ना अभी कवनो दिक्कत नइखे। काम ना करब त दिनभर घरवा में मनवो ना लागी, आ ना करब हम त घरे तब।"फेर उ चुप हो गइले।" हाँलाकि बुधन के बढ़िया से मालूम रहे कि उनकर बापू काहे काम करत बारन आ का पइसा उनका जमींदार से मिलत बा।

बुधन अपना पिताजी के कुछ ना बोल पावत रहे। आखिर में एकदिन काम करत घरी तेजन के ठंडी लाग गइल।मालिक के घर के बथानी में खटिया पर सुतल कराहत रहले। बुधन के खबर मिलल तऽ जाके घरे ले अइले। लेकिन, फायदा ना भइल। तीन दिन के बाद तेजन धरती छोड़ दिहलें।

जमोंदर साहब जब सुनले त बुधन के दिलासा देबे खातिर आ गइलन।

बुधन के चुप करावत कहले– "आरे ए बुधन, काहे रोवत बाड़ऽ? हमबानी नु। काहे चिंता करतारे। का हम तोहार बाबूजी ना हईं, तू चिंता मत करऽ। लइका नियन रोवे के का फायदा? आखिर सबके एक.. – ना एक दिन धरती तजहीं के पड़ेला।

बुधन जमींदार साहेब के अइसन रहमदिल बोली के बाद तनि धीर पइले । जम. ींदार साहब कहले "जा, हमरा बगइचा से दू गो बांस काट के ले आवऽ। अपना मालिक के कसइल रूप यानि असली रूप, बाबूजी कबो अपना बचवन से ना कहले रहन। लोग के मुँह से बुधन जमींदार साहेब के बारे में कड़ुआ बात सुनले रहे। बाकिर आज ओकरा जमींदार साहेब के बात सुन के अपना पर दुख होत रहे कि काहे हम उनका बारे में गलत सोंच रखले रहीं।

"आव हमरा दुआर पर आव तऽ।"बुधन उनका पीछे–पीछे चल देलस।

"बोल तऽ! कफन वफन के पइसा बा कि नाही ? बुधन सिर हिला के ना कह दिहलस।आ रोवे लागल।

"आरे! रोवत काहे बाड़े? हम जाके दोकान पर खरीद देत बानी।"

बुधन उनका साथे दोकान पर पीछे पीछे चल देलस। जमींदार साहेब दोकानदार के कहले, ''ए सीताराम।'' बुधन के
कफन के बढ़िया कपड़ा दे दऽ तऽ।
" मालिक! बढ़िया का ?हमरा के सादा आ सस्ता मरकिनवे दे दीं।
बुधन के दुआर पर अबले ननकु बाँस लिया के गिरा देले रहले। बँसवा देख के बुधन फेर धीरे से कहलस– सीधा सादा काम किरिया करे के बा। अबकी मालिक खिसिया गइनी। कहे लगनी कि–का फेरु तोरा अपना बाप पर खरचा करे के पड़ी कि बाप दस बीस गो बारन। उहाँ पहुँचल ननकु अबकी जर भुन गइल। उहो तऽ जमींदार साहेब के बढ़िया से जानत रहे।एही से उ जर गइल आ बकबकात चल गइल कि जमोदर साहब के दस गो बाप रहे। हम त उनका बाबूजी के सरध् ावा देखलहीं रहनी। उ केतना खर्चा कइले रहन, हम तऽ बहुत बढ़िया से जानतानी। हूँह! घिरना से ओकर मन भर गइल।।
तेजन के सराध आज खूब नीमन से हो गइल। जमींदार साहब अइलन तऽ लोग उनकर तारीफ करत ना थकत रहे''कतना बढ़िया आदमी बानीं, सबकुछ आपन खरचा पर करवा रहल बानी।'' ई सब देख के ननकू खिसियाइल बा, पगलातो बा। ऊ बार–बार बुधन के अकेले में देखते समझावत रहे – तू तऽ पढ़ल लिखल बाड़ऽ नू। तब काहे तू एह सब अंधविश्वास में फँसल बाड़ऽ। करजा के बोझ तहरा पर बढ रहल बा। कइसे लौटइबऽ। आ का ? बचलको खेतवा बेचे के चाहत बाड़ऽ का? इनकर उपकार लेहल बंद करऽ ना तऽ बुड़बक बन जइबऽ आ तब कवनो उपाय ना बाँची।

लेकिन जमींदार साहब के प्रभाव बुधन पर बरियार रहे। ननकू के बात ओकरा आज बु ।रा लागल। बाकिर ऊ कुछ ना कहलस

जमींदार साहब बुधन के बोला के कहलन–बाजा बिना सुनसान लागत बा।'' का? तेजन के इश्वर से मेल होई त बाजा बाजहिं के चाहीं।

ननकु से आखिरकार अब चुप ना रहल गइल। कहलस –'सराध में बाजा के जरूरत बा। रउवा बड़का मालिक के सराध में बजववले रहीं का?
इ सुन के मालिक खिसिया के आपन लाठी लेके दउड़इले ।तब तक बुधन बीच में आ गइलस। उ मालिक के समझा के ननकु के ओरि से माफी मांग के ननकु के ओहिजा से अलोत भेजवा देलस

बाकिर ननकु के दिल में एह बुराई आ कुसंस्कृतियन के प्रति नफरत के चिंगारी जरे लागल. पंडित जी आँगन में बइठल रहलन। दान के सामान के धेयान से अवलोकन करत कहलन ''ए बुधन! तेजन खइनी भी खात रहले आ अपना भीरी एगो छूरी रखत रहन।

''हँ पंडित जी'' बुधन कहले – ''खैनी आउर छूरियो चाहीं'' बाबूजी रखत रहीं, खात आ पसंद करत रहीं, कहके उ उहो सब लिया के रख देलस।बाकिर पंडितवो बुधन के बरगलावे में लागल रहलन –

आ–– हँ! स्वर्ग के रास्ता साल भर के होला। एह से सब सामान उहे सोच के देवे के चाही, जवन साल भर चल सके, ना त मुक्ति मुश्किल हो जाला।

ननकू के ई सब बात बुझात रहे आ पंडित के चालाकी बरदाश्त ना होत रहे। ओकर गटई संध् ातिया के सराध पर खेल चलत रहे। अचानक फेर सामने आ गइलन आ कहलन – पंडित जी, तेजन भाई दारूओ पीयत रहले, दीहीं का? ना त वापस लवट अइहें।सरग में दारू तो मिलबे ना करी।आ उनका बहुते परेशानी होई।'' ई सुनते पंडित आपन नाटक शुरू कइलन – ''हमरा के का समझले बाड़ऽ! मजाकिया नाता बा तहरा से? हम लालची पंडित ना हईं। हम जा रहल बानी।'' पंडितजी कह के उठ गइले। फेर ननकू के हटावल गइल।सब लोग पंडित के मनावे लागल।

ननकू आ तेजन दुनु घनिष्ठ दोस्त रहले. दुनु के आर्थिक हालत ठीक ना रहे। बाकिर कवनो तरह से आपन गुजारा करत रहन।कुछे दिन पहिले ननकु अपना महतारी के अंतिम संस्कार करे में जमींदार के जाल में फँस गइल रहलन एही से जादा चिन्ता उनुके होत रहे।

हमनी के समाज कइसन बा? एक त बाप मर गइलन, बाकी समाज के लोग ओकरा से खरच करावे में लागल बा। हकीकत के सफेदी बुधन के कहाँ बुझात रहे। ननकु बुधन के फेर अलोत में ले गइलन आ कहलन– ''देखऽ, तहरा के बेर बेर समझावतानी आ फेर आखिरी बेर कहतानी। ई कवनो सुख के मौका ना ह। जमींदार के पइसा ले के खरचला के बाद एकदिन तहार खेतवो बिका जाई।'' ''ना काका – बुधन कहले – ''जमींदार साहब पइसा अपने देलन ह।उधार ह अइसन कुछ तऽ ना कहलन''

खैर, नतीजा बाद में आई। आज बढ़िया से सराध करा दीहीं।

अब ननकु बुधन के मिजाज देखके हार पाछ के अपना घरे चल गइलन।

तेजन के मरला के दू महीना बीत गइल।बुधन बाप के काम सँभार लेलस। अपना खेत के कटाई में व्यस्त त रहे बाकिर बापू के इयाद आवे। ऊ हमेशा कहत रहस कि ''बेटा काम मत करऽ, स्कूल जा।

एही बीच एगो.. आदमी आके कहलस कि मालिक तहरा के बोलावतानी ।

बुधन तेजी से मालिक के घर ओरी चल देलस। सोफा पर मालिक हुक्का पीयत रहलन।सलामी देके उ जमीन पर बइठ गइल।

''का बात बा मालिक!जे हमार इयाद पड़ल ह?'' एतना दिन हो गइल आ तू त एकोबार हिसाब तक पूछे ना अइले।''का हिसाब बा मालिक?'' तेजन के मरला दू महीना बीत गइल आ हिसाब करे एको बार तू अइले?बुधन कहलस–मालिक! रउआ त ओहदिन कहनी कि हम ओकरा के कुछ ना देनी। उ दस साल से जादे समय तक हमरा घर में काम कइलस। हमहीं ओकर आखिरी किरिया करम कराइब। हम तोरा के खर्चा ना करे देब। ''हँ हँ, आ खात कहाँ रहे तोरा दादी किहाँ का?लोन लेले रहे उ सभ त अभी ऊपर भइले नइखे''कहत 2040 रुपिया के एगो लमहर लिस्ट जमींदार साहेब बुधन के थमा देहले।

बुधन के गोड़ के नीचे से धरती खिसक गइल। ऊ लोर भरल नजर से कागज के ओर देखे लगले। आँखि के सोझा अन्हार होखे लागल। उज्जर कागज भी मद्धिम लउके लागल। ओकरा ननकु चाचा के बात सच्चाई गहराई छूवे के मजबूर क देलस। अचानक जमींदार साहेब ''का देखत बाड़े – जोर से कहलन'' हँ, हँ – बुधन हड़बड़ा गइलन – ''मालिक, हम कहाँ से एतना दे पाईब। हमरा लगे कवन संपत्ति बा।''

खाली दस कट्ठा खेत बा।एकरा के बेच के भी हजार से ज्यादा रुपिया ना हो पाई। आ हमार लइका सब का खइहें ?– ई कहत–कहत ओकर आँख भींज गइल।

"त हम का करीं?.

हुक्का के गुर्राहट से बुधन के दिल गुरगुर करे लागल। ननकु चाचा के बात ना सुननी। उ तऽ पहिलही चेतावनी दे देले रहले। बाकिर आज नमींदार के जादू में बुधन फंसिये गइलन।

फेर तऽ बुधन के खेत बिका गइल। बापू के मरला से ज्यादा दुख ओकरा आज महसूस भइल। मालिक खाली 500 रूपया में खेत ले लिहले। बाकी उधार खेत के अनाज उठवा के सूद माफी कइलन।अब बाकी पइसा उ कहाँ से दीहें? साल भर ओकर लइका का खइहें? एकरा संगे–संगे मालिक कड़ा आदेश देले कि उधार चुकता ना होई त हमार चाकरी करे के पड़ी।

दोसरका दिन खेत में बइठल बुधन सोचत रहे –

पइसा के बदले जदि मालिक के घरे काम करब त परिवार के के खियइहें? सामने साल पूरा पड़ल रहे। अचानक ननकु आ गइले।सिर पर हाथ ध के कहले – ''अरे इहाँ काहे बइठल बाड़ऽ, खेत बोइब कि ना? दिन बीतता। सब लोग बोवे लागल बा।'' ननकु चाचा के आवाज सुन के उ खूबे रोवे लागल।

''अरे काहे रोवत बाड़े? का बात बा? बताव तऽ'' उ ओकर लोर पोंछे लगले।''चाचा, अब कवन खेत बोइब? अब खेत कहाँ बा – आ लमहर लिस्ट उनका के दे दिहलस।''

''बांस–2–मूल्य 10 रुपया। कफन – 25 :.ः अरे ई का ह ?मालिक देले बाड़े। खेत के अनजवो उठवा दिहले आ सिर्फ 500 रुपया में खेत....। अब लइका सब साल भर का खइहें?आ बाकी पइसा के भुगतान कइसे होई? बाकी पइसा चुकावे खातिर जबरन उनकर चाकरी करे पड़ी सो अलग।''

''ओ त इ बात बा'' लमहर साँस लेत ननकु कहलन, ''हम तहरा के त पहिलही से समझावत रहनी, लेकिन बापू के शांति के भूत तहरा पर सवार रहे। अब का भीख मंगबऽ?

ई सब मत कहीं।''बस चाचा, ज्यादा बात कऽ के हमार मन आउर दुखी मत करऽ। अब हम गलती त कर चुकल बानी। अब हमरा का करे के चाहीं? ई बताईं।आज भीख मांगे के मजबूरी हो गइल बा।'' बुधन स्थिर नजर से आसमान के ओर देखत रहले। लमहर दाढ़ी से लोर बहत रहे।

ननकु बिना कुछ कहले उठ के चल गइलन। सीधे जमींदार के लगे जा के कहलन–"जमींदर साहब, हमरा लगे एक बीघा जमीन बा, ले लीं, हमरा पइसा के बहुत जरूरत बा – ननकु निहोरा कइले।

''का करबे पइसा? बताव,कवन विपत्ति आइल बा। हम काहे खातिर बानी?

हजूर! हमरा 1500 रुपया के जरूरत बा। '' कइसहू कहलस।

"ठीक बा, काल्ह आ जा।"ननकु के खेत भी बिकाइल। "जमींदार साहब! बताईं तऽ कि बुधन से केतना पइसा उधार बा? बोलीं त ननकु कहलन।
"का बात बा?" जमींदार साहेब पुछलन।
अइसहीं कुछ काम बा।'ननकु कहलन
"1-240 रुपया" बा। जमींदार साहेब कहलन

"ई लीहीं" ननकू पइसा देत कहलस – "अब बुधन रउरा घर पर काम ना करी। भगवान रउरा जइसन शुभचिंतकन से सबके दूर राखस।
बांस के दाम तक जे ना छोड़लस।गाँव में के अइसन आदमी बा जे केहू के मरला में, भा लइकी के बियाह में दू गो बांस मुफ्त में ना देला? एगो रउरे .....? कहत निकल गइल। जमींदार साहेब दांत पीस के रह गइनीं।
बुधन अशांत रहलन, मन उदास रहे, घर के बहरी देवाल पर देह टिका कुछ सोचत रहे। घर में दू दिन से चुल्हा ना जरावल गइल। घर में कुछ ना होखे के चाहीं? लइकन के रोअत आवाज सुन के उहो रोवे लगले। भूख से सब लोग एक दूसरा से झगड़ा कर रहल बा। हे भगवान! दया करीं।बुधन के आँखि उमड़ गइल।
एही घड़ी ननकु दूर से आवत लउकलन, उनका हाथ में कागज रहे। आज बहुत खुश रहलन। "बुधन हमहुँ खेत बेच देनी। इ कागज तहरा घर के बा। एहपर खेती होई आ डुमरी वैशाली बांध काल्ह से बने के शुरू होता, हमनी के काम करे खातिर उहँवे जाए के बा।" ठीकदार हमार साथिये ह।उ हमनी दुनु जन के काम पर रख लीहें। ई बात ऊ खुदे हमरा घरे आके कहलन ह।
बुधन कागज लेके पढ़े लगले – "अरे तू हमार कर्जा चुकावे खातिर आपन खेत बेच देलऽ चाचा। अब तहार का होई?"
"अरे किसान के मजबूरी आ गरीबी सब सिखा देला।तेजन अइसहीं हमरा के जमींदार के मुसीबत से बचवले रहलें तबे से हमनी के बरियार दोस्त बन गइल रहीं। हमार का? अकेले बानी। तूँ बाड़ऽ नू। कवनो मुसीबत आइ त संभार लिह।अब भीख मांगे के ना पड़ी।
बुधन खुशी से रोवे लगलन। उनकर गला भर गइल। बोले खातिर शब्द ना मिलल। उ बस अतने कहलें – "साचहूँ काका तू महान बाड़ऽ। तू हमार शुभचिंतक हउअ। बाबूजी आपन छाया हमरा खातिर हमरा भीरी रख गइल बानी।आ उनकर गोड़ छू लिहलन।"
हम जीवन भर अब आपन बाबूजी के छाया तले रहब आ सेवा करब। चल चल काल्ह काम पर जाये के बा। काका के हाथ पकड़ के बुधन घर तरफ चल देलस।आज ननकु के हाथ के गरमी बाबूजी के हाथ समान लागत रहे।
घरे जाके बुधन ननकु से कहलस– ए चाचा! सथहीं रहीं ना।अभी हमरा राउर जरूरत बा। ननकु ना ना कह सकले।
भोरे भोर चाचा भतीजा फुरती से काम पर निकल गइले। कनिया दुगो टिफिन भोरहीं हाथ में पकडा देहलस। ननकु के परिवार मिल गइल आ बुधन के सिर पर साया।

❑❑

❍ **घाटशिला, झारखंड**

सविता गुप्ता

खेत

चल सखी हाली हाली।
खेतवा में फुटाइल बाली।
ओहपर गुथाइल मोती ना।
लागे सोना जइसन ना।

खेत हमार माई जइसन।
भरे पेट बाप जइसन।
भरे भंडार दुनिया के ना।
लागे सोना जइसन ना।

आइल अइसन आँधी पानी।
बुता गइल आस हो धानी।
कइसे कर्जा उतारब ना।
थाती हमार डूबल ना।

चढ़ी बुचिया के हरदी कईसे।
खेत बिकाई जइसे तइसे ।
बियाह कर भार उतारब ना।
ए हरि सोना पार उतार ना।

अंगना मड़वा छवाइल।
माई जइसन खेत बिकाइल।
बुचिया के भइल बिदाई ना।
ए हरि दीही आशीष ना।

❑❑

❍ **राँची झारखंड**

बाएन

विद्या शंकर विद्यार्थी

हरिया खेत के आर–कोन करके लौटल आ नेहूर के कुदारी धरत डाँड़ सोझ करत कहलस – "हो गइल ए मलिकार रोपनी लगावे भर खेत के आर – कोन हो गइल, घास मारत झारत परेसाने परेसान हो गइलीं।"

"थरिया में माड़–भात मेहनते के बदौलत न परेला हरिया।" धनेसर मलिकार सहजे कहले।

"हँ से त बा, बाकि कद्दई में हम जुझीं आ अगहन में खँखरी हमरे मिले, ई कवनो बात भइल।" हरिया सच्चाई कहे में ओजल ना, आ केतना दिन ओज के रही आखिर। जइसे कले – कले अन्याय के खिलाफ कंठ खुले लागल होखे ओकर आ दूध में उफान आवे के बाकी होखे।

"चुप रह नदेहन कहीं के, खँखरियो में त खाद – खरचा लागेला हमार, के चाहेला कि खाद खरचा लगाईं आ खँखरी उपजे। सब हानि हमहीं सहब कि तोरो सहे के परी।" जइसे हरिया कवनो बड़ कास्तकार होखे। आ ओकर बनिहारी में मिलल खेत के रोपनी पहिले हो जात होखे, पुरबा ना छुअत होखे। इहो सब त गुजरेला हरिया साथे।

" महाजन के बोरा कास्तकार के भराला आ रोपेआ आवेला हरिया के ना, फएदओ में से कुछ आइत त ई कहल शोभा दिहीत ए मलिकार।" साच बात हरिया ठहका दिहलस। हरिया के ई बात उनुका मरचाई नियन लागल। आ मन ही मन अगिया गइलन। हरिया त ई घाव देता, लमहर घाव। निशान पर हरिया आ हरिया के गलथेथई आ गइल। बोझे के रह गइल त सरियावल बान।

साँझ के झोली परत रहे। मलिकार के काल्ह रोपनी लागी। हरिया बो हुलस से बन के साथे बाएन मांगे आइल। हरिया बो के अँचरा में बन आ बाएन के जगे मलिकार एगो ईंटा के टुकड़ा धर दिहलन। हरिया बो चिहा गइल । भक मार देलहिस बेचारी के। ई का? काल्ह के रोपनी के ई बाएन ह। एह बेर का हो गइल बा मलिकार के। ऊ पुछ देलस –"ई का ए मलिकार?"

"हरिया के जाके देखइहे ऊ सब समझ जाई आ तोर बेटो जान जाई कि ई का ह ? " ऊ गुरेज बान्हत कहलन। गरमाइल सुन के मलिकाइन दने आ गइली। आ हरिया बो के अँचरा में ईंटा देखते चिहा गइली।आ पुछ देली – "ई का जी? भला गरीबी से इइसन चउल?" मलिकाईन के संवेदना हरिया बो के पक्ष लेत बोलल।

"आ ई के चाहेला कि हम धान खाती खाद में खरचो करीं आ खंखरी होखे ?"

"मतलब ?"

"मतलब नइखे बुझात त हमरा से केहू कुछ ना बोली, हम कह देतानी।" जइसे ऊ ख खुअइले। सभे चुप हो गइल। हरिया बो उदास मन उहे ईंटा बाएन समझ के लेते आइल। बिरोध त कर ना सकत रहे। रहे के पानी में आ मगर से बिछोह कब तक चली। हरिया बो आज समझा दिही हरिया के कि बड़कवा के मुँहे ना लागल जाला। आपन गरीबी लेके के गोड़ो त ताके के चाहीं। बड़कवा दूगो बाते बोल दे त सह जाए में का जात बा। बाकि हरियो त बात सहत – सहत अल गइल बा। आखिर उहो त मरद – मानुष ह। गरीबी जब बले आदमी के मुँह में अंगूरी देबे लागेले त बोलहीं के नू पर जाला। ई बिबसता नू आदमी से करावेले ।हरिया के का बेजाएं बा। हरिया के हाल हम जानत नइखीं। दूर जे होई से ना जानत होई। हम त हरिया के भिरी रहींला। साल भर में बड़ आदमी से परब – तेवहार में एगो बस्तरो मिलेला त उहो झिली झिली। गर्मी सोझे लाग जाला त जाड़ ढूक जाला, देल कपड़ा में। गांव के लोग पुछेला कि का हरिया इहे रे, त हरिया बड़कवा के कमी छिपावे खातीर चोन्हाए लागेला आ खखस के कहेला –"हमरा इहे भावेला आन केहू के का जात बा।" सबकर मुंह बंद कर देला हरिया। बड़ के बदनामी छोट ना होखे देला। ख्याल रखेला अपना अन्नदाता के।

हरिया ओटा पर बइठ के कपार ककुलावत रहे। सामने मेहरारू के आवत देखलस त सोचलस नीमने बाएन भेंटल होई। दूर से अँचरवो भारी लागत रहे। बाकि .... बाकि उदास काहे बिया रजेसवा के माई। केहू कुछ कह त ना दिहल। भिरी अवते हरिया पुछ देलस – "काहे रे?"

ऊ बिना कुछ कहले घर में ढूक गइल। हरिया ओकरा पीछे पीछे अवते पुछलस –" का रे कुछ कहत काहे नइखीस, का भइल, बोल त कुछ ?" हरिया के बात के जबाब अँचरा में ईंटा रहे, आँख में लोर आ सबद "कुछ ना।"

जइसे मेहरारू जात आपन करेजा के घाव दबा लिहले होखे। बजर परो अइसन बनिहारी पर। जवन मलिकार लूटे के सिवा दरद ना जाने। ओकर

दास होके का होई।जीअला से भूखे मर गइल बेहतर बा। ना जाई हमार हरिया कवड़ा लागे आ घिघिआए। आन गाँवे जाके मंजूरी करी।आ हमहूँ जाके काम करब।जब कमाहीं खाए के बा त बन्हुआ काहे होई आदमी। जइसे ई जागरन के अंर्तनाद होखे। रजेशवा भिरी आ गइल। माई के अपमान त बाबूजी के दुत्कार बुझाइल। उनुका खेत के आरी बकरियो ना चरे जइहसन हमनी के। आ ना जइहसन चाचिओ मतारी घास गढ़े।

''माई, सबका अइसन बाएन नसीब ना होखे, माई। तू निहस मत। आ तुहूँ बेसी जन उदस बाबूजी।''

रजेसवा का कहता हरिया ई अदाज ना लगा सकल।ओकर माइओ ना। भोर होते रजेसवा ना जाने कहाँ चल गइल। बाएन के चोट आकि गरीबी के मार लिहले। कुछ दिना के बाद पता लागल कि रजेसवा लुधियाना आ गइल बा आ आके के कमाता। हरिया आ हरिया बो के खुशी भइल कि बेटा कहीं बा नीमन से बा। आ पेट के पीर हमनी नियन नइखे सहत।

समय बदलल। सात साल बाद रजेसवा गाँवे आइल। लोहा,सिमेंट बालू,ईटा सब गिरवा के मकान ठोक दिहलस। मकान के नेव बाएन के ईंटा पर रहे।

❑❑

❍ रामगढ़, झारखण्ड

माटी से होत सिंगार जहाँ
परिवार क भार कपार पै ढोवै ।
रात बिरात क बात न बाय
जब नींद लगै कुकुरै अस सोवै ।
जान पै खेलि जोगाड़ करै
विपरीत विधा में निरास न होवै ।
दाम न आँकत बा लोगवा
मजदूर किसान गली गली रोवै।

— **रामजियावन दास 'बावला'**

अंकुश्री

उहवाँ ऊ जवान त हमहूँ किसान इहवाँ

पतिआ लिखत–लिखत रतिआ जे बित गइल
बा भइल अब भोर–भिनसार
ना अइलें पति मोर, ना आइल पतिआ
जे अँखिआ चलेला बेसुमार।

रतवा के के कहो, दिनओ बेहाल कइलस
ईयाद करत होईहें हमार।
हम बानी इहवाँ, उहवाँ ऊ लड़त होखिहें
भरल होखी सेना भरमार।

मारत होईहें जब दुश्मनवा गोलिआ से
जिए के ना रहत होई असार।
पहाड़ बीच कंदरा में दुश्मनवा बंदरा जस
करत होखी जोर किलकार।

एक मन कहे, कवनो मेमिन से लाग भइल
तबे देले हमरा के अइसे बिसार।
दोसर मन कहे, ई पाप हमरा काहे आइल !
ऊ त सोगहग हवन हमार।

ऊ ले ले होखिहें बंदूक, पर सम्मुख दुश्मनवा
जाने कवन ले ले होखी हथियार।
अबहीं लड़त बाड़न, लवटिहें तबे जब
ऊ कर लीहें देश के उद्धार।

लड़–लड़ के दिन भर राति के लवटत होखिहें
रहतीं त करतीं उपचार।
उहवाँ ऊ जवान त हमहूं किसान इहवाँ
हमरो ना छोट बा ललार।

देश के बचावे में ऊ अपना के खपाव तारें
भेज तानीं हमहूँ जेवनार।
उनका ना मिलत होखी, केहू के पिया के मिलल
बाड़न जइसे पिया उहवाँ हमार।

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल,
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

सन्नी भारद्वाज

पइचा प पानी

जेठ भइल अषाढ़, इ बताय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती ।

कह देती बदरा से बीचड़ा झुराता
मटीया में चकता दरारी बुझाता ।
बुना बुनी गिर के जीयाय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती। ।

का जानी कहवा बा रहिया भुलाइल
देऊवा निमोही काहे बा बिसराइल।
कही के जोगीनीया जगाय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती। ।

बगिया बगइचा आ खेत खरीहानी
जिया जन छछने ले पशुआ परानी।
सभकर अरजी लगवाय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।

अफड़ता पोखरा नहर नदी झरना
भुखल न तलवा के माई बीया खरना।
कुलहीन के जीनीगी बचाय देती ,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती। ।

जेठ भईल अषाढ़ ,इ बताय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती ।

❑❑

❍ भभुआ , बिहार

धीरेन्द्र पांचाल

गीत

चान छुपउले जाली कहवाँ ,
घुँघटा तनिक उठाव ।
बदरिया हमरो केने आव । बदरिया हमरो केने आव ।

झुलस रहल धरती के काया
छाया ना भगवान लगे ।
तोहरे बिना ये हो बदरी
सब कुछ अब सुनसान लगे ।
लह लह लहके रहे सिवाने
कातर नजर हटाव ।
बदरिया हमरो केने आव । बदरिया हमरो केने आव ।

पेंड़ कटत बा निशिदिन
चिरईन के खोतवा बिरान भइल ।
खेत कियारी नदी कछारी
सगरों जस शमशान भईल ।
जार रहल बा देहियां
सूरज के तनिका समुझाव ।
बदरिया हमरो केने आव । बदरिया हमरो केने आव ।

गोरुअन के सुबिधा के दुबिधा
घास खंचोली पाईं ना ।
गाय के थाने दूध ना उतरे
दुःख बतावल जाई ना ।
पुरुवा के संग चुरुवा रोपले
ठाढ़ ह पूरा गांव ।
बदरिया हमरो केने आव । बदरिया हमरो केने आव ।

अइसन का भकुआय गयल
बाड़ू हमके समुझावा ।
हिय में कउनो पीर होखे त
आवा बइठ बतावा ।
सुख दुःख मिलके बाँट लिहल
जाइ पिपरा के छाँव ।
बदरिया हमरो केने आव । बदरिया हमरो केने आव ।

❑❑

❍ भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

खेतिहर

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

माघ–पूस के रतियन में
खेते–खेते मेहनतकस बा।
खेतिहर अजुवो ले बेबस बा॥

अजुवो अनाज बोवे से पहिले
आसमान के ताकेला
खाद, बीज, पानी के खातिर
हाट नहर के झाँकेला
रोपनी–सोहनी लवनी–कटनी
बोवनी के का बात करीं
जामल पौध अगोरे खातिर
रात–दिन बस भागेला
उपराजे के अन्न बादहूँ
एम एस पी के डस बा॥ खेतिहर –––

औना–पौना दाम मिलेला
ओकरा कुल्हि मेहनत के
साह–आढ़ती नफा उठावस
तिनकर अजहद गुरबत के
अगहन–चइत के सपना ओकर
जाने कहाँ बिला जाला
फटेहाल बस फटेहाल
हर बेर जहाँ में रहि जाला
बेर–बेर चिचिअइला पर
संसद के झूठ बहस बा॥ खेतिहर –––

आपन दरद बटोरले जब
कृषक सड़क पर आवेला
दिल्ली वाली दुनियाँ के
इचिको ना ऊ भावेला
कबों मोकदमा, कबों पुलिस से
सरकारो धमकावेला
जब चुनाव के दिन नियराला
उनुके गीत सुनावेला
झूठ–फरेबी के दलदल में
डूबल नेतन के नस बा॥ खेतिहर

कब ले रोई, कहाँ ले गाई
कब ओकर किस्मत फरिआई
जब ले ओकर पेट जरत हौ
अन्नदाता का कहल सोहाई ?
कब ले ओकर मास बेंच के
ओही के मुअवावल जाई
हेरत बानी एकर उत्तर
झूठिया आस धरावल जाई
जागीं जागीं ए सरकार
एह दुख पर रउरे बस बा॥ खेतिहर –––

❑❑

❍संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

पूर्वाञ्चल के माटी

पूर्वाञ्चल के माटी बहुत उपजाऊ बाटे बाकिर राजनैतिक अनदेखी का चलते सरकार कबों एह क्षेत्र के विकास पर गंभीर ना भइल। स्थानीय नेता लोग कबों अपनो कहलकी बातिन पर टिक ना पावल। पूर्वाञ्चल के किसानन के सरकार से घोसित फसल के मूल्य कबों ना मिल पावेला। एगो अउर खास बात, इहाँ के किसान लोग धान आ गेहूँ के खेती पर आश्रित हो चुकल बाड़न।

❑❑

लोकउकितन में खेती के बात

दिनेश पाण्डेय

भारतीय सभ्यता में जीव के उत्पत्ति, बढ़वार आ विलयके सिलसिला में अन्न के अहमियत के पह. चान असलियत के अनुभव के आधार प बा । तैत्तिरीयोपनिषद(आनन्दवल्ली, दूसरा अनुवाक) के कथन ह कि पृथिवी के आसरे जतिना जीव बाड़न ऊ अन्ने से पैदा होले, जीएले आ अंत में ओही में बिला जाले– "अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते । याः काश्च पृथिवीं श्रिताः । अथो अन्नेनैव जीवन्ति । अथैनदपि यन्त्यन्ततः ।"अन्नके उपज में बढ़ोतरी खेती के बेहतर प्रबंध के जरियहीं संभव ह ए से भारतीय सभ्यता में खेती के बहुत अधिक प्रमुखता दीहल गइल । ई अर्थ–बेवस्था के मजगूती के सबसे सरेख साधन रहल ह । खेती के हालात में चौतरफा बदलाव आ लाख चढ़ाव–उतार का बादो आदमी के जिनिगी में एकर महत्व में कमी के कल्पनो ना कइल जा सके । 'कृषिपराशर' में खेती–बारी के महातम बतावत कहल गइल बा किअन्ने प्राण ह, अन्ने बल ह, अन्ने सरबस मकसद के साधन ह, देव–असुर चाहे मानुस सभ अन्ने के उपजीवी हवें । अन्न फसिले से उपजेला आ बेगर खेती फसिल ना हो सके, ए से सभकुछ छोड़के जतन से खेती करे के चाहीं – "अन्नं प्राणा बलं चान्नमन्नं सर्वार्थसाधनं । देवासुरमनुष्याश्च सर्वेचान्नोपजीविनः । अन्नं हि धान्यसञ्जातं धान्यं कृष्या विनानच ।तस्मात् सर्वं परित्यज्य कृषिं यत्नेन कारयेत(कृ०प०, प्रास्ताविक 6–७) ।"

भोजपुरी इलाका गंगा आ सहायक नदियन के समतल मैदानी भाग में फैलल बा जवन खेती के नजरिए सबसे बड़ आ संपन्नइलाका ह, ए से एहर हरसांस्कृतिक बेहवार में खेती–बारी के सोन्हगंधी पसराव चौगिर्द महसूस कइल जा सकेला। एने लो. कमन में सँइतल एह अवधारणा के नकारे के कवनो आधार नइखे जे गिरहस्थ के जिनिगी 'ग' अच्छर में सिमटल पड़ल बा, गाय, गोरू, गरुआरी, गोरस, गोबर, गोंइठा–गोहरा से लेके गमछी, गोजी, गँड़ासी, गैंती, गोड़ाई, गतान,गहूँ, गँड़ेरी, गाँव–गिराँव वगैरह केगझिन गिरहफाँससे ऊ मुक्त ना हो सकस। जरूरी भा मजबूरी, जीए के आधार खेतिए–बारी ह । 'उत्तम खेती, मध्यम बान, निखिध चाकरी, भीख निदान(–घाघ)' के सूत्रकथन से के परिचित नइखे? खेती त का, सरबस जीव–जिनिगी बुनियादी तौर प बरखा के आसरे ह– 'वृष्टिमूला कृषिः सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनं (कृ०प०, वृष्टिखंड– 1)', ए से पहिले जतन से बारिश के ज्ञान करे के चाहीं– तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टि ज्ञानं समाचरेत।' मौसम–विज्ञान आ संचार के हेह उठानकाल में बात बहुते आगे बढ़ चुकल बा ए से मौसम के मिजाज के सटिक अनुमान संभव बा । पारंपरिक तौर प जुग–जुग के अनुभव से बारिश के लेके ढेर लोकउकित बाड़ीसन जवन दीरघकाल तक किसानी के संबल बनल रहलीसँ । अजहूँ ले एन्हनि के प्रासंगिकता चुकल नइखे । एह संबंध में कहाउतिन के भरमार बा। खेती–बारी से संबंधित कहाउतिन में अधिकतर 'घाघ' के बाड़ीसँ जेकर सटीकता प आजु ले कवनों सवाल ना उठल। कुछ बानगी–

– "असाढ़ मास आठै अँधियारी,
जो निकले चंदा जलधारी।"
"चंदा निकले बादर फोर
साढ़े तीन माह बरखा के जोर।"

–आसाढ़ी अठिमी के अन्हरिया छइले होखे आ बादर के चीर के चान निकल वे त अगिला तीन माह बारिश के अच्छा प्रभाव रही।,

– "आदि न बरसे आदरा, मध्य न बरसे मघ।
अंत न बरसे हस्त, का करीहें गिरहस्त?"

–शुरुआती अदरा, मधे मघा आ हथिया के अंत में बारिश ना होखे त गिरहस्त बेचारा का करस?,

– "आवत आदर ना कियो, जावत दियो न हस्त।
एही में दुन्नो गइल, पाहुन आ गिरहस्त।"

–हिंहा 'आदर' आ 'हस्त' में यमक बा। चढ़ते अदरा आ उतरत हथिया नछत्तर में बरखा ना होखे त गिरहस्त चउपट होखिहें। अइले सनमान ना दिहल जाय आ बिदाई में कुछ हाथ गरम ना कइल जाय त पाहुनों के गइले बुझीं। ,

– "आसिन मासे बहे ईसान,
थरथर काँपे गाय किसान।"

–कुआर में पुरुब–उत्तर कोन के हवा बहे त बरखा आ हवा में ठंडक बढ़ी।,

– "उगे अगस्त बन फूले कास,
अब नइखे बरखा के आस।"

–अगस्त तारा उगे लागे आ कास में फूल दिखाई दे त अब बरखा के कवनों उमेद नइखे।,

– "जेठ उतरती बोले दादर।
कहें भड़री बरसे बादर॥"

–उतरत जेठे मेंढक बोले, त जल्दी बरखा होखी।,

– "एक बून जल चइत चूवे,
लाखन बून सावन के मूवे।"

–चइत में थोरिको बरखा हो जाय त ओकर
लखगुना कमी सावन में जरूर होखी।,
– "करिया बादर डरावना, भूअर बरिसनहार।"
–करिया बादर महज भय पैदा करेलें, भूअर बादर बरिसे वाला होलें।,
– "कातिक बारह मेघा बरसे,सो मेघा आसाढ़े बरसे।"
–कातिक के बारहवीं के जवन बादर बरिसेलें उहे आसाढ़ो में, मतलब बरखा के परिमान उहे होला।,
– "जब बहले हड़बड़वा कोन,
तब लादे बनिजरवा नोन।"
–बउखल अस कोनसिया हवा बहे त बरखा के संभावना खीन होखे से नीमक के तिजारती सक्रिय हो जालें।,
– "जो हरि होइहें बरिसनहारा,
का करि पइहें दखिन बयारा।"
–ईस्सर बरिखे प उतारू होखस त दखिनहिया हवा का कर पाई?,
– "तीतर बरनी बादर, बिधवा काजर रेख।
ई बरखी ऊ घर करी, ए में मीन न मेख।"
–तीतर–बरनी बादर होखे आ बिधवा आँखि में काजर काढ़े त बुझीं कि ई बरखी आ ऊ भतार करी, ए में कवनो मीनमेख नइखे।,
– "पुरवा में पछिया बहे,
हँसि के नार पुरुस से कहे।
कहे घाघ हम करब बिचार,
ऊ बरसी ई करी भतार।"
–पुरवा नछत्तर में पछिया बहे आ औरत कवनो मरद से हँसि–हँसि के बतियाय त बुझीं कि ई बरखी आ ऊ भतार करी।,
– "बादर ऊपर बादर धावे।
कह भड्डर जल आतुर आवे॥"
–बादर प बादल चढल दउरें,
त बकौल भड़री हाली पानी बरसी।,
– "मंगरवारी होय दिवारी।
हँसे किसान रोवे बैपारी।।"
–मंगवार के दियारी होखे त नीमन बरखा से किसान खुश आ बैपारी उदास होलें।,
– "माघे ऊखम, चइते जाड़,
पहिला बरखा भरल ताल।
घाघ कहे कुछ होनी होय,
कुआँ के जल से धोबी धोय।।"
–माघ में उमस आ चइत में जाड़ा लागे, पहिली बारिश में आहर–पोखर भरि जाय त घाघ के कहनाम कि अनहोनी होई, बरखा के अभाव में धोबी के कपड़ा धोए खातिर कुआँ के सहारा लेवे पड़ी।,
– "मोरपंख बादर उठे, राँड़ी काजर रेख।
ऊ बरसे ई घर करे, या में मीन न मेख (–भँड्डरी)।"
–मोरपंखी बादर घेरे आ राँड़ गोसा काढ़े त एह बात में संदेह नइखे कि ई बरखी आ ऊ घर करी।,
– "लाल, पीयर जब होखे अकास,
तब नइखे बरसा के आस।"
–आकाश लाल–पियर बरन के लागे त बारिश के संभावना नइखे।,
– "सावन शुक्ला सप्तमी, छिपके उगे भान।
कहे घाघ घाघिन सुनऽ, पर्वत रोपऽ धान।।"
–सावन अँजोरिया पख के सतमी के बादर में लुकाछिपी करत चान निकले त बरखा अतिना होई कि पहाड़ो प नीमन धान होई।,
– "सावन शुक्ल एकादशी, घन गरजे अधरात।
तू जा प्रीतम मालवा, हम जाईं गुजरात।।"
–सावन अँजोरिया पख के सतमी के अधरतिया में बादर गरजे त बरखा ना होई, खेती के आस छोड़ जीविका खातिर अनते (मालवा, गुजरात) गइल ठीक रही।,
– "सूकरबारी बादरी, रहे सनीचर छाय।
डंक कहे सुन भड्डरी,बिन बरिसे ना जाय।।"
–शुक्रवारके बादर उठे आ सनीचर तक छाइल रहे त डंक के भड्डरी से कहनाम कि बिना बरिसे ना जाई।,

मौसम के अलग–अलग रंग–मिजाज के आगामी खेती प पड़े वाला असर के अंदाजा जरूरी ह । ई ज्ञान फसिल के बचाव, एह प्रति सजगता आ आइंदे के तैयारी खातिर बड़ काम के चीज ह । कहाउति ऊ जरिया रहलि जवन जुग–अनुजुग के अनुभव आ जानकारी के आम–जन तक मुँहामुहीं चहुँपावत रहलि–

– "अगहन बरिसे टून, पूस बरिसे दून।
माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे गँवाई।"
– "अदरा गइल तीनों गइल,
सन साठी कपास।
हथिआ गइल सभ कुछ गइल,
आगिल पाछिल चास।"
– "अदरा धान पुनरबस पैया,
गइल किसान जे बोय चिरैया।"
– "आइल आसाढ़ त भुँइ भई सँवरी,
सैंया तुम जोत लेहू चारि बिगहा अवरी।"
– "आइल चइत सुहावन,
फूहर भइल छुड़ावन।"
– "एगो पानी बरिसे स्वाती,
कुरमिन्ह पेन्हे सोना–पाती।"
– "चढ़ते बरिसे आदर, उतरत बरिसे हस्त।
बीचे बरिसे माघा, चौन करे गिरहस्थ।"
– "चना चित्तरा चौगुना, स्वाती गोहूँ होय।"
– "चितरा बरिसे माटी मारे,
आगे भाई गेरुई के कारे।"

– "जो बरसे पुनरबस स्वाती,
चरखा चले ना बोले ताँती।"
– "रोहिनी रवे, मृगशिरा तवे,
कुछ दिन अदरा जाय।
घाघ कहे घाघिन से,
स्वान भात ना खाय।।"
'कृषि पराशर' में हवा के बहाव के दिशा के आधार प बरखा के मात्रा के अनुमान कइल गइल बा–
"सौम्यवारुणयोर्वृष्टिरवृष्टि पूर्वयाम्ययोः ।
निर्वाते वृष्टिहानिः स्यात्संकुलं संकुलं जलम्
(वृष्टिखंड– २२)।।"
–उत्तरहिया, पछिमाही हवा बरखा आ पुरवैया भा दखिनहिया बरखाहीनता के सूचक ह ।, अब हवा के बहाव प केकर कस चलेला? एह तरह के छोट–बड़ कारक खेती में असमंजस पैदा करबे करिहें, ए से खेतीकाज थोड़े छोड़ी केहू? बाकिर मानसिक रूप से ए बदे तैयार रहे के चाहीं–
–"कतिनो खेत बना के जोतीं,
एक दिन दखिनहिया लागी।"
– "सावन पछिया भादो पुरवा,
आसिन बहे इशान।
कातिक मासे सींक न डोले,
कहवाँ रखब धान।।"
खेती–बारी के काम मिहनत के ह बाकिर ईहो तय बात ह कि उत्पादन आर्थिक खुशहाली के आधार ह आ उत्पादन के आधार श्रम । बेगर बेना डोलवले जब हवो नइखे भेंटे के त श्रमहीन उत्पादन के संभावना कहाँ से कइल जा सकेला? खेती–बारी खातिर मेहनत का संगे उचित देखभाल जरूरी ह–
"फलत्यवेक्षिता स्वर्णं दैन्यं सैवान्यवेक्षिता
(–कृषिखंड– 1)"
– मतलब कि देखभाल के खेती सोना उपजायी आ अलगरजू के खेती गरीबी। खेती कम होखे मिहनत सवाई त रामजी के दया से कवनो बात के टोटा ना पड़ी
– "खेती त थोरिक करे
मिहनत करे सवाय।
राम चहें वही मनुष के
टोटा कभी न आय॥
"एक बात अउ, ऊ ई कि खेती–गिरहस्थी के काम खुद करे ना कि आन के मत्थे डाल दे– "
खेती पाती बीनती औ घोड़े की तंग।
अपने हाथ सँवारिए लाख लोग हो संग (–घाघ)।।
पशुहित, खेत के लगातार देखभाल, बीया के संरच्छा, आलसहीनता से युक्त खेतिहर अन्न से भरल–पूरल होके कबो दुख ना पावे
– "गोहितः क्षेत्रगामी च कालज्ञोबीजतत्परः।
वितंद्रः सर्वसस्याढ्यः कृषको नावसीदति
(–कृषिखंड– ५)" ।।"

आगे के कहाउतिन मेंएही बातन केअलग–अलग ढंग से कहल गइल बा–
– "असकति नीन किसाने नासे,
चोरे नासे खाँसी।
आँखे कींची बेसवा नासे,
मिरगी नासे पासी (–घाघ)।"
– असकत आ नीनि किसान के, खाँसी चोर के, आँखि के कींची बेसवा के आ मिरगी के रोग पासी के बिनाँस क देलें।,
–"खेती, बेटी, गाभिन गाय,
जे ना देखे ओकर जाय।"
–खेती, बेटी आ गाभिन गाय ई तीनों निरंतर देखभाल के बिना बरबाद हो जइहें।,
– "परहथ बनिज संदेसे खेती ।
बिन बर देखे ब्याहे बेटी ॥
द्वार पराये गाड़े थाती।
ई चारो मिल पीटे छाती(–घाघ) ॥
–दोसरा भरोसे व्योपार करेवाला, सनेसा प खेती करेवाला, बिना वर देखे बेटी ब्याहे वाला आ दोसरा दुआरे घरोहर गाड़ेवाला, ई चारो छाती पीट के सिर धुनेलें।,
– "बाढ़े पूत पिता के धरमे,
खेती उपजे अपने करमे(–घाघ)।"
–पिता के नीमन करम से पूत के उन्नति आ खुद के श्रम से खेती के उपज होखेला।,
– "अनकर भइया आन रोपइया,
दीहें धान कि पैया।"
–बात सवाली मुद्रा में बा, दोसरा के भाई का धन दी? पाई–वाई के मदद भेंट जाय ओतिने जादे बा। ओही तरे दोसर खेती करेवाला (बँटाई दार) धान दी कि खँखड़ी, ई सोचे जोग बा।,
– "अरधी मेहरी, बटइया खेत।"
–अरधी (जवन अगते दोसर मरद के बिअहुता रहल होखे) औरत आ बँटाई के खेती के का एतवार?,
निरालस का संगे समय के नजाकत के पहिचानो ओतिने जरूरी ह। सुस्त आ बेपरवाह किसान के ईहे फितरत ह कि सावन में ससुरार अगोरी, भादो में पूआ चाँपी, बाद में खेते–खेते पूछत डोली कि तोहार कतिना पैदावार होखल?
–"सावन सुत्ते ससुर घर, भादो खाए पूआ।
खेते–खेते पूछत डोले तहरे केतिक हुआ (–घाघ)।"
खेती में खेती के औजारन के दुरुस्त आ उपयुक्त होखल बहुत महत्वपूर्ण ह। हालांकि आज के जुग में पारंपरिक औजारन के सरूप में आमूलचूल बदलाव आ चुकल बा जहाँ मशीनीकरण के असर साफ दिखाई देता। कुछ दशक पहिले तक हर–बैल, हेंगा–पट्टा, खुरपी, कुदारी, खंती–गैंती खेत जोते आ

माटी के भुरभुरा भा नरम करे के प्रमुख खेती के साधन रहन, अब खेत जोतवा(ट्रैक्टर),जोतहर (पावर टिल्लर), घुरदंती(रोटावेटर), बिजबोअनी (सीड ड्रील), खेतिहर (कल्टीवेटर) आदि उनकर जगह लेत जात बाड़ें। कटनी—दँवनी के काम में कटाई मशीन (हार्वेस्टर), फसिल— कटनी(क्राप कटर), दाँवनी (थ्रेसर) वगैरह के इस्तेमाल बढ़ गइल। सिंचाई के पारंपरिक साधन रहट, कूँड़, दोन, सएर, हत्था, चाँड़, मोट विलुप्त हो चुकलन, इनके जगह दमकल (पंपिंग सेट),अभिवर्धी दमकल (बूस्टर पंप),बौछारी बनूख (रेनगन), टपकौवा सिंचाई साधन (ड्रिप इरिगेशन सिस्टम), बौछारी (स्प्रिंकलर), जल—प्रवाह नपनी, मृदा—संवेदी आ ना जाने का का के भरमार बा। कहाउति त पुरनके बाड़ीसँ बाकिर एन्हनि के उल्लेख खेती में औजारन के भूमिका के हाले—बयान बदे कम जरूरी नइखे। कुछ बात बाते भ ना होखे, तेकरा बाद कवनों बोधन, चेतावन के खास दरकार ना रहे। अब— "ढुलमुल बेंट कुदारी अउरी हँसी के बोले नारी" के जथारथ ज्ञान के बाद ई कहे के का जरूरत जे, ई दूनों से बाँचेके चाहीं,खतरा हो सकेला। हँ, ई उपाय हो सकेला कि एन्हनि के पच्चड़ दुरुस्त क लिहल जाय। सपूत के बढ़ईगीरी जानहीं पड़ी

— "बेटा होय, बढ़इकम (बढ़ई—कर्म) जाने।

"जोते के साधन पर्याप्त होखे

— "एक हर हतेया, दू हर काज,
तिन हर खेती, चारि हर राज।"

खेती के सारा सरंजाम रहे तबे किसानी—

"बाध, बीया, बेकहल, बनिक, बारी, बेटा, बैल।
ब्योहर, बढ़ई, बन, बबुर, बात सुनो हे छैल!
जा बकार बारह बसे,से पूरन गिरहस्त।'
अउरिन के सुख दे सदा आप रहे अलमस्त।"

—बाध= मूँज के रस्सी, बीया= बीज, बेकहल= ढाँक के जरिके छाल), ब्यौहर= सूद पर उधारी, बारी= फुलवारी, खेत चक होखे, जल—संरच्छन के उपाय होखे, भूसा—चारा के इंतिजाम होखे, दक्ष बढ़ई नगीच हो खे, घर के मलिकाइन निपुन होखस, चयनित—उपचारित बीज होखे, बएल बगौध नस्ल के होखस, हरवाह हुसियार होखस, बेटा सही मायने में बेटा होखस जे बेअईवले काज क लेस

— "बिगहा बायर होयबाँध जो होय बँधाये।
भरा भुसहुला होय बबुर जो होय बुवाये।
बढ़ई बसे समीप बसूला बाढ़ धराये।
पुरखिन होय सुजान बिया बोउनिहा बनाये।
बरद बगौधा होय बरदिया चतुर सुहाये।
बेटवा होय सपूत कहे बिन करे कराये।"

असल किसान उहे जे कुदी—खुरपी हाथ में आ लाठी—हँसुआ साथ में रखे

— "बाँध कुदारी खुरपी हाथ।
लाठी हँसुवा राखे साथ॥

"जवन किसान भिर बबूर के पाथा, सिरिस के हर, हरियानवी बरध होखे उ किसान पनडाली लगा के चउपड़ खेल सकेला, याने आनंद से रह सकेला—

"कीकर पाथा सिरस हल, हरियाने के बैल।
लोधा डाली लगाय के, घर बइठे चउपड़ खेल।।"

सफल खेती बदे खेत के बढ़िया जोताई आ सिंचाई के महिमा के बखान वैदिक काले से मिलेला। बुद्धिगर लोग धरती के जोतेलें—'सीरा युञ्जन्ति कवयो' (अथर्व, ३,१७.1), जुआ फैला के हर जोते आ भलीभाँति तैयार जमीन में बीया बोए— 'युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते यौनो वपतेह बीजम्' (अथर्व, ३,१७.२), तेज फार से जमीन के खोदाई करे— 'शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं' (अथर्व, ३,१७.५), जवन जल आकाश में बा ओकर बरखा के उपयोग से जमीन के पटवन करे—

'यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुप सिञ्चतम्'जइसन

उक्ति से वैदिक ऋषि जोताई के महत्व के नीमन से समुझवले बाड़ें। भोजपुरी लोकउकितन में बोवाई के अगते जमीन के जोताई आ के लेके बहुत कुछ कहल गइल बा, कुछ मिसाल—

— "जे हर जोते खेती वाकी,
अउरी ना त जाकी—ताकी (—घाघ)।।"

—जे हर जोते खेती ओकरे, ना त जेकर—तेकर।,

— "जोते खेत घास ना टूटे,
तेकर भाग्य सँझहिए फूटे (—घाघ)।"

—खेत जोते आ घासो ना टूटे त ओकर नसीब फूटल।,

— "कहा होय बहु बाहें,
जो ना जोते थाहें(—घाघ) ।।"

—ढेर जोतले का जे गहिरोर ना जोताय?,

— "खेत बेपनियाँ जोतऽ तब,
ऊपर कुआँ खनावऽ तब (—घाघ)।"

खनिरस खेत तबे जोत जब कूप खना ल।,

— "जब बरिसे त बान्ह कियारी,
बड़ किसान के हाथ कुदारी (—घाघ)।"

खबरिसते कुदारी उठाव आ पानी संचय क ल, बड़ किसान के कुदारी उठला रहेला।,

— "थोरा जोते बहुत हेंगावे, ऊँच न बान्हे आड़।"

— "ऊँचे पर खेती करे, पैदा होखे भाँड़
(—घाघ)।।"

—गहिरोर ना जोते, खाली हेंगावे, आरियो ऊँच ना रखे आ ऊँचास प खेती करे त भाँड़ पैदा होखी।,

– "हर लगल पताल।त टूट गइल काल (–घाघ)॥"
–हर गहिरे धँसल त जानी कि काल प फतह।,
– "जोन्हरी जोते तोर–मरोर।
तब ऊ डाले खोठिला फोर (–घाघ)।।"
–खूब उलट–पहट के जोतले मकई–मसुरिया अतिना होखी कि कोठिला कम पड़ जाई।,
– "करिया फूल न आइल पानी,
धान मरे अधबीच जवानी (–घाघ)।"
फूल करिया गइल, पानी ना पड़ल, धान मध जवानी में मुआर हो जाई।,

खेत में अनचाही घास के उगल ताज्जुब ना ह, उगबे करी, बाकिर ए प नजर ना दीहल जाय त मुख्य फसिल दब जाई। घास के अधिकाई उपज बदे हानिकारक ह, ए से निराई–गुड़ाई खेती के एक अनिवार अंग ह। घासन के अलग–अलग तासीर ह, कुछ जड़–बज्जर होलें, कुछ लरछुत, कुछ नाजुक, कुछ के त खादो के रूप में इस्तेमाल हो सकेला। घाघ के कहल ह कि राढ़ी काट के गहूँ, कुस उपाह के धान, गाँड़र सोह के जड़हन के नीमन पैदावार लीहल जा सकेला बाकिर जवन खेत में फुलही घास उपज जाय ऊ किसान के रोवा दी, ओमें कुच्छो ना उगी–

"रड़हे गेहूँ, कुसहे धान।गड़रा की जड़ जड़हन जान ॥
फुली घास रो देइ किसान,वहिमें होय आन का तान।"

निराई बदे पर्याप्त संख्या बल होखे
– "तीनि खाट, दुई बाट,
चार छावे छव निरावे।"
निराई में नफासत से काम ना चली–
"पहिर खड़ाऊँ खेत निरावे,
ओढ़ि रजाई घोंके।
कहे घाघ ई तीनों भकुआ,
बेमतलब के झोंके (–घाघ)।।"
– "सुथना पहिरे हर जोतेआ पोला पहिरि निरावे,
घाघ कहे ये तीनों भकुवासिर बोझा ओ गाबै॥"
ऊख जइसन फसल में त ई काम बेरि–बेरि करे पड़ी–
"तीन कियारी तेरह गोड़।
तब देखो ऊखी के पोर॥""

सिंचाई के नजरिए फसिल के दू प्रकार ह– अपटा आ सपटा।

अधिकतर रब्बी के पैदावार में जियादह पानी के दरकार ना होखे, मौसम के अनुकूलता आ जमीन में मौजूद नमी से काम चल जाला। खरीफ सिंचाई के आसरे होला। अगते सिंचाईवाली खेती मुख्य रूप से मानसुनी बरखा के आसरे रहे।

आहर–पोखर, नदी–कुल्या, कुआँ आदि रहन जवन बरखा से संचित भा भूजल स्रोत प निर्भर रहन। धरती प पानी के स्रोत त उहे बाड़न बाकी हेह वैज्ञानिक जुग में तकनीकीबिकास का चलते सबकुछ आसान भ गइल बा।पटवन के जरूरत आ उत्पादन प पड़े वाला असर के लेके कहाउतिन में जवन तथ्य बिखरल पड़ बा, घाघ के कथन में तेकर कुछ उदाहरण देखल जा सकेला।
"सभे किसानी हेठी।
अगहनिया पानी जेठी॥"
– निचोड़ ई कि अगहनी सिंचित खेती का आगू सभ किसानी ओछ। सब्जीवाड़ी के बुनियाद त पटवने हइए ह
– "तरकारी ह तरकारी,
या में पानी की दरकारी॥
" याने तरकारी त तरावट के चीजे ह, एकर खेती में सिंचाई के दरकार जादे होला। धान, पान आ उखियारी त पानिए के चाकर हवें
– "धान, पान, उखेरा,
तीनों पानी के चेरा।" एगो अवरि कि
"धान पान अउ खीरा।
तीनों पानी के कीरा॥"

ई तथ्य ह कि माटी पउधन के जिनिगी के आधार ह। अँखुवा फूटे से ले के, बढ़ोतरी, शाखा–फैलाव, फूले–फरे सभ में माटिए जरिया ह, बाकिर हरमेसे माटी में पोसक–गुन समरूप ना होखे। एकर कमी से भरपूर उपज के उमेद ना कइल जा सके। ए से बेहतर उपज खातिर अतिरिक्त खाद–पानी के जरूरत होला। खाद के खास तौर प दू प्रकार ह– जैविक आ रासायनिक। भारत में हरितक्रांति के दौर में आन्हाधुन रासायनिक खाद के इस्तेमाल बढ़ल जेकर परिनाम ई कि शुरु में उपज त बढ़ल बाकिर बाद में माटी के उर्वरा शक्ति में कमी का संगे कइ तरे के नकारा असर देखल गइल। अब फिर बैताल ओही डाढ़े लटके बदे बेअगर बा। जैविक खेती के तेज जरूरत सगरे महसूस कइल जाता आ तेकर बिकास खातिर हर उपाय खोजल जा रहल बा। भारतीय पारंपरिक खेती के रीति में ई गुन अगते से मौजूद रहल ह। हिंहा खाद के मतलब प्रकृति में उपलब्ध पोसन–गुन वाली बस्तु से रहल। घाघ के कहल कि "खाद परे त खेत,ना त कूड़ा रेत।" खेती करे त खेत के खाद से पाट दे आ भरपूर अन्न संजो ले

— "खेती करे खाद से भरे,
सौ मन कोठिला में ले धरे।"

जवन किसान के जवन किसान के खेत में गोबर ना पड़ल उनुका के डँड़टूटे बुझीं— "जेकरे खेते पड़े न गोबर,ऊ किसान के जानीं दूबर।" गोबर के अतिरिक्त कइ तरे अताई–पताई नीमन खाद के काम करेलें, उनकर प्रयोग उपयोगी रही— "गोबर, चोकर, चकवर, रूसा,इनके छोड़े होय न भूसा।" मतलब कि गोबर, चोकर, चकवन आ अड़ूसा के पतई खेत में छोड़ले भूसा कम अनाज अधिका होला। खेत में गोबर के खाद का संगे, गू–गनउर, नीम के खरी डलले उपज दोगुना हो जाला— "गोबर मैला नीम की खली,यासे खेती दूनी फली।"घूर–गनउर आ गोबर के सरले अन्न पोढ़ाला–"गोबर मैला पानी सड़े,तब खेती में दाना पड़े।"

खेती के कुछ आम तौर–तरीका बाड़े जेकर ध्यान रखल हर किसान से लाजिमी बा—

"आगे के खेती आगे–आगे,
पीछे के खेती भागे–जोगे।"
"अगते खेती अगते मार,
कहे घाघ से कबहुँ न हार।"
"अगहन दूना पूस सवाई,
माघ मास घरहूँ से जाई।"
"आगे खेती आगे–आगे,
पाछिल खेती भागे जोगे।"
"अदरा मास जे बोए साठी,
दुख के मारि निकाले लाठी।"
"आगे गेहूँ, पाछे धान,
वा के कहिये बड़ा किसान।"
"खेती करे बनिज के धावे,
अइसन डूबे थाह न पावे।"
"खेती करे साँझ घर सोवे।
काटे चोर माथ धर रोवे।"
"खेती धान के नास,
जब खेले गोसइयाँ तास।"
"खेती, पाती, बीनती अउ घोड़ा के तंग।
अपने हाथ सँवारिहऽ लाख लोग हो संग।"
"खेती–बारी, चाकरी औ घोरे की तंग,
अपने हाथ सँवारिय,
तब जिउ रहे अनंद।"
"खेती रहे बिदेसे जाय,
तेकर जनम अकारथ जाय।"

खेती के हजार गुर ह। निचोड़ ई कि जेकरा जूता सिलाई से चंडीपाठ तक के गुन आवत होखे ऊ एगो कुशल किसान हो सकेला। श्रम के अलावे हर विकट परिस्थिति के अनुकूल बनावे के कला उन्नत किसानी के बीज–सूत्र ह, जवन इन्ह लोकउकितन में समाहित बा। गिरहस्थी सुखी जीवन के आधार ह जेकर आदर्श रूप के बखानचाणक्य के एक नीतिकथन में मिलेला, तेकर भाव–उलथन ह—

"तिन्हके घर सुख चौन रहे
जहँ धीय सुधीय तिया सुमुखी।
भृत्य भरोसी इच्छित वित्त,
धनी अपनी रतिरंग सखी।
अतिथि सेव देव पूजन नित,
मधुर अन्न रस की जिवनारी।
बितत नित्य साधु की संगति,
जीवन धन्य उहे घरुआरी।"

(–चाणक्य नीति दर्पण, १२.1)

❑❑

❍ पटना,बिहार

एगो करुआ साँच

(आजु के पूर्वाञ्चल में कुल्हि 17 जिला, 117 विधायक अउर 23 लोकसभा सदस्यन वाले एह हिस्से से देश के प्रधानमंत्री अउर प्रदेश के मुख्यमंत्री बाड़ें, बाकिर प्रदेश के 10 सभेले गरीब जिलन में पूर्वाञ्चल के 9 गो जिला बाड़न। इहवाँ खेती किसानी के असल समस्या प्रदेश के शेष हिस्सन से अलग बाटे। पूर्वाञ्चल में रवि, खरीफ अउर जायद के फसल होलीं। गंगा जमुना के दोआब क्षेत्र में गेहूँ के जबर पैदावार होला। पूर्वाञ्चल के कई गो जिलन में धान के बढ़िया पैदावार होला। उत्तर प्रदेश में पूर्वाञ्चल के जिला –वाराणसी, चंदौली, जौनपुर, भदोही मिर्जापुर, गाजीपुर, गोरखपुर, कुशीनगर आ देवरिया बा। पूर्वाञ्चल के उपजाऊ धरती पर रहे वाला लोगन का सोझा रोजी–रोटी के लमहर समस्या पहिलही से रहल बा, आजो बा। खेती–किसानी से गुजारा न चलला का वोजह से पलायन के पीड़ा इहाँ के लोगन के भाग्य में बदल बा। अबो ले कवनो आस किरन नइखे देखात।)

❑❑

– साभार गूगल

राजू साहनी

कृषि प्रधान देश

अपने देश के अर्थव्यवस्था में खेती बारी के महत्वपूर्ण योगदान बा । खेती बारी हमेशा से अपने देश के आर्थिक अउर सामाजिक उन्नति के माध्यम रहल बा।

भारत के किसान लोग खेती बारी के एगो उत्सव के रूप में मानेला , वर्ष 2011के जनगणना के अनुसार 54-6 प्रतिशत आबादी खेती बारी करेला। भारत के जीडीपी में खेती बारी के बहुत महत्त्व बा , काहे कि किसान हमेशा से देशहित में काम करेला । अउर पूरा देश के अन्न उत्पादन प्रदान करेला जेसे खेती बारी करे वाला के अन्नदाता भी कहल जाला ।

खेती बारी ही भारत के आत्मनिर्भर बने के मूल आधार हवे , बाकिर किसान हमेशा ही प्राकृतिक आपदा के शिकार हो जाला।

जइसे अब देखी धान के बीया डला गइल बा रोपाये खातिर बकीर बारिश के अभहीन दर्शन न भईल मतलब एको बूंद न गिरल अब किसान करे भी ता का करे कसहु पानी चलाके जियावत बा लोग आ ई सोचत बा की बरिश देत त मजा आ जाईत ।

लेकिन अबहीन बारिश ना होई बकिर जइसे तइसे कके पानी वानी चला के रोपनी हो जाई आ जईसे ही फसल लहलहाई ता वईसे ही भगवान अईसन बरिसीहे की बाढ़ आ जाई आ सब फसल नष्ट हो जाई ।

लेकिन किसान आपन खेती बारी कईल ना छोड़ेला अउर आपन उम्मीद न छोड़ेला हरदम अपना काम में लगल रहेला।

हमरा ई ना समझ में आवेला कि भारत के कुल अर्थव्यवस्था में खेती बारी के लगभग 14 प्रतिशत योगदान बा तबो आज अपना देश में खेती आ किसान के अर्थनीति में जेतना महत्व मिले के चाही ओतना ना मिलल बा ।

खेती बारी कईल आजकल बड़ा जोखिम हो गइल बा काहे की जब प्राकृतिक आपदा से फसल नष्ट हो जाला ता किसान हालत बदतर हो जाला , किसान आपन जीविका चलावे खातिर कर्ज लेला अउर आपन घर चलावेला , जैसे औद्योगीकरण उदारीकरण एवं अन्य आर्थिक समाजिक सुधार के माध्यम से उद्योगों का कायाकल्प भईल बा अउर उद्योग में लागल घाटा से उबरे खातिर करोड़ों रुपिया के सरकारी राहत दिहल जाला ।

बाकिर जब खेती बारी के बाती आवेले किसान के कर्ज बात आवेले तब सरकारी राहत कोष से अतना कम रुपिया दिहल जाला की किसान के लाभ ता न होला बाकिर हां माखौल जरूर उड़ावल जाला ।

आज बढ़त महंगाई के दौर मे खेती बारी कईल बड़ा कठिन हो गइल बा । छोट छोट किसान के खेती कईल असंभव लगता ,काहे की बीज ,उर्वरक , जुताई,कटाई चाहे फसल बेचे खातिर दूसरे पे निर्भर रहे के पड़ता , अब खेती के लागत बढ़त देखी दूसरे के मजदूरी करे के पड़ता ।

किसान खेती बारी कके फिर से भारतीय अर्थव्यवस्था के रीढ़ बने ओकरा खातिर आवश्यक बा की किसान के फसल पैदावार के उचित दाम मिले के चाही ।

सरकार के कम ब्याज प समय से ऋण मुहैया करावे के चाही ,अगर बारिश चाहे सुखा से चाहे कावनो कारण से फसल नष्ट होखला पे ,फसल के बीमा चाहे अन्य स्रोत से उचित मुवाजा मिले के चाही अउर ऐकरे साथ साथ सिंचाई के उत्तम व्यवस्था ,समय प उचित दाम प उर्वरक बीज उपलब्ध करावे के चाही जेसे किसान कवनो परेशानी के सामना न करे पड़े । अपन देश कृषि प्रधान देश ह जब किसान खुश रहिए ता देश मजबूत होई ।

❑❑

❍ मदनपुर देवरीया (उ० प्र०)

खेती–बारी : बेद से लबेद तक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

भारत एगो खेती–बारी करेवाला देश हटे। भारत का आबादी के एगो बड़हन हिस्सा आपन गुजारा खेती से करेला। एही से भारत में खेती–बारी के भोजन का देवता के दरजा दिहल जाला।

साँच त ई बा कि भारत में रामायण आ महाभारत का पहिलहीं से खेती के काम हो रहल बा। लोग खेत जोतत रहे आ ओहमें अनाज, सब्जी आदि के खेती करत रहे। कुछ लोग खेती का संगे–संगे गाइयो पालत रहलन। देखल जाउ त आजुओ भारत के अधिकांश परब खेतिए बारी से जुड़ल बा।

संसार के पहिल ग्रंथ ऋग्वेद में भी खेती का काम के सम्मानजनक काम बतावल गइल बा। एहमें लोगन के किसान बने खातिर प्रेरित कइल गइल बा–

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः।

(ऋग्वेद– 34–13)

माने जुआ मत खेल, खेती कर अउर सम्मान का संगे धन पाव।

ऋग्वेद का पहिला मंडल में ई उल्लेख बा कि अश्विन देवता लोग राजा मनु के हर से खेत जोते सिखवले रहल। ऋग्वेद में एक जगह अपाला अपना पिता अत्रि से खेत का भरल–पूरल होखे खातिर प्रार्थना करत मिलतारी।

अथर्ववेद का एगो प्रसंग से जानकारी मिलता कि सबसे पहिले खेती–बारी के काम राजा पृथुवेण्य शुरू कइले। अथर्ववेद में त 6 8 आ 12 गो बैल के हल में जोतला के बरनन मिलत बा। यजुर्वेद में क्रम से पाँच प्रकार का चावल के बरनन मिलता– महाब्राहि, कृष्णव्रीहि, शुक्लव्रीही, आशुधान्य अउर हायन। एह से स्पष्ट हो जाता कि वैदिको काल में धान के खेती होत रहे।

कृषि पाराशर में त खेती के महत्व देखहीं लाएक बाटे–

कृषिर्धन्या कृषिर्मेध्या जन्तूनां जीवनं कृषिः ।

(कृषि पाराशर, श्लोक–7)

खेती सम्पत्ति आ मेधा प्रदान करेले आ खेतिए मानव जीवन के आधार बाटे।

जैन शास्त्र का अनुसार त श्रीराम से कई पीढ़ी पहिले भगवान ऋषभदेव खेती, शिल्प, असि (सैन्य शक्ति), मसि (मेहनत), वाणिज्य आ विद्या (शिक्षा) खातिर रोजी–रोटी के साधन के विशेष व्यवस्था कइले रहले। पहिले के लोग खाली प्रकृति पर निर्भर रहे। ई लोग फेंड़े के आपन भोजन अउर मए सुविधा के स्रोत मानत रहे। ऋषभदेव पहिल बेर खेती से अन्न आदि उपजावे सिखवले।

रामायण काल में राजा जनक खेत जोतत खा सीता माई के जमीन से मिलल रही। एही तरे महाभारत में बलराम जी के हलधर कहल जाला। उहाँ का जहें रहीं, एगो हर हमेशा हथियार का रूप में उहाँ का कान्ह पर रहत रहे। एह तरह से स्पष्ट बा कि ओहू घरी खेती होखत रहे।

सिंधु घाटी के सभ्यता एगो स्थापित सभ्यता रहे। एह सभ्यता के लोग खेती के काम के साथे–साथे गोपालन आ अउरी कई तरह के धंधा भी करत रहे। सिंधु घाटी का खुदाई में मिलल बैल के आकृति वाला मूर्ति के भगवान ऋषभनाथ से जोरिके देखल जाला।

तुलसीदास जी त रामचरितमानस आदि अपना ग्रंथन में जगह–जगह पर खेती–बारी का सूत्रन के चरचा कइले बाड़न। सीता स्वयंवर वाला धनुषभंग प्रसंग में जब राम जानकी के बहुत विकल देखलन त ओह घरी खेतिए बारी के परतोख गोस्वामी जी के सही लागल–

का बरषा सब कृषी सुखानें।

समय चुकें पुनि का पछितानें॥

अस जियँ जानि जानकी देखी।

प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी।।

माने जब सब फसल सुखिए जाई त बरखा कवना काम के ? समय बितला का बाद पछतावा के का फायदा ? मने मन एह बात के अनुभव करत राम जानकी का ओरि देखले आ उनका विशेष प्रेम के देख के उनुकर रोंआ खाड़ हो गइल।

खल वंदना प्रकरण में तुलसीदास जी खेती–बारी के जवन परतोख देतनी, ऊ देखे लाएक बा–

खल लोगन के की विशेषता बतावत उहाँका ओला से फसल के होखेवाला नुकसान के चरचा करतानी–

पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं।

जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं।

माने जइसे ओला खेती के नाश कइके अपनहूँ नष्ट हो जाला, ओइसहीं खल लोग बिना कवनो कारने दोसरा के काम बिगारे खातिर आपन शरीर नष्ट कर

लेले।

एही तरे रामचरितमानस का किष्किंधा कांड में उपमा का बहाने उपमेय का रूप में खेती–बारी का कुछ सूत्रन के सुंदरता पर एक नजर डालल जाउ–

महाबृष्टि चलि फूटि किआरीं।

जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं॥

कृषी निरावहिं चतुर किसाना।

जिमि बुध तजहिं मोह मद माना॥

माने भारी बरखा का चलते खेत के कियारी टूटि गइल बाड़ी सन, ठीक ओसहीं जइसे मेहरारू स्वतंत्र भइला पर बिगरि जाले। चतुर किसान खेत में ओइसहीं खर–पतवार निकालतारें आ घास–फूस बीछतारें, जइसे विद्वान लोग मोह, मद आ सम्मान के त्यागि देला।

बरसाते का बरनन में उहाँका अन्न से सुशोभित धरती के भी चित्रण करतानी–

ससि संपन्न सोह महि कैसी।

उपकारी के संपति जैसी॥

हरियर फसल से लहरात धरती अइसन सुन्नर लागतारी, जइसे परोपकारी आदमी के धन सुन्नर लागेला।

घाघ–भड्डरी

लबेद माने लोक में खेती–बारी खातिर सभसे लोकप्रिय व्यक्तित्व घाघ–भड्डरी के लउकेला।घाघ एगो खेती के विशेषज्ञ आ व्यावहारिक आदमी का रूप में प्रतिष्ठित बाड़े। उनुकर एक–एक दोहा उत्तर भारत के किसानन का कंठ पर चंदन नियन मिलेला। बैल खरीदे के होखे भा खेत जोते के, बीया बोवे के होखे भा कटनी करे के, घाघ के कहावत जइसे सभके माग. दर्शन करेले। घाघ का लोकोक्तियन के पइसार वाचिक रूप में जन–जन तक बाटे।

घाघ आ भड्डरी– दूनो जाना एके आदमी रहन कि अलग–अलग, एहमें बहुत मतभेद बाटे। कुछ ला. गन के मान्यता बा कि भड्डरी घाघ के पत्नी रही, कुछ लोग भड्डरी के कृषि के पूर्वानुमान करेवाला एगो अलग आदमी मानेले बाकिर एतना तय बा कि दूनो जाना अत्यंत कुशल, बुद्धिमान, नीतिमान अउर भविष्य के ज्ञान रखेवाला रहन। घाघ जहाँ खेती, नीति अउर स्वास्थ्य से जुड़ल कहावत खातिर विख्यात बाड़न, ओहिजे भड्डरी के रचना बरखा, ज्योतिष अउर आचार–विचार से संबंधित बाड़ी सन।

घाघ आ भड्डरी के खेती का ज्ञान के कुछ बानगी प्रस्तुत कइल जा रहल बा–

खेती

घाघ का अनुसार खेती सबसे बढ़िया पेशा हटे, बाकिर ऊ खेती, जवना में किसान परअसरा ना होके अपनहीं खेती करेला–

उत्तम खेती मध्यम बान,
निकृष्ट चाकरी भीख निदान।
खेती करै बनिज को धावै।
ऐसा डूबै थाह न पावै।।
उत्तम खेती जो हर गहा।
मध्यम खेती जो सँग रहा।।

खाद

घाघ खाद के खेती खातिर बहुत जरूरी मानतारे–

खाद पड़े तो खेत। नहीं तो कूड़ा रेत।।
गोबर राखी पाती सड़ै। फिर खेती में दाना पड़ै।।
सन के डंठल खेत छिटावै।
तिनते लाभ चौगुनो पावै।।
गोबर, मैला, नीम की खली।
या से खेती दुनी फली।।
वही किसानों में है पूरा।
जो छोड़ै हड्डी का चूरा।।

जुताई

घाघ गहिराह जुताई के सबसे बढ़िया जोत बतावतारे–

छोड़ै खाद जोत गहराई।
फिर खेती का मजा दिखाई।।

बाँध

पैदावार का पुष्ट, बढ़िया आ बढ़ंती खातिर ऊ बाँध के जरूरी मानतारे–

सौ की जोत पचासै जोतै, ऊँच के बाँधै बारी।
जो पचास का सौ न तुलै, देव घाघ को गारी।।

घाघ एगो ज्योतिषी का रूप में

कृषि वैज्ञानिक कवि घाघ अपना कहाउत में बरियार अनुभव आ गहिर संवेदना का चलते एगो दूरदर्शी ज्योतिषी का रूप में भी लउ. केले। घाघ का ओहू रूप के कुछ बानगी देखल जाउ–

तपै मृगशिरा जोय तो बरखा पूरन होय।

जो मृगशिरा नक्षत्र में गर्मी खूब परी त बूझीं कि ओह साल बरखा खूब निम्न होई।

आदि न बरसे आदरा, हस्त न बरसे निदान।
कहै घाघ सुनु घाघिनी, भये किसान–पिसान।।

आर्द्रा नक्षत्र का शुरुआत में आ हस्त नक्षत्र का अंत में जो बरखा ना होखे त अइसना में किसान पिसाके आटा हो जाला माने बरबाद हो जाला।

आसाढ़ी पूनो दिना, गाज बीज बरसन्त।
नासै लक्षण काल का, आनंद माने संत।।

आषाढ़ महीना का पूर्णिमा के जो आसमान में बादल गरजी, बिजुरी चमकी अउर बरखा हो

जाई त अकाल खतम हो जाई आ सज्जन लोग खुश हो जइहें।

उत्तर चमकै बीजली, पूरब बहै जु बाव।
घाघ कहै सुनु घाघिनी, बरधा भीतर लाव।।
जो उत्तर में बिजली गिरे आ पुरुब से हवा चलत हो खे त बैल के घर के भीतर बान्ह लेबे के चाहीं, काहेंकि जल्दिए बरखा होखी।

उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै।
बरखा होई भूइँ जल बुड़ै।।
माने जो गिरगिट फेंड़ पर उल्टा चढ़ जाई त बरखा एतना हो जाई कि धरती पर खाली पानिए पानी लउकी।

चमके पच्छिम उत्तर कोर।
तब जान्यो पानी है जोर।।
जब पच्छिम आ उत्तर कोना पर बिजली चमके तब ई बूझे के चाहीं कि बरखा तेज होई।

चैत मास दसमी खड़ा, जो कहुँ कोरा जाइ।
चौमासे भर बादला, भलीभाँति बरसाइ।।
जो चौत का अँजोर के दशमी पर आसमान में बादल ना होखे त मानल जाए के चाहीं कि एह साल चौदहवाँ महीना में नीमन बरखा होई।

जब बरखा चित्रा में होय। सगरी खेती जावै खोय।।
चित्रा नक्षत्र में बरखा बाँहइला पर पूरा फसल नष्ट हो जाला।

माघ में बादर लाल घिरै।
तब जान्यो साँचो पथरा परै।।
जो माघ महीना में लाल रंग के बादल लउकी त बनउरी (ओला) जरूर गिरी।

रोहनी बरसे मृग तपे, कुछ दिन आर्द्रा जाय।
कहे घाघ सुनु घाघिनी, स्वान भात नहिं खाय।।
जो रोहिनी नक्षत्र में बरखा होखे, मृगशिरा खूब तपे आ अदरा के कुछ दिन बाद बरखा होखे त उपज एतना नीमन होई कि कुकुरो भात खाके उबिया जाई।

सावन केरे प्रथम दिन, उवत न दीखै भान।
चार महीना बरसै पानी, याको है परमान।।
जो सावन का अन्हरिया में परिवा के आसमान बादल से भरल होखे आ सबेरे सूरज के दरसन ना होखे त निश्चय मानीं कि जरूर चार महीना तक भारी बरखा होई।

चढ़ते बरसे आदरा उतरत बरसे हस्त।
बीचे बरसे जो मघा चैन करे गिरहत्थ।।
जो आर्द्रा नक्षत्र शुरू में, हस्त नक्षत्र अंत में आ मघा नक्षत्र बीच में बरसे त गृहस्थ के आनंदे आनंद रही।

सर्व तपै जो रोहिनी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ की, उपजै सातो तूर।।
जो पूरा रोहिणी तपे, मूल भी पूरा तपे आ जेठ के परिवा भी तपे तब सातों प्रकार के अन्न पैदा होई।

शुक्रवार की बादरी, रही सनीचर छाय।
तो यों भाखै भड्डुरी, बिन बरसे ना जाए।।
जो शुक्रवार के बादल शनिवार तक छवले रहे त ऊ बादल बिना बरिसले ना जाई।

भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय।
ऊबड़ खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा होय।।
जो भादो अँजोर का छठ के अनुराधा नक्षत्र मिले त ऊबड़ो खाबड़ जमीन में ओह दिन बीया डलला से बहुत पैदावार होई।
सोम सुक्र सुरगुरु दिवस, पौष अमावस होय।
घर घर बजे बधावनो, दुखी न दीखै कोय।।
जो पूस का अमवसा के सोमवार, शुक्रवार भा बृहस्पतिवार पड़े त घर घर बधाई बाजी, केहूँ दुखी ना लउकी।

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिनी होय।
महँग नाज अरु स्वल्प जल, बिरला बिलसै कोय।।
जो सावन का अन्हार में दशमी तिथि के रोहिणी होखे तो समझ लेबे के चाहीं कि अनाज मंहगा होई, बरखा बहुत कम होई, अउर लोग साइते सुखी होइहें।

❑❑

❍ पिपरा सरकारी स्कूल के निकट, देवनगर,
पोल नं. 28, शाहपुर–पिपरा रोड,
पो. – मनोहरपुर कछुआरा
पटना – 800030
ई मेल : rmishravimal@gmail-com

जिनिगी गांव के : रोज जीए-मूवे वाला सुभाव के

भगवती प्रसाद द्विवेदी

बाबू! रउआं परदेसी हईं नू? जरूर देश भा सूबा के राजधानी में राउर दउलतखाना होई। बइठीं हमरा एह टुटही खटिया पर भा ओह मचान पर। कहीं, हम अपने के का सेवा करीं?——हम भला राउर का खातिरदारी कऽ सकेलीं साहेब! पहिले हाथ—मुंह धोईं आ लीहीं हई गुर के भेली,साथ में एक लोटा इनार के शीतल जल। जे हमरा दुआर—दरवाजा प आवेला, बस हम इहे सभका खातिर लेके हाथ जोड़िके हाजिर रहेलीं।
हं,अब रउआं इतमीनान से बतिआईं।

रउरा देह पर हई उज्जर धप्—धप् खादी के लिबास। कान्ह प लटकत सर्वोदयी झोरा।
हिप्पीकट कपार के बार। आंखि प ऐनक आ हाथ में कैमरा——! कहीं रउआं लेखक—वेखक भा पत्रकार—ओत्रकार त ना हईं?——
हऽ नू इहे बात! इहां रोज कवनो—ना—कवनो लेखक भा पत्रकार आवत रहेलन। रउओं त ओही लोग नियर हो खबि। खूब खोदि—खोदिके पूछी लोग कि हम कवना हालात से गुजरत बानीं, कि हमार अलचारी का बा,
कि हमरा लोग—लरिकन के पढ़ाई—लिखाई कइसन चलत बा, कि किसान आन्दोलन का बिसे में हमार का राय बा, कि किसानी से आमदनी दोगिना करे के जोजना के का भइल, कि हमनीं के परिवार कलेयान के नीति के अमल में काहें नइखीं जा ले आवत——वगैरह—वगैरह।

फेरु रउओं गांव के दह—पोखरा का ओरि चुंबक—अस खिंचात चलि जाइबि। हमरा बेटी—पतोहि के खिलखिलाहट आ हंसी—ठट्ठा के, उन्हनीं के गंवई गीतन के वीडियो बनाइबि, उन्हनीं के रूप के मादकता के, उन्हनीं के कुदरती खूबसूरती के अपना कैमरा में कैद करबि, खेतन में लहलहात हरियरी के फोटो खींचबि——अमराई में कुहुकत कोइलरि के बोली पर मंत्रमुग्ध होखबि। कबो उफनत बाढ़ के मनभावन छटा देखिके विहंसबि, त कबो अकाल—सुखार के चित्र उकेरबि। हमरा भुखाइल—पियासल, करिया—भुचेंग लांगट बेटा—नातिन के ठाढ़ कऽके फोटो खींचिके छापबि—देखऽ, तसवीर बोलऽतिया!

रजधानी में जाके रउआं एगो सनसनीखेज लेख तेयार करबि,जवन रउरा चमकत—दमकत फोटो का साथे कवनो बड़हन निठाह पत्र—पत्रिका में छपी। फेरु रउरा लेख प ढेर खानी चिट्ठी—चपाठी के अंबार लागि जाई आ नांव—जश का संगहीं दमगर मेहनताना गंठियाके रउआं 'आम के आम आ अंठिली के दाम' वाली कहाउत के चरितारथ करबि!

बिसवास करीं,साहेब! अब ले अनगिनत नामी—गिरामी विदवान लोग इहां आइल, हमनीं के खोज—खबर लिहल। हमनीं के लांगट—उघार जिनिगी के परत—दर—परत उतारिके धऽ दिहल लोग,बाकिर हमनीं के लांगट के लांगटे रहि गइलीं जा। अलबत्ता हमनीं के लंगटे ठाढ़ कऽके किछु लोग हमनीं के देह ढांपे खातिर, हमनीं के कांट नियर जिनिगी के खुशहाली से गमकावे खातिर सरकार से बहुत किछु मंजूर करावल आ हमनीं के नांव पर आपन पाकिट गरमावल। एने हमनीं के भरि गगरी लोर बहावत रहि गइलीं जा।
——हम मानत बानीं कि रउआं ओह लोगन में से ना हईं।अपने के आजु ले कबहीं केहू के शोषन ना कइनीं, ई त अउर नीमन बात बा।

नेता लोग के दिन अब लदि गइल, बाबू! वादा आ आश्वासन से पेट त ना भरल, गैस जरूर भरि गइल,जवना से ऊखी—बीखी लेले बा। कतना पचाईं जा ई कुल्हि! का रउरा लेखा पढ़ुवा लोग हमनीं गंवई खातिर,

हमरा गांव खातिर किछु ना करि सके? बाबू, सभका के त हमनीं के देखि लिहलीं जा। अब रउएं लोग हमनीं खातिर किछु करि सकींले, अइसन हमनीं के अटल बिसवास बा। हम रउरा नियर साहित्यकार से का उमेदि करीं, बाबू?
——एं? का कहत बानीं! रउआं हमनीं खातिर मउवत से जुझहूं बदे तेयार बानीं? तब त रउआं हमनीं के मसीहा भइनीं। असल में हमनीं के आजुओ मनई ना मानल जाला। गोरू हईं जा——गोरू——निरा माल—मवेशी।

हर—बैल का संगें रोज सबेर से गुधबेर ले हमनिएं के नू जोतानीं जा।दुपहरिया में खेसारी के सतुआ हमनीं के रबड़ी—अस चाटेनीं जा——ओही खेसारी के सतुआ, जवना के खइला से 'लंगड़ी' हो जाले। जहवां ई खेसारी बिकाला नू साहेब, उहवां लिखिके टांगल रहेला——'पशुखाद्य'। रात खानी माल—गोरू के खिआवल—पियावल, उन्हनिएं से बोलल—बतिआवल आ हुक्का गुड़गुड़ावत सूति गइल—इहे हमनीं के दिनचर्या ह।
——हमरा जिनिगी का बिसे में पूछत बानीं नू!
देखीं हमार जिनिगी! उमिर अबहीं चालीस के लछुमन—रेखा पार नइखे कइले। खइनी के लुफुत

दांतन के हाल बनाके धऽ देले बा!

बस, हई आगा के चारि गो दांत बांचल बा। देह के ठठरी, निकलल कूबर। छाती के हाड़ त रउआं गिनिओ सकेनीं। इहवां जवानी–बुढ़ौती एके संगें आ जाले,बाबू!

खांसी त जिनिगी के संघतिया बनि गइल बिया। कबहीं–कभार खूनो आवेला। किछु लोग कहेला कि टीबी ह। खैर, जवन होखो।

दवाई–बीरो थोड़हीं करवावे के बा! सुबहित खाए के त ठेकाने नइखे, दवा–बीरो का करवाई–खाक–पथल!

रउआं परिवारकलेयान के बात दोहरावत बानीं नू? हई देखीं, सोझा के तिनमहला वाला बाबू साहेब डागडर हउवन। बेमरिता से नोट अंइठे में कवनो कोर–कसर उठाइ ना धरसु। अपने आठ गो बेटा–बेटी जनमवले बाड़न। एगो तिवारिओ जी , जवन पराइवेट परेटिस करेलन, दरजनो संतान पएदा कइले बाड़न। बड़ लोगन का त रोपेया–पइसा के कवनो फिकिर बा ना, फेरु जतना जनमावसु, कमे बा। हमनीं के त जून प भोजनो मोहाल हो जाई, साहेब! अगर बेटी भइल, त बियाह कइसे होई? बस, दूगो बेटे बाड़न स–कलुआ आ मलुआ। दूनो मदरसा जाए का जगहा मजूरी करे जालन स। तब कहीं जाके रोटी–नून के जोगाड़ हो पावेला।

––बाढ़ में परु साल खूब तबाही भइल,बाबू!

सुने में आइल जे बड़–बड़ मंतरी लोग हेलिकॉप्टर से नजारा देखे आइल रहे। चिरई के जान जाइ, लइका के खेलवना!

ओइसे इहां हर साल कबो बाढ़,त कबो सुखार! एक ओरि कुंइया, दोसरा ओरि खाई। पटवन के बात मत पूछीं, साहेब!

बहुत पहिले जंगल के आगी–अस ई खबर पाटि गइल कि गांव में सरकार टिउबेल लगवावे जा रहल बिया। खम्भो गड़इले स,

बाकिर ओकरा बाद वाली कार्रवाई आजु ले ना भइल। किछु धनी–मानी लोग आपन–आपन पंपिंग सेट बइठवले बा, बाकिर ओह लोग के पानी देबे के रेट अइसन बा जे जतना के बबुआ ना, ओतना के झुनझुना परि जाला।

–––परेमभाव के बात रउआंपूछत त बानीं, बाकिर हमरा बतावे में शरम बुझात बा।

चोरी–चकारी, देखजरुई के बात मति पूछीं त बेहतर बा। इहां के लोग एक–दोसरा के जान के गांहक बनल बइठल बा। बाप–बेटा में कटुता, मरद–मेहरारू में कडुआहट,महतारी–बेटी में तना. तनी। बाबू,एगो कहनी मन परत बिया। पता ना, कब के सुनवले रहे। दूगो बैल रहलन स। दूनों में अतना निठाह मिताई रहे कि पूछीं मत। दूनों खेत से हांकल–पियासल लवटत रहलन स। राह में बड़ा जोर से दूनों के पियास लागल। बुझाइल जइसे परान अब निकलल,तब निकलल। तलहीं एगो गड़ही में थोरकी भर पानी लउकत। बाकिर पानी अतने रहे कि खाली एगो के पियास बुता सकत रहे। ऊ एक–दोसरा से निहोरा–पाती करे लगलन स–'पहिले तूं पी लऽ!' 'ना–ना,

पहिले तूं पी लऽ!'–आ एह तरी एक–दोसरा से गिड़गिड़ात दूनों दम तूरि दिहलन स। बाकिर आजु त स्थिति एकदम उलटा बा।

दूनों बैल आजुओ मूवत बाड़न स, बाकिर वजह ई बा कि ऊ एक–दोसरा से एह बात प भिड़ि जात बाड़न स जे 'पहिले हम पियबि', त 'पहिले हम पियबि!' आ इहे 'हम'

हमनीं के कबाड़ा करत बा।

बाबू, का अइसन ना हो सकत रहे कि दूनों बैल मिलि–जुलिके थोरकी–थोरकी पानी पीके एक–दोसरा के मउवत का मुंह में जाए से बचा लिहतन आ हंसी–खुशी से सुख–दुःख के संघतिया बनितन। काश,अइसन हो पाइत!

ओही बैलन नियर हमनीं के आपुस में जुझार कऽ रहल बानीं जा, बस एह बात पर कि खाली हमहीं खाइबि–पियबि,सुख से जीयबि, बाकिर दोसरा के जीयल मोहाल कऽ देबि। बाबू, का हम बड़–छोट एक–दोसरा के सुख–दुःख बांटिके ना जी सकेलीं जा? जदी हं, त ऊ दिन कब आई,साहेब–– ऊ दिन कब आई?

❑❑

❍ शकुन्तला भवन, सीताशरण लेन,
मीठापुर,पटना–800 001(बिहार)
चलभाषः 9304693031
ईमेलःdubeybhagwati123@gmail.com

लाल बिहारी लाल

देशवा के शान मोर किसान

देशवा के शान मोर किसान रे भइया
देशवा के शान मोर किसान......
देशवा के शान मोर किसान.....

देशवा के पेट भरे इनके करम से
चिंता फिकीर नइखे अब त हमके
चाहे दीन हीन किसान रे भइया
देशवा के शान मोर किसान.....

बीजवा से रोप–रोप फसल ई उगावेले
पाक जाला फसल त काट के लिआवेले
धन्नदृधान होला खेत खलिहान रे भइया
देशवा के शान मोर किसान.....

खाना के मांग सब पूरा ई करेले
काम करे में कवनों दिन ना धरेले
मेहनत बा इनकर महान रे भइया
देशवा के शानन मोर किसान.....

फसल आ फल से बढ़े, खूब हरियाली
इनके कीरपा से लाल बढ़े खुशहाली
लह–लह खेतवा में लहरेला धान रे भइया..
दुनिया में इनकर बा ई हे पहचान रे भइया
देशवा के शान मोर किसान.....

❑❑

❍ बदरपुर, नई दिल्ली

हीरालाल द्विवेदी 'लाल'

बरखा बहार

खेत खरिहनवाँ में सगरों सिवनवाँ में,
आइल बा बरखा बहार।
छहर छहर बरसेला पनियाँ के धार।

पवस महिनवाँ में बदराइल दिनवाँ में
बार–बार होखे अन्हार। छहर छहर बरसेला....
पुरवा बेयरिया में , अमवा के बरिया में
डरिया पे पपीहा पुकार। छहर छहर बरसेला....
धनवाँ में धनिया से बोललें किसनवाँ
झूलनी गढ़इबै उधार। छहर छहर बरसेला....
लटकि–लटकि डरिया पे कुहुंके कोयलिया
फाइलल बा धरती क प्यार। छहर छहर बरसेला....
बिरना बदरवा से सुगना सहेजइ
लेइजा सनेसवा हमार। छहर छहर बरसेला....
अँखियन के कजरा से तोहके रँगइबइ
दइ दइबै अंसुवन के धार। छहर छहर बरसेला....
पच्छुम जो जइहा त सजना से कइहा
कब लइहै डोलिया कंहार। छहर छहर बरसेला....
रात अन्हियरिया में कारी बदरिया में
डरवावै झेंगुरा झँनकार। छहर छहर बरसेला....
नाचि नाचि मोर मोर मनवा नचावै
हूँक उठै पुरुवा बयार। छहर छहर बरसेला....
पावस घटा के अटा चढ़ि निहारिला
सहि सहि बुनियाँ के मार। छहर छहर बरसेला....
'लाल' लाल हथियन से धरती रंगाइल
सुख गइल मेंहदी हमार। छहर छहर बरसेला....

❑❑

❍ बरहुआ, चकिया, चंदौली

रहिला मटर गदराय जब खेतवा में बहरी बगइचवा में होरहा भुजाला।
हरियर धनियाँ नमक मरिचइवा के रस क सवाद नाहि कहले कहाला।
पहुना क पुरिया क मनवा बहल जाला गुड़वा गरम कोल्हुवाड़ में भेंटाला।
आवा चला हमरे देहतवा के ओर तनी जहवाँ सहेहियाँ सरग मुसुकाला।

– रामजियावन दास 'बावला'

जैविक खेती–एगो विचार

ज्योति द्विवेदी

दुनियाँ के बढ़त जनसंख्या एगो गम्हीराह समस्या बाटे, जवना के खातिर ओही अनुपात में भोजन के जरूरत के पूरा करे खातिर मनई तरह–तरह रासायनिक खाद आ जहरीला कीटनासकन के परयोग कर रहल बा। जवना का चलते प्रकृति के चक्र प्रभावित हो रहल बाटे। एही का चलते जमीनो खराब हो रहल बा आ वातावरणों खराब हो रहल बाटे आ संगही मनईन के स्वास्थ्य गिर रहल बाटे।

पहिले का जमाने में मनई स्वास्थ्य के हिसाब से आ प्राकृतिक वातावरण का हिसाब के खेती करत रहे। जवना से प्रकृति के चक्र नीमन से चलत रहे। मने जल, जमीन, हवा आ वातावरण के कवनो नो. कसान ना होत रहे। अपना देश में पहिलहीं से खेती का संगे–संगे गोरू–बछरू के पालल जात रहे। जवना बाति के हमनी के धरम ग्रंथो पोढ़ करि रहल बाटे सन। गोपाल आ हलधर नाँव से कुछ अइसने बुझा रहल बा। ई दूनों लोग भाई रहलें आ अजुवों अपना समाज में पूजल जालें। ई बाति से साफ–सोझा लउकत बाटे कि खेती अउर गऊ पालन संगही होत आ रहल बाटे। बदलत समय का संगे गऊ पालन कम हो चुकल बाटे आ खेती में रासायनिक खाद आ कीटनासकन के खूब उपयोग हो रहल बाटे। जवना से प्रकृति के चक्र त खराब होइये रहल बा, संगही मनई जात के स्वास्थ्य दिनो–दिन बिगरल जा रहल बा।एकरा बदले अगर जैविक खाद आ दवाइयन के परयोग करिके माने जैविक खेती से उपजो बढ़ावल जा सकत बाटे आ वातावरणों के नीमन राखल जा सकत बाटे।

अपना देस में अजुवो गाँवन के अर्थ बेवस्था खेती पर आसरित बाटे। किसानन के आय के साधन खेती बाटे। बढ़त जनसंख्या का चलते जवन रासायनिक खाद आ कीटनासक के परयोग से उपजल अनाजों दूषित हो रहल बा आ जल,जमीन,हवा आ वा. तावरण बिखिया रहल बा। एह से मनई समाज के बचावे आ ओकरा जरूरत के पूरा करे खातिर जैविक खेती के सरकार बढ़ावा दे रहल बाटे।

जैविक खेती से लाभ–

1 किसान के दीठी से – जमीन के उपजाऊ क्षमता, कम सिचाई के जरूरत,कम लागत, ढेर उत्पादन
2 माटी के दीठी से – जमीन के गुनवत्ता में बढ़न्ति, नमी रोके के क्षमता में बढ़न्ति
3 पर्यावरण के दीठी से– जमीन के जलस्तर में बढ़न्ति, वातावरण में सुधार

रासायनिक खेती से जैविक खेती में कम पैदावार ना होखस। मने कम लागत से ओतने उपज, मने किसान के आय में बढ़न्ति। बारीस के अधार पर जहवाँ खेती हो रहल बा, उहाँ खातिर जैविक खेती सभेले नीमन आ कारगर बाटे।सरकारो एही सोच के लेके जैविक खेती करे खातिर किसान लोगन के बता रहल बा आ सहजोग कर रहल बा।

❑❑

❍ गाजियाबाद (उ0 प्र0)

जात अषढ़वा रिमझिम बरसत,
धरती बा हरियाइल।
धान क बेहन संडा रोपत,
बजरा चरी छिंटाइल।
कहीं कुदेला मेझुका पीयर,
दहिबेचनी चलि आइल।
चिउंटा–चिंयूटी रेला लमहर,
केंचुआ रेंगि देखाइल।
कउवा भींजे चिरई घोंसले,
पोखरी ताल भराइल।
मछरी उछरें रेउवां झनकत,
चूअत आम रसाइल।
भगजोगनी क जगमग जोती,
तरई देखि लजाइल।
कीट फतिंगा आछर–गूछर,
दीया बरत तोपाइल।

❑❑

• **राकेश कुमार पाण्डेय**
हुरमुजपुर,सादात
गाजीपुर,उत्तर प्रदेश

आजु गउवाँ क खेती सपना भइल

डॉ सच्चिदानंद द्विवेदी

हमार पुरखा पुरनियाँ आजु से चार सै बरीस पहिले घनघोर जंगल में बनारस स्टेट के सासन में चकिया के पुरुब में 2 कोस आय के बस गइलें। गाँव के नाँव बरहुआं रखायल। चंद्रभान दुबे एक घर, कुछ कोइरी आ चमार गोलवा पहाड़ के नीचे उत्तर देउरी पूरुब पटपहर ओही के बगल में झगरउवाँ पोखरी के दखिखन पीपर के पेंड़ के बगल में घर बनावल लोग।बाकिर कुछ दिन बाद उहाँ से उठ के आउर उत्तर डीह बनाय के घर बनवलें लोग आ उहें बस गइलन जा।उहाँ बजरा, रहर, जोन्हरा आ गेहूँ थोड़ बहुत इहे खेती रहल। चकिया से पूरुब कर्मनासा आ दख्खिन चंद्रप्रभा नदी बहेले। बरहुआं कर्मनासा नदी के पूरुब में हव। चकिया आवे बदे सभेके जंगल में होके नदी डांकय के परत रहे। गोलवा पहाड़ आ देवरी पहाड़ के बीच में राजा साहब सिकार खेलय बदे कोठी बनववले रहलें, जवन अजुवो हव।

खेती किसानी के बात पर लिखय बदे हमार भतीजा जयशंकर, जे भोजपुरी पत्रिका ' भोजपुरी साहित्य सरिता के संपादक हउवन, हमसे कहलें। हम गाँव पर आम खाये के चक्कर में 20 मई से जमल रहलीं। लिखय क मूड बनतय नाही बाय, बनतो बाय त बिजली के रोशनी क चक्कर, पूरा गरमी बेना क बयार लेत पसीना पोंछत बीतल हव। जब गाँव में चरचा कइलीं कि खेती किसानी पर लेख लिखय के हव त फुस्सन कहनय कि लिखबा का ? हर क जमाना खतम,बस धान, गेहूँ, सिंघाड़ा एही पर लिख दा ।''

आजु से 40 बरीस पहिले गाँव में खेती देखात रहल, अब ईंटा पकावय वाली चिमनी कुल चउपट क देहलस। हमरय घरे कुल 6 बैला,चार गाय, दू भईंस, पड़वा, पड़िया, बछवा, बछिया मिलाके बाईस ठे रहलें । आ रोज जंगल में जाय के लतीफसाह के पजरे बेदहा तक हमही हाँक के आईं। साँझ के चर के कुल पस आय जाँय। अब जंगल विभाग रोक लगा देहले हव। दूध दही मंट्ठा सभही के घरे रहल, सब पस रखले रहल।

गाँव के कुछ विशेष बातः

पहिला खेती शुरू होखे से पहिले असाढ़ में जब पानी न बरसय त गाँव भर से हरि भाई आ मनुजी चन्दा वसूलें, घुघुरी बतासा के भोग तइयार होखे अउर हवन क समान लेके सब बिरादरी क लोग गोलवा पहाड़ पर जाय के उहवें हवन होखे,परसादी बंटय, मुखई दादा आपन नगाड़ा लेके जाँय, लगय बजावय, नगाड़ा बजतय बादर आवय लगय, पानी बरसय लगय, सभ भींजत नीचे आवय। दूसर राजा साहब के कोठी के आगे बलुआ पोखरी अउर झगरउवाँ क माटी पूरा गाँव ले आवय, ओके रखल जाय, मेहरारून के बार मीसय में काम आवय।

असाढ़ क खेती शुरू हो जाय, अउर धान क बीया पड़य कोई ठरा कोई देश में डालयअउर रोपाय। पहिले पानी कम रहल । लोग बजरा, जोन्हरा,उरदी, ककरी, खीरा, खरबूजा,तरोई , लउवा, सूरन , हरदी कुल बोय दे,कुआर में सब कटाय,खनाय। सनइयो क खेती होय। सनई के फूल क साग,करेम क साग ई सब खाय । आलू, पियाज , कोहंड़ उरी के तरकारी क आनंद कुछ आउर रहय। ऊख चइत में बोआय, गरमी में लोग मोट बरहा से जियावय, तब जाय के गुड़ खाये के मिलय। कोई केतनों गरीब रहय,सब खेती किसानी से जुड़ल रहल। जंगल में गाय गोरू चरावय में झूरी दादा के कहनी क आनंद कुछ अउरय रहय। टीबी मोबाइल क जमाना ना रहल, लोग गरमी में बसवाड़ी में या पीपर के छांह में बइठ के शिव पुराण अउर सुख सागर के कथा सुनय– सुनावय। जहवाँ लोग मड़ई देखय उहाँ लउवा बोय दे, अउर जाड़ा भर खूब खाय अउर दूसरो के दे। हमहन के लइकई में जब रहिला, सरसो, गोहूँ बोआये लगय अउर धान कटय लगय, ओह समय जंगल में मकोह खूब फरय, हमहन खूबखाई आनंद लेहीं जा। माघ–फागुन में कोल्हुवाड़ शुरू हो जाय, लोग आलू खन के कोल्हुवाड़ के राखी में तोप के भूंजय,गुड़ मनमनता रहय, कराहा उतरले पर सबके मिलय। एक मन के करहा क ऊख पेरय में रात भर के समय लगय, फिर छ घंटा आग पर रखले पर गुड़ तइयार होय,ई किसानन के कठिन जिनगी रहल। फागुन में होरहा नून मरचा के संगे खवायआऊर ऊखी के रस पियाय, दूध पियय। अब खेती क स्थिति कुछ

अउरय हव, केहू ऊख के खेती ना करत, बस धान आ गोहूँ क खेती हो रहल हव । घनश्याम तरकारी क हाल बतावत कहलन कि 'कुल दवाई क सुई लगाय के रात भर में पचास गराम के भतिया एक किलो क कय देलन स, कीड़ा मारय क दवाई रोज फेकिहें, मंडी मे सबेरही पहुंचाय दीहय,खाये वाला मरय चाहे बेमार होय, फायदा से मतलब हव।''

अब कोई खेती ना कयल चाहत हव। पहिले क लोग घर के बनावल चीजन के खाये में बिसवास राखत रहल। आम क अचार घर घर में डलात रहल । अब नवकी पीढ़ी के एह कुल के विधि विधान पते नइखे। एक दिन हम अपने गाँव के एगो बूढ़ बहिन से आम क अचार बनावय के बिसे में पुछली, त उ बतवली कि ''चार पसेरी आम के अचार बदे एक पउवा सउंफ,एक पउवा मंगरइला,एक पउवा जवाइन, 400 गराम मेथी के अधभुंज करय के पड़ेला, डेढ़ सेर सरसो,एक पउवा सूखल मिरचा आ अढ़ाई सेर तेल के जरूरत पड़ेला।''एह नुक्सा से बड़ा बढ़िया अचार बनयला।

खेती में हाइब्रिड बीया क परयोग जबसे शुरू भयल हव सारा सवादय खतम हो गयल हव। धनिया पर धनिया के सेंट डाल के कुल बेंचत हउवन। हमरे समझ से अब खेती क सपनय देखाई। जब फायदा रही तबय खेती लोग करिहें। धान गोहूँ के खेती में लोगन के पोसात नइखे।सरकार से लोगन के मुफत में अनाज मिल जात बाय। नरेगा, मनरेगा में लोगन के काम मिलय से खेती करय वाले मजदूरन के बहुते कमी हो गयल हौ। खरचा बढ़ जाये से किसान अउर गरीब हो गइलन। उनसे त सुखी मजूरा बाड़न। मजूरा आज मोटर साइकिल से काम पर जात बाड़न । ओहनी के सरकार से खाये के मुफुत क अनाज आ मुफुत क घर दे रहल बा।किसानन के अइसन कुछ नइखे मिलत। बिजली, पानी, खाद, डीजल के खरचा से कम पैदावार हो रहल बा। कुल मिलाय के कहल जाव त ' गाँव क खेती चउपट हो गयल हव।'

एह आलेख के तइयार करय में अंबेस कुमार द्विवेदी (किसान), घनश्याम कुशवाहा (किसान) आ सरस्वती देवी के बातिन से बहुते सहजोग मिलल। सभके धन्यवाद ।

❑❑

❍ भू पू पोस्ट डाक्टो० फेलो (हिन्दी विभाग)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. राम बचन यादव

दुख के चादर हरदम ओढ़ेला किसनवा

धरती के माई जाने फसल के भाई जाने
खेतियो से नाता जोड़ि लेवेला किसनवा

कबहूँ अकाल पड़े खेती सब डूबि जरे
तबो ना निरास कबहूँ होखेला किसनवा

तब जमींदरवन के अब सरकरवन के
पूंजीपतियन के मारि झेलेला किसनवा

हक अधिकार खातिर कभौं मरजाद खातिर
सिनवा पे गोली खाई लेवेला किसनवा

गाय भंइस के दूध मिले नाहीं एक बूंद
बिरवन के दुधवा पिआवेला किसनवा

जाड़ा गरमी बरसा के काटि देला फरसा से
दादा होरी हलकू के वारिस हो किसनवा

बिटिया के ब्याह करे करज में डूबि मरे
दुख के चादर हरदम ओढ़ेला किसनवा

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय इंटर कालेज
चकिया, चंदौली

केशव मोहन पाण्डेय

जिनगी रोटी ना हऽ

जिनगी
खाली तइयार रोटी ना हऽ
पानी हऽ
पिसान हऽ
रात के अन्हरिया पर
टहकत बिहान हऽ
कुदारी के बेंट पर
ठेहा लागल हाथ हऽ
कोड़ झोर कइला पर
सगरो बनत बात हऽ
बैलन के जोत हऽ
हर हऽ
पालो हऽ
इहे रीत चलेला
अथक सालो–सालो हऽ
जे दुर्गुण के चेखुर
नोच–नोच फेंकेला
शीत–घाम–बरखा में
अपना देहिया के सेंकेला
ज्ञान–संस्कार के
खाद–पानी डालेला
निरख–निरख गेंहुआ के
जान के जोगे पालेला
बनरी आ मोंथा के
जामहूँ ना देला जे
नेह के पानी सींच–सींच
गलावे सगरो ढेला जे
ऊहे मधु–मिसरी
रोटिया में पावेला
इस्सर –दलिद्दर के
सबके ऊ भावेला
ऊहे बुझेला असली
मन–से–मन के भाषा का,
ऊहे बुझेला असल में
जिनगी के परिभाषा का?
त खेतवा बचाईं,
बचाईं किसान के
नाहीं तऽ,
हहरे के परीऽ सबके
एक चिटुकी पिसान के।।

❑❑

❍ राजापुर, नई दिल्ली–59

डॉ बलभद्र

सृजन के ताप बटोरत

कट गइल बा गेहुम
जौ, मसुरी,मटर, खेसारी
खेत भ गइलें स खाली
गेहुम के खूँटी चमकत बा घाम में
हार्वेस्टर से कटल कुछ खेतन में
अधखँड़ कुछ डाँठ कुछ खाड़
कुछ फसकल, फुसकल
कुछ पहियन से पिचटाइल
कुछ गाय,कुछ भइंस, कुछ भेंड–बकरी
सूखल– पाखल घास आ खूँटी–खाँटी में
तोख तलासत

फसिल जब लहलहात रहे
कतना समेटाइलत–संगोराइल लागत रहे बघार
आ आज अतना बिखरल–बहकल
आर–मेंड़, ढेला–ढमानी–––
करहा–मोहानी, बिल–दरार
सब बाड़न एकदम उघार
एकरो त एगो सोभा बाटे आपन

रब्बी कटला के बाद के खेत हवें स
बाबा के बोली में 'सुस्तात '

अइसहूँ भला सुस्ताला केहू!
हॅं जी , हॅं
रब्बी कटला के बाद के खेत हवे स
सृजन के ताप बटोरत

❑❑

❍ गिरिडीह कालेज गिरिडीह
झारखंड

भारतीय किसान

डॉ राजेश कुमार 'माँझी'

खेत खलिहानवा में खटे किसानवा,
जेठ दुपहरिया में जरावे तनवा
सत्ता–आसीन जेकर रखे ना ध्यान,
भारत में आज मजबूर बा किसान.

चिड़इन से पहिले उठ जाला भोरे
कान्हा पे कुदाल लेके खेते जाला कोरे
बरखा में भींगी भींगी रोपेला धान
भारत में आज .....

अंबर से पानी जब समय से ना बरसे
कुहुके किसान मन बहुते ही तरसे
चिंता से भइल ओकर निंदिया जियान
भारत में आज .....

कर्जा चढ़ल माथे सूझे ना कवनो बात
सुबके सिसके रोवे किसान दिन–रात
भूखे पेट भइल ओकर देहिया बेजान
भारत में आज .....

गिरीबी किसान के बहुते रोआवत बा
सूझे ना रास्ता त जान ऊ गंवावत बा
होई कहिया ओकरा जीवन में बिहान
भारत में आज .....

❑❑

❍ प्रभारी–प्रशासनिक अनुभाग एवं हिंदी अधिकारी जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली–110025
9718740789

भोजपुरी के मान बढ़ाईं, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनीं
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं या लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

लालबहादुर चौरसिया 'लाल'

महिनका धान

मोटका चाउर खाय खाय के,
तउला यस पेटवा बहिरायल,
तबै महिनका धान रोपायल।।
तबै महिनका धान रोपायल।।

काका कहलैं सुना लखेदन,
कयि भइला आपन वाली,
अबहिन ले मेहरारू तोहरी,
पहिरै ले टुटही बाली।

बेटा नया जमाना ई हौ,
एकर तनी खियाल करा,
खेती में तकनीक लगावा,
जनि अइसे दिन–रात मरा।

सुनि के काका कै ई बतिया,
मनवा में बुल्ला उपरायल।
तबै महिनका धान रोपायल।।
तबै महिनका धान रोपायल।।

मिनहा कइलीं परों साल पर,
हमारी बतिया ना मनला,
मोटका धान कै बेहन बाबू,
अपुवाली कयिके डरला,
पैदावार त खूब भइल पर,
लेवी बनियां ना पुछलैं।

सगरो मोटका धनवां बाबू,
रेन तेन होइके बिकलैं।
काका कै उपदेश 'लाल' हे,
माथा में हमरे अउँजायल।

तबै महिनका धान रोपायल।।
तबै महिनका धान रोपायल।।

❑❑

❍ आजमगढ़, उ0 प्र0

भोजपुरी के किसानी कविता

डा. सुनील कुमार पाठक

भोजपुरी के किसानी कविता पर लिखे के शुरुआत कहाँ से होखी–ई तय कइल बहुत कठिन नइखे।भोजपुरी के आदिकवि जब कबीर के मान लिहल गइल बा त उनकर सबसे प्रचलित पाँति के धेयान राखलो जरूरी बा ।ऊ लिखले बाड़ें–"मसि कागद छूयो नहीं कलम गह्यो नहिं हाथ।" मतलब भोजपुरी के आदिकवि कलमजीवी ना रहलें।ऊ कुदालजीवी रहलें।हसुआ–हथौड़ाजीवी रहल. ।झीनी–झीनी चदरिया बीनेवाला बुनकर रहलें।मे. हनत आ श्रमे उनकर पूँजी रहे जेकरा जरिये ऊ आपन जीवन–बसर करत रहलें। भोजपुरी में रोपनी–सोहनी के लोकगीतन से लेके आउरो सब संस्कार गीतन में श्रम के महिमा के बखान बा।रोपनी गीतन में जवना लोक संस्कृति के बखान बा ओह में जीवन रस के साथे –साथे एकरा संघर्ष आ उद्वेलनो के कम चित्रण नइखे।एगो उदाहरण देखे लायेक बा–

"बाबा लाये मोर गवनवा बलम लरिका
सोने के थारी में जेवना परोसलो
जेवनो ना जेवे बहरि खरिका।"

बेमेल बिबाह के चित्रण मैथिल –कोकिल विद्यापतियो जी के लेखनी से मिलेला–"पिया मोरे बालक मैं तरुनी"।दोसरका तरफ भोजपुरी कवि भिखारी ठाकुर के त मशहूर गीते बा जवना में बर के बदरूपई के चित्रण खुल के भइल बा–

"चलनी के चालल दुलहा सूप के फटकारल हे
दियका के लागल बर दुआरे बाजा बाजल हे।"

भोजपुरी रोपनी गीत बेमेल बिआह के एह समस्या के बहुत पहिले अपना पाट में भरि लेले रहे जवन एकरा किसानी जीवन से जुड़ल रहे।

'कवितावली' में जब किसानी जीवन के हलकानि के चित्र तुलसी बाबा रखलें ते ओमें उत्तरभारत खास करके भोजपुरी–अवधी –ब्रजी क्षेत्र के गाँवने के मनई के सामाजिक–आर्थिक स्थितियन के बात सामने आइल–

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच –बस
कहैं एक एकन सों' "कहाँ जाई का करी?"

किसानी ऊहू बेरा जीवन जीये के अइसन माध्यम ना रहे जवना से सुख–शान्ति आ हर तरे के सुविधा भेंटा जात होखे।बेकारी ,बेबसी, बेरोजगारी ऊहू बेरा के जन–जीवन के तबाह कर देले रहे।

भोजपुरी क्षेत्र के संतकवि रैदास,पलटू साहब, गरीब दास,दरिया साहब आदि के रचनन में किसानी जीवन के महिमा के साथे–साथे एकरा सिकस्ती, तंगी आ तबाही के उरेहाई आँख खोले वाली बिया–

"साधो ऐसी खेती करी,जासे काल अकाल न मरई।
रसना का हल बैल मन पवना बिरह भोम तहँ बाई।"
(दरिया साहब)

अन्न ही माता अन्न ही पिता
अन्न ही मेटत है सब बिथा
अन्न ही प्राण– पुरुष आधारा
अन्न से खुले ब्रह्म–द्वारा।"
(संत गरीब दास)

संत पलटू साहब पाँच–पचीस लगवला के बादो खेती के पीड़ा से भली–भाँति परिचित रहल. ।राजा–पटवारी के मार से खेतिहर पर कइसन–कइसन आफत–बिपत आ गिरत रहे ओसे पलटू साहब पूरा तरे वाकिफ रहलें–

"आग लगो वाहि देस में जहँवाँ राजा चोर
जहँवाँ राजा चोर प्रजा कैसे सुख पावै
पाँच पचीस लगाय रैन–दिन सदा मुसावै ।"
(पलटू साहब)

लोकभाषा पंजाबी के प्रसिद्ध कवि गुरु नानक देव जेकर भोजपुरी जन–मानस पर अमिट छाप बा, उहाँ के किसानी पद बा–

"इहु तनु धरती कर्मा करो
सलिल आपउ सारिंगपाणी
मनुष्य किरसाणु हरि रिदै जंमाइलै
इस पावसि पदक निरबाणी ।"
(गुरु नानक देव)

–यानी अपना मन के किसान बनाके शरीर रूपी खेत में बीज रूपी कर्म बोके भक्तिभाव के जल से सींचला पर हियरा के भूमि में हरि–भाव के फसल उगी। किसानी के एह रूपक के जरिए गुरु नानक देव ज्ञान के बातन के आम जन मानस पइठावे में कामयाब भइल रहनीं।

रैदास के बेगमपुरो में श्रम आधारित व्यवस्था के प्रधानता रहे–

"स्रम को ईसर जानि के जउ पूजै दिन –रैन
रविदास तिन्हहिं संसार मंह ,
सदा मिलै सुख–चैन।।"

भोजपुरी के किसानी कविता पर बात करत 1753 संवत के जनमल कवि घाघ के त

कृषक जीवन के महाकविये मानल जाला।कन्नौज के एह कवि के कहावतन में खेती–किसानी के पूरा विज्ञान भरल बा।भोजपुरी क्षेत्र में घाघ के महान कृषि वैज्ञानिक मानल जाला।उनकर कविताई जवन कुछ संग्रहन में मिलेला भा 'घाघ आ भड्डरी' में संकलित बा ओह से कृषि विद्या प घाघ के मजबूत पकड़ पर खल जा सकत बा–

1– '' उत्तम खेती जो हर गहा।
मध्यम खेती जो संग रहा।।
जो पूछेसि हरवाहा कहाँ ।
बीज बूड़िगे तिनके तहाँ ।।

–मतलब साफ कि जे खुदे हरवाही करी ओकरे खेती उत्तम होई।

2– ''माघ मघारे जेठ में जारे
भादो सारे सेकर मेहरी डेहरी पारे।

–यानी गेहूँ के खेत माघ में हर जोताये के चाहीं जेठ में तपे देबे के चाहीं ताकि घास जर जाव आ भादो में जोत के सड़ावे के चाहीं, तब जाके मेहरी का डेहरी भरे के मौका हाथ लागी।

3–''सावन मास बहे पुरवाई,बैला बेच कीनीं धेनुगाई।''

–माने सावन में पुरवाई सजोर बही त बरखा ना होई आ बैल बेच के गाये खरीद लेबे के पड़ी।

–एह तरे के अनगिनत कहावत भोजपुरी क्षेत्र के आजो थाती बा।

एगो किसान कवि डाक नाँव के रहल बाड़ें।'डाक–वचनावली' में उनकर रचना संकलित बाड़ी सन।एगो उदाहरण बा–

''तीतिर पंख मेघा उड़े ओ विधवा मुसुकाय।
कहे डाक सुनु डाकिनी ऊ बरसे ई जाय।।''

मानें कि तीतिर के चितकबरा पंख लेखाँ मेघ उड़त आसमान में दिखे त ऊ बे बरिसले ना रही आ कवनो विधवा मुस्कुरात दिखे त बिना कवनो दोसरा मरद संगे फँसले आ भगले ऊ ना मानी।

आजादी के लड़ाई आ किसानी कविता

किसानी कविता पर विचार करते अब हम स्वतंत्रताकालीन ओह रचनन पर विचार करे के चाहब जवनन में किसानन के सीधा भूमिका रहे।किसानन के वीरता, त्याग ,साहस ,संघर्ष आ संकल्प के भोजपुरी कविता में बड़ी गंभीरता आ व्यापक रूप से उकेरल गइल बा।बलिया के चितबड़ा गाँव के क्रांतिकारी कवि प्रसिद्ध नारायण सिंह के कविता में 1857 के विद्रोह में किसानन के उबाल के चित्रण बा –

''जब संतावनि के रारि भइलि
बीरन के बीर पुकार भइलि
बलिया के मंगल पांडेय के
बलिबेदी से ललकार भइलि
'खउलल तब खून किसानन के
जागल जब जोश जवानन के
छक्का छूटल अंग्रेजन के
गोरे गोरे कप्तानन के।''

आजादी के आन्दोलन के दौरान ओह किसान –संघर्ष के नइखे भुलाइल जा सकत जवना में मोहनदास करमचंद गाँधी के नाँव सीधे जुड़ल रहे आ ओके इतिहास में 'चम्पारण सत्याग्रह आंदोलन' नाम मिलल। 1917 के एह ' चंपारण आन्दोलन' में एगो निपट भोजपुरिहा किसान राजकुमार शुक्ल जी आपन पाती भेज के गाँधी जी के बोलावे में सफल रहनीं–

'' किस्सा सुनते हो रोज औरों केध्आज मेरी भी दास्तान सुनो।'' एक बिगहा जमीन में तीन कट्ठा में नील के खेती करे के मजबूरी वाला 'तीनकठिया कानून' के खिलाफ भोजपुरी कवि शिवशरण पाठक के कविता(सन 1900के आसपास) के आधुनिक भोजपुरी के पहिल किसानी कविता मानल जा सकत बा–

''राम नाम भइल भोर गाँव लिलहा के भइले
चँवर दहल सब धान गोंएड़े लील बोअइले ।
भइ भैल आमील के राज प्रजा सब भइले दुखी
मिल–जुल लूटे गाँव गुमस्ता हो पटवारी सुखी ।
असामी नाँव पटवारी लिखे गुमस्ता बतलावे
सुजावल जी जपत करसु, साहेब मारन धावे ।
थोरका जोते बहुत हेंगयावे तेपर ढेला थुरवावे
कातिक में तइयार करावे फागुन में बोअवावे ।
जइसे लील दुपत्ता होखे वैसे लगावे सोहनी
मोरहन काटत थोर दुख पावे दोषी के दुख दोबरी।''

–कुल 22 पंक्तियन के एह भोजपुरी कविता में किसानी जीवन के पीड़ा के बड़ा बारीकी से अभिव्यंजित कइल गइल बा।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपादन में निकले वाली सरस्वती पत्रिका के सितम्बर 1914 के अंक में छपल भोजपुरी कवि हीरा डोम के कविता 'अछूत की शिकायत''में किसानी जीवन के तकलीफ के अभिव्यक्ति काफी मार्मिक बा–

''हमनीं के रात दिन मेहनत करीलेजा
दूइगो रुपयवा दरमाहा में पाइबि ।
ठाकुरे के सुखसेत घर में सुतल बानीं
हमनीं के जोति– जोति खेतिया कमाइबि।''

हीरा डोम के एही कविता से भोजपुरी –हिन्दी दलित कविता के शुरुआत मानल जाला।एह कविता में किसानी जीवन के जवन रूप उभरल बा ऊ देख के ई कहल जा सकत बा कि ओही बेरा सामाजिक बराबरी आ शोषण के प्रतिकार के स्वर भोजपुरी गरीब–गुरबा में जाग उठल रहे।1917 से 1947 के बीच भोजपुरी आ हिन्दी पट्टी में चलल

'चम्पारण सत्याग्रह आंदोलन','बिजोलिया किसान सत्याग्रह','खेड़ा किसान संघर्ष'आदि आन्दोलनन के किसानी कविता पर व्यापक प्रभाव रहल बा।

बिहार किसान आन्दोलन के दौरान किसान नेता यदुनंदन शर्मा के संपादन में गया जिला किसान सभा द्वारा 1938 में 'चिनगारी' नाम के एगो कविता– पुस्तिका छपल रहे जवना से ओह बेरा के प्रतिबंधित किसान कविता के प्रतिरोधी चरित्र के झलक मिलत बा।'धनमा तोहर लूटे लूटेरा','गाँवे –गाँवे करे भैया करेसंगठनवा','कुरीतिया कैलख हैरान रे' जइसन प्रचलित प्रतिनिधि गीत आम जनता के बीच धूम मचवले रहले सन।

जौनपुर जिला के इजरी गाँव के जनकवि राजकुमार वैद्य जी बहुते किसान कविता लिखले रहलें जवन जब्त कर लिहल गइल रहे।वैद्य जी का अपना मारक काव्य–रचना खातिर जेलो जाये के पड़ल रहे।उनकरा कविता के बानगी देखल जा सकत बा–

''सबसे किसान हो अभागा हमरा देसवा में
दिन भर बेगारी रहै लाखन ठै गारी सहैं
तबहूँ ना लागै इन्हें खाये के ठेकान हो
अभागा हमरे देसवा में।''

भोजपुरी कविता के इतिहास में दू गो कवितन के कालजयी रचना कहाये के गौरव हासिल बा।कालजयी रचना ऊहे हो सकेले जवन कालजीवी होखे।भोजपुरी के दू गो कविता 'बटोहिया'(1911रघुवीर नारायण) आ 'फिरंगिया' (1921प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिंह) अइसन रचना बाड़ी सन जवनन में आजादी के लड़ाई के स्पष्ट पदचाप सुनल जा सकत बा। ई दूनू रचना दूगो अलगा–अलगा भावभूमि पर ठाढ़ बाड़ी सन।'बटोहिया' में भारत–भूमि के गौरव के गुनगान बा त 'फिरंगिया' में भारत–दुर्दशा के ग्लानिपरक आ पराभव से जुड़ल चित्र देखे के मिल रहल बा।भारत के सांस्कृतिक विभव 'बटोहिया' में प्रभावकारी बा त दोसरा ओर भारत के ऐतिहासिक समृद्धि के विगलित रूप 'फिरंगिया' में वर्णित बा। एह दूनू गीतन में क्रमशः किसानी जीवन के सामर्थ्य आ लाचारी दूनू के उकेराई भइल बा–

1–''सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा से
मोर प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया!
×× ×× ×× ××
जाउ– जाउ भइया रे बटोही हिन्द देखि आऊ
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया!

2–सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा
आज इहे भइल मसान रे फिरंगिया
अन्न धन जन बल बुद्धि सब नास भइल
कवनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया
जहँवाँ थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे
लाखो मन गल्ला आउर धान रे फिरंगिया
उहें आज हाय रामा!माथवा पर हाथ धरे
बिलख के रोवेला किसान रे फिरंगिया।''

– 'फिरंगिया' कविता 56 पाँतिन में रचल मनोरंजन बाबू के अइसन यथार्थपरक रचना बिया जवन भारत के दुर्दिन का ओर इशारा करत स्थितियन में बदलाव खातिर हर संभव प्रयास करत – संकल्पित हो जाए के आह्वान करत बिया।

मास्टर अजीज (कर्णपुरा अमनौर सारण, बिहार)अइसे त एगो कीर्तनिहा गायक कवि रहलें बाकिर उनकरो रचनन में 1942 में आजादी के लड़ाई के दौर में किसानन के सहयोग आ सक्रिय भूमिका के सजीव वर्णन मिलत बा–

''ओने अंगरेजन के गोली
एने किसानन के टोली
गूँजे जय हिन्द के बोली
ओ मढ़ौरा में।''

स्वामी सहजानंद सरस्वती भोजपुरी क्षेत्र के एगो अइसन संत रहनीं जेकर किसानन पर व्यापक प्रभाव रहे।1936 के अप्रैल में 'अखिल भारतीय किसान सभा' के स्थापना करिके किसान हितन के सामाजिक–आर्थिक विकास खातिर महत्वपूर्ण बतावत उहाँ के भोजपुरी के बृहत्तर क्षेत्र में आपन व्यापक प्रभाव छोड़नीं।भोजपुरी आ हिन्दी कवियन पर एह आन्दोलन आ संगठन के व्यापक असर देखे के मिलल।

1938–39 में तत्कालीन सारण आ वर्तमान सीवान जिला के अमवारी गाँव में जमींदार लोग के अत्याचार के विरोध में एगो किसान महापंचायत राहुल सांकृत्यायन जी का नेतृत्व में भइल रहे। एकरा के 'हरबेगारी विरोधी किसान आन्दालन'कहल गइल जवन आखिरी में हिंसक रूप पकड़ लेले रहे।जमींदार लोग के खेती करत हरचलाई बेगारी के तौर पर ना करे के पड़े– एही खातिर राहुल बाबा के नेतृत्व में किसान सभे एकवटल रहे। एह आन्दोलन के दौरान किसान लोग पर लाठीचार्ज भइल आ राहुल बाबा के कपार फाट गइल। घटना के वर्णन एगो भोजपुरी कवि मनोरंजन प्रसाद सिंह के हिन्दी कविता–' राहुल का खून पुकार रहा'' में मिलत बा–

''राहुल के सर से खून गिरे
फिर क्यों यह खून उबल न उठे
साधु के शोणित से फिर क्यों
सोने की लंका जल न उठे?''

1942 ई.में राहुल सांकृत्यायन जी भोजपुरी में एगो नाटक –'जोंक' लिखले रहनीं,

जवना में शोसक वर्ग के तानाशाही से भरल आ वंचक रवैया के बखिया उधेड़ल गइल रहे।एह नाटक के एगो गीत के कुछ पंक्तियन के देखल जा सकत बा–

'' साँझ बिहान के खरची नइखे,मेहरी मारै तान
अन्न बिना मोर लड़िका रोवै,का करीं हे भगवान!
करजा काढ़ि–काढ़ि खेती कइलीं,खेतवै सूखल धान
बैल बेंचि जमींदरवे के दिहलीं,सहुआ कहै बेईमान।''

–एजवा किसान के वास्तविक हालत के पूरा सच्चाई के साथ वर्णन कइल गइल बा।

बिहार किसान आन्दोलन के किसान गीतन में स्वतंत्रता के बाद के किसान–मजदूर राज्य के स्थापना के वैकल्पिक यूटोपिया बाटे।खडगधारी मिश्र उर्फ तुरिया बाबा तुम्मा बजावत मध्य बिहार के गाँवे–गाँव जाके किसान–जागरण करत रहलें–

''फिरंगिया के राज जब देसवा से मिट जाई
जमींदारी परथा खत्म जब होई जाई
खेतवा के मालिक किसान सब होई जाई
एकरे के कहे हे सुराज हो बुधन भाई!''

वर्तमान सीवान जिला के दुरौंधा प्र खंड के कोड़ारी गाँव के निवासी गोस्वामी चंद्रेश्वर भारती के किसान कवितो में आजादी मिलला के बाद किसान– राज कायम करे के कामना बा।अइसन किसान–राज जेमें गैरबराबरी ना होखे, सामाजिक–धार्मिक सद्‌भावना होखे–

''हम राज किसान बनइतीं हो
भरपेट भोजन सबके दीतीं दुखी न कहवइतीं हो
छुआछूत के भूत भगइतीं सरिता प्रेम बहइतीं हो
हिन्दू –मुस्लिम भाई के हम एके मंत्र पढ़इतीं हो ।''

डुमराँव (बक्सर जिला) निवासी भोजपुरी कवि विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' भारत के विकास में किसानन के महती भूमिका के समुझत लिखले बाड़ें–

''भइया ! दुनिया कायम बा किसान से
साँचे किसान हवन तपसी तियागी
मेहनत करेले जीव–जान से ।
जेठ में जेकरा के खेते में पइबे
जब बरसेले आगि आसमान से ।
झमकेला भादो जब चमकी बिजुरिया
हटिहें ना तनिको मचान से ।
दुनिया के दाता किसाने हवन
जा पूछे नू पंडित महान से ।
गरीब किसान आज भूखे मरत बा
करजा गुलामी लगान से ।
होई सुराज ते किसान सुख पइहें
असरा रहे ई जुबान से ।
भारत के 'शैदा' किसान सुख पावसु
बिनत बानीं भगवान से ।''

भारत के स्वतंत्रता–संघर्ष–काल से जुड़ल भोजपुरी कवितन के देखला–पढ़ला के बाद ई कहल जा सकत बा कि एह में किसान –चेतना भूमि से मातृभूमि, धरती माता से भारतमाता आ वग. मुक्ति से राष्ट्रमुक्ति के ओर अभिमुख बिया।अभिजन राष्ट्रवाद से उबरे खातिर ई किसान कविता कबो भाग–भरोसे हो जात बिया ते कबो बेचौनी में झंडा आ लाठी– डंडा उठा लेत बिया–

''ललका झंडवा आउर मोटका डंडवा
लेके ललकारे हो!
उनकर साँस बंद हो जाय ।
बहुत दिन से निचले खसोटलन
इन सबका बदला लेहु चुकाय
बिना क्रांति के विजय न होई
चाहे करिहौं कोटि उपाय।''

(किसान नेता राघवशरण शर्मा से मिलल किसान कविता)

आजादी हासिल भइला के बाद 'जय जवान जय किसान' के नारा त खूब लागल बाकिर किसानन के माली हालत में कवनो सुधार ना भइल।खेती –किसानी दिन –पर– दिन काफी मँहगा धंधा होत गइल।कृषि– उत्पादन के वाजिब दाम मिलो ,समुचित बाजार मिलो,किसान के सस्ता दर पर सिंचाई–सुविधा मिलो, ओकरा सस्ता दर पर सब्सिडी के साथे बढ़िया खाद–बीया मिलो–एह बात के खेयाल शासन–तंत्र ना रखलस ।नतीजा भइल कि बड़का खेतिहर तक आपन जमीन बेचि–बेचि शहर पराये लगलें।जेकरा लाचारी रहल उहो ढेर दिन ले थुथुर पर लाठी ना आड़ सकल।किसान आजिज आके आत्महत्या करे लगलें।भोजपुरी के स्वातंर्त्योत्तर किसान कवितन के एही पृष्ठभूमि में पढ़ल –समझल वाजिब होई।

————————————OO————————————

(क्रमशः अगिला अंक में जारी)

❑❑

❍ **क्वार्टर नंबर–जी/3**
आफिसर्स फ्लैट,
भारतीय स्टेट बैंक के समीप,
न्यू पुनाईचक ,पटना–800023

लोक–परंपरा आ लोकगीतन में खेती–किसानी, परब–त्योहार

केशव मोहन पाण्डेय
साहित्य संपादक

जब कवनो परब–त्योहार, पूजा–पाठ के बेरा आवेला त हमके आपन लइकाईं के ईयाद आवे लाग. ला। लइकाईं के ईयाद आवे लागेला त माई के ईयाद आवे लागेला।चैत में रामनम्मी के पूजा होखे भा वैसाख के सतुआन के बाति, जेठ के गंगा दशहरा में नारायणी में नहान होखे भा आषाढ़ में आद्रा मनावल। सावन में शिव जी के पूजा होखे भादो के कृष्ण जन्माष्टमी, लइकाई हर महिना में, हर परब–त्योहार पर जाग जाले। सावन में माई के ईयाद आवते बेलपत्तर पर चंदन के लेप से राम–राम लिख के शिव जी के पूजा कइल, सावनी सोमार के व्रत आ फेर सावनी अंजो के पंचमी के नामपंचमी। तब नागपंचमी के तनी अलगहीं उछाह होत रहे। बिहानहीं गाय के गोबर आ पिअरका सरसों से घर के चारू ओर घेरा बनावल जाव आ फेर दुआरी पर नाग बाबा के चित्र बनावल जाव। कटहर के पतई के दोना बनाके ओहमें धान के लावा आ दूध चढ़ा के नाग देवता के पूजा कइल जाव। ओह पूजा में अछात आ उजर फूल के ढेर धेयान राखल जाव। तबो आ आजुओ भारतीय संस्कृति के सामने अनासो माथ नत हो जाला।

भारत के संस्कृति बड़ा अल्हड आ बहुरंगी हवे। हमनी के संस्कृति डेगे–डेगे पशु–पक्षी, वृक्ष–वनस्पति, पहाड़–नदी, सुरुज–चनरमा, सबके साथेअपनापन के आ मानवता के संबंध जोड़े के प्रयास कइल जाला। हमनी किहाँ पेड़–खूँट के पूजा होला। नदी–पानी के पूजा होला। एतने ना, हमनी किहाँ गाय–गोरू के पूजा होला। वृषभोत्सव के दिन बैलन के पूजाकइल जाला। वट–सावित्री जइसन व्रत–पूजा में बट–बरगद के पूजा होला। आँवरा एकादशी के दिने आँवरा के पेड़ के पूजा होला, बाकिर जब हमनी का नागपंचमी जइसन दिने नाग बाबा के पूजा करेनी जा, तब तऽ हमनी के संस्कृति के विशिष्टता के पराकाष्टा बुझाला। विषधर के पूजा भारत के संस्कृति के पराकष्ठेत हवे, ऊँचाइए त हवे। सोचीं ना, नाग हमनी के कवना कामे आ सकेले, उल्टे जदि काट दे त राम नाम सत्त हो जाई, बाकिर नाग के देवता के रूप में स्वीकारल आ पूजा करे में आर्य लोग के हियरा के चाक भइला के दर्शन होला। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के साथे आगे बढ़त आर्य लोग के अलगा–अलगा उपासना करत ढेर समूहन के संपर्क में आवे के पड़ल होई।

नागपंचमी के नाग देवता के पूजा कइल जाला। ओह दिने नाग–साँप के देखला–दर्शन कइला के ढेर महातम होला। ओह दिने साँप के मारला के मनाहीं हवे। ओह दिने धरती कोड़ल–खोंदल मना हवे। ई त सभे जानेला कि भारत एगो खेती–प्रधान देश हवे। एहिजा आजुओ 80 प्रतिशत लोग खेती–किसानी से जुड़ल बाड़े। साँप के क्षेत्र–पाल कहल जाला। साँप खेत–कोला के रखवारी करेवाला जीव हवे। जीव–जंतु, चूहा–टिड्डा आदि जवन फसिलन के नोकसान करे वाला जीव–जन्तु, कीड़ा–मकोड़ा होले, ओह सबके नाश कके साँप किसान के खेत–खरिहान के हरा–भरा राखेला। नागपंचमी के दिन पूजा में दूध–लावा चढ़ावल, खेतीए के प्रधान के पूजा के संकेत हवे। एह से कहल जा सकत जाता कि नागपंचमी के पूजा खेती–किसानी से प्रेरित हवे।

सगरो सृष्टि के हित खातिर बरसत बादर के कारने पराइल साँप जब हमनी के घरे अतिथि–देवता बनिकेआवेला तब ओहके आश्रय आ आसन देके कृतज्ञता से ओह के पूजलहमनी के कर्तव्य हो जाला। एह तरे नागपंचमी के उत्सव सावने में राखिके ऋषि–मुनि लोग ढेर महातम देखवले बा लोग। एतने ना, जहां ले मनई के बात बा, त प्रकृति के बिना ओकर कवनो संस्कृति फलले–फूलल नइखे। बाति चाहें सभ्यता के विकास के होखे चाहे सृष्टि के सुबास के, मनई जीव–जंतु, गोरू–पशु, पेड़–खूंट, खेती–खरिहान, फल–फूल आदि के बहाने सदा प्रकृति से जुड़ल रहल बा।

मनई के जिनगी में खेती–किसानी आ परब–त्योहार वरदान जइसन बा। काहें कि मनई लोक में जीए वाला जीव हवे आ लोक–जीवन में ओकर सगरो क्रिया–कलाप धार्मिकता से जुड़ल मिलेला। केहू एह के कारन कुछू बुझेऽ। चाहे अपना पुरखा–पुरनिया के अशिक्षा आ चाहे आदमी के साथे प्रकृति के चमत्कार लागे वाला व्यवहार;भारत के दर्शन के मानल जाव तऽ आदमी के जीवन में सोलह संस्कारन के बादो अनगिनत व्रत–त्योहार, जग–परोजन रोजो मनावल जाला। लोक–जीवन के ईऽ सगरो अनुष्ठान, संस्कार, व्रत, पूजा–पाठ, मंगल कामना से प्रेरित होला। ई सगरो मांगलिक काज अपना चुम्बकीय आकर्षण से नीरसो मन के अपना ओर खींच लेला। एहिजा खेती के मूठ लेहले से ले के रास बढ़ावे ले के, जांत चलावे से ले के अनाज

के फटके–ओसावे ले, रोपा कइला से ले के, सोहनी लगववला ले, हर अवसर पर औरत लोग अपना कोकिल सुर–लहरी से अंतर मन के उछाह प्रकट करेला लोग। औरतन द्वारा गावे वाला गीतन में अवसर के अनुसार वर्णन के विषय तऽ होखबे करेला, सथवे ओह लोक–गीतन के उछाह में प्रकृतियो के नइखे भुलावल जा सकत। मंगल कामना वाला ओह लोक–गीतन में प्रकृति के सुन्दरता के साथ बनल रहेला।

साँच कहल जाला कि लोकगीत तऽ प्रकृति के उद्‌गार होला आ खेती–किसानी से अधिका प्रकृति से अउरी कवना में लगाव बा जी, नगदीकी बा जी? साहित्य के छंदबद्धता आ अलंकारन से मुक्त मानवीय संवेदना के संवाहक के रूप में मधुरता बहा के आम आदमी के भी तन्मयता के लोक में पहुंचा देला। लोकगीत तऽ सामान्य आदमी के सहज संवेदना से जुड़ल रहेला। ओह गीतन में प्रकृति के सौंदर्य के बड़ा बढ़िया प्रस्तुति कइल गइल बा। प्रकृति के वर्णन बा तऽ मन–भावनी सावनी महीनो के वर्णन मिली। सावन के अँजोरिया के पंचमी के दिन 'नागपंचमी के परब' परंपरागत श्रद्धा आ विश्वास के साथे मनावल जाला। त सथवे सावन के महीना में प्रकृति के हरिहरी भरल सुन्दरता चारू ओर परिलिक्षत होला। आकाश में करीआ–करीआ बदरी देख के संयोगिनी औरत पेड़ पर झूला डाल लेली। ओह बेरा झूला झूलत जवन गीत गावल जाला, ओह के कजरी कहल जाला। कजरी में बेला–चमेली आदि के फूल फूलाइल बल्लरीअन के सुन्दर वर्णन मिलेला। "बेला फूले असमान/गजरा केकरा गरे डालीं जी।"

प्रकृति के संगीतमयी कहल जाला। जब प्रकृति गुनगुनाले तबे लोकगीतन के वास्तविक जनम होला। तरह–तरह के दृश्यन के सहज असर के कारने तऽ लोकगीत प्रकृति के रस में लीन हो जाले। कजरी, झूला, हिंडोला, आल्हा, गोधन, छठ आदि एकर प्रमाण हऽ। कातिक के अँजोरिया छठी के छठ व्रत कइल जाला। ओह अवसर पर निर्जलो व्रत रहला पर औरत लोग भाव–विभोर हो के गीत गावेला लोग। ओह गीतन में धार्मिक मनोभाव उजागर होला। धरम के नाम पर प्रचलित विश्वास पारिवारिक विचार के बल देला। ऊहे पारिवारिक विचार, घरेलू निष्ठा आ आत्मा के संयम आदि छठ गीत के विषय हऽ। ओह गीतन में हर जगह खेती–किसानी के उपज आ मनई के मेहनत के सु–फल कोंहड़ा, नेबूआ, केरा, हरदी, ओल, कोन, सुथनी आदि सामानन के वर्णन मिलेला। "कवन देई के अइले जुड़वा पाहुन/केरा–नारियर अरघर लिहले।"

सामाजिकता के जिंदा राखे खतिरा लोकगीतन में लोक–संस्कृतियो के सहेजल जरूरी बा। खेती–किसानी सबसे बड़का लोक–संस्कृति हवे। एकरा बिना निपढ़ से नागर ले; अमीर से गरीब ले; केहू को जिनगी नइखे कटि सकत। कहल जाला कि लोकगीत ना रहित तऽ पागलन के संख्या बढ़ गइल रहित। एतने ना, लोकगीतन के कारने ही आजुओ सबके आपन गाँव–गिराव ईयाद आवेला, खेती–किसानी के रूप–रंग ईयाद आवेला, फल–फसिल के फलित होत रूप ईयाद आवेला। आजुओ ईहाँ के गाँवन में, जहवाँ छठ, पिड़िया, बहुरा, पनढरकऊआ आदि लोक व्रत–त्योहार लोक उत्सव के रूप में जीवित बा, ओहिजा प्रकृति जीवित बाऽ, दूर–देश में रहलो पर खेती–बाड़ी के रहन–सहन जीवित बा। शहर के गति से पिछुआइल लोक–गाँवन में सालो भर मौसम के अनुसार फल–फूल, साग–सब्जी के मनमौजी लता–लड़ी बेसुध होके घरन के छत–छान्ह पर पसरल रहेली आ अपना उन्मादल हरिहरी से मानव–मन के आकर्षित करत रहेली। ई सब किसान लोग के जिद्‌दी कर्म के कारने संभव होला आ ओही पावन कर्मवे के कारन सगरो मोहबो करेला। "केरवा जे फरेला घवद से/ओहपर सुगा मेरड़ाय।"

बियफे के पूजा में केरा के पूजा होखे चाहें रोजो साँझि के तुलसी के पूजा, प्रकृति रानी सब जगह वर्णित रहेली। खेती के हर रूप अपना सरूप में सोंझा झलकत रहेला। हर मांगलिक अवसर पर एगो झूमर में तुलसी माई के वर्णन देखीं, "अपने त जाले रामजी कासी नहाए/हमरा के छोड़ले महा जाल/अकेले जीअरा तुलसी के/छोड़ दिहले राम।"

पेड़धन, पशुधन, पोसुवाधन; ई सब किसान–जिनगी के संपदा हवे। लोक में एह सब के बिना ना कवनो मांगलिक काज होला आ ना कल्पना कइल जाला। आंवला, पीपर, आम, बरगद के बात होखे भा पंचवटी के कल्पना, कर्म के हरेक कियारी में कृषि–जीवन करीब से लउकेला।

राम जी मर्यादा पुरुषोत्तम के सथवे लोक–जीवन के महानायक हवें। मांगलिक गीतन में राम–कृष्ण के चर्चा जरूर होला। राम जी के बारात के आराम करे खातिर बरगद, आम आ महुआ के जुड़ल पेड़ अच्छा मानल जाला। देखीं एगो बिआह के गीत जेहमें सबके वर्णन बा, "अमवा महुइया, बरगद जुड़ी छँइया/आरे जँहवा तेतर के ई गाछ/ऊहे दल उतरी।" एही तरे बिआह के विधान में चउथारी होला। ओह चउथारी में ईनार के साथे पीपरे के पेड़ के परिक्रमा कइल जाला। चउथारी के

अलावा धार्मिको लगााव के कारन पीपर के पेड़ के वर्णन लोक–कंठ से खूबे होला।

ध्यान से देखल जाव तऽ भोजपुरी में देवीओ–देवता से जुड़ल अनगिनत गीत मिलेला। आराधना करे वाला लोग अपना–अपना तौर–तरीका से अपना आराधक के कृपा पावे के बेचैन लउकेला लोग। ओह आराधक लोग पर आधारित गीतन में लवंग, इलायची, पान, सुपारी के वर्णन खूबे मिलेला। ई सगरो कृषिए के रूप हवे। ''सुन्दर बा सेनुरा/सुन्दर लवंगीया/सुन्दर बा पान–सुपारी/हे मइया!खोलीं केंवाड़ी।''

सामाजिक सोच में किसानी के काम हमेशा पाछे राखल गइल बा, किसान लोग हमेशा दबावल गइल बा लोग। ओह लोग के हमेशा गरीबी के पर्याय मानल गइल बा बाकिर ई सोचत बेरा कंप्यूटर से तेज चले वाला मनई के दिमाग के ना जाने कवना अहंकार के घून खा जाला कि लोग बुझतो–समझत बेरा ई ना स्वीकारेला कि जदि सभे खेती–किसानी छोड़ दे त मनई अपना दिमागी ताकत के चाटते रहि जाई, सगरो संसार ओल्ह गावे चलि दी। वर्तमान समय में आधुनिकता शहरन से हो केऽ भले गाँवन–देहातन के लोक–जीवन में आपन रंग जमा लिहले बाऽ, बाकिर आजुओ कवनो किसान अपना खेत से मुंह मोड़े के ना चाहेला। ऊ अपना कर्म के मरम जानत अपना कपार के पसेना पोंछल अपना किस्मत के लकीर के फेर से बनावे में जुटि जाला। एह तरे से बात लोक–परंपरा के कइल जाव चाहें परब–त्योहार के किसान के किसानी के हर जगहा उपस्थिति लउके ला। ई उपस्थिति सबसे जीवट होले, सबसे चोखगर होले आ सबसे समृद्ध होले।

बाति–बहाना कवनो होखे, मन–मिजाज केहू तरे के होखे, जे तरे मनई अनाज खइला बिना नइखे रहि सकत, ओही तरे खेती–किसानी के बिना लोक–परंपरा आ लोक–गीतन के सरसता आ आकर्षण नइखे रहि सकत। आजु खेत बिलात जात बा, किसान किसानी छोड़त जात बाड़। त, एह समय सरकार के, सरोकार के, समाज के आ सबसे ढेर तथकथित सभ्य समाज के ई जिम्मेदारी बनत बा कि किसान लोग के काज के सम्मान होखे आ सम्मानजनक मूल्य मिले। जेतना संभव होखे, सुविधा दिहल जाव। सबसे अनुरोध करत हम त इहे कहेब–

''खेतवा बचाईं
बचाईं किसान के
नाहीं तऽ
हहरे के पड़ी
एक चिटुकी पिसान के।''

❑❑

❍ राजापुरी, नई दिल्ली–59

सरोज त्यागी
सहायक सम्पादक

गीत

आयल सवनवां बोलावै ला सिवनवां,
कोइलर सुनावै मीठी तान,
चला पिया तलवा में रोप आई धान।
चला पिया तलवा में रोप आई धान।।

झउआ ,कटारी अ फरसा कुदारी,
चलैं किसान अउर चल देहलीं नारी,
हियरा में होला गुमान।
चला पिया तलवा में रोप आई धान,
चला पिया तलवा में रोप आई धान।।

जोन्हरी अ बजरा,जवार आउर रहरी,
जेहरें निहारा देखाला हरियरी।
देख देख बिहंसै परान।
चला पिया तलवा में रोप आई धान,
चला पिया तलवा में रोप आई धान।।

ताल तलइया,पोखरवा के देखा,
धरती क धानी अचरवा के देखा।
हो के पुरवा चलत बा उतान।।
चला पिया तलवा में रोप आई धान,
चला पिया तलवा में रोप आई धान।।

अबकी सवनवां गोदनवां गोदइबै,
निबिया के डरिया झुलनवां डलइबै,
गूंजी कजरिया क गान ।।
चला पिया तलवा में रोप आई धान,
चला पिया तलवा में रोप आई धान।।

❑❑

❍ गाजियाबाद,(उ0 प्र0)

संजीव कुमार त्यागी

ए सरकार! किसान हईं हम

रउवा सूरुज अस चमकीलाँ, जग में जगमग बा रउए से।
राई से पर्वत ले इहवाँ, जे बा ऊ सब बा रउए से।
बाकिर अपनो अँगनइया के, लिलरा चमकत चान हईं हम,
बखरा में अन्हियारी ढोवत, ए सरकार, किसान हईं हम।।

कहे अन्नदाता सब हमके, नित–नित नव जसगीत रचावे।
जय किसान भाषण में बोले, धरती के भगवान बतावे।
नारा भाषण कविताई में, जे हमरा के पूज्य कहेला,
उहे लोग सोझाँ परला पऽ, खेतिहर सुनते मुँह बिजुकावे।
डेग–डेग पर होखे वाला, सनमानित–अपमान हईं हम।
बखरा में अन्हियारी ढोवत, ए सरकार, किसान हईं हम।।

हाँड़ गला के धरती से हम, हीरा–मोती उपजाईलाँ।
ओहूके बेचे खातिर फिर, दर–दर के ठोकर खाईलाँ।
नाक बचावत घर सहियारत, बोझ बढ़ल जाला कर्जा के।
माटी मिल जाले माटी में, तबहूँ उरिन न हो पाईलाँ।
भीतर से हहरत–हपसत हिय, ऊपर–मुख मुस्कान हईं हम,
बखरा में अन्हियारी ढोवत, ए सरकार, किसान हईं हम।।

फाटल के सीयत सँझुरावत, झेलत खेपत जिनगी जाले।
बेटी के सादी, बेटा के, रोजगार के चिन्ता खाले।
दुनिया के सुख देखीलाँ तऽ, जियरा छने–छने छछनेला,
ओकर सुनला पर तन फाटे, थाती पुरखन के बिक जाके।
सबके देखत मरत मुआवत, मनवाँ के अरमान हईं हम।
बखरा में अन्हियारी ढोवत, ए सरकार, किसान हईं हम।।

घाम–छाँह पाला–तुषार के, असमय बिजुरी खूब गिरावस।
रउवा पर का दोष लगाईं, हमके भगवानो डहकावस।
जीव–जन्तु जन अउर महाजन, सभकर हिस्सा बा हमरे में,
अनगिन रूप बना के ऊहो, हमरा पर आफत बरिसावस।
श्राप कहेलन जेके 'त्यागी', बिधि के ऊ बरदान हईं हम,
बखरा में अन्हियारी ढोवत, ए सरकार, किसान हईं हम।।

❑❑

❍ गाजीपुर उत्तर प्रदेश

संतोष भोजपुरिया

गीत

आन ,बान, शान,हमरा देश के किसान,
जनि करी अपमान,उ त हउवे भगवान।

दिन नाही रात देखस , आँधी ना पानी,
बाल, बच्चे सभे मिले खेत खरिहानी,2
मड़ई, पलानी उनकर हउवे अटरिया,
लाकर, तिजोरी उनकर प्राण के गेठरिया,
फल, फूल,साग,पात 2 देत गेहूं धान ।
उ त हउवें भगवान, जनि करी अपमान ।

जाड़ा,पाला, लूह में भी करेले खटनिया,
सुखल,पाखल खाई, जाके सुतेले बथनियां।
माल, मवेसी, खेती उनकर ह खजाना,
रोजी, रोजगार नइखे दूसर कुछ ठिकाना।
अन्नदाता नाम उनकर 2 बाड़े परेसान।
उ त हउवे भगवान, जनि करी अपमान।

सुदी, उधारी लेके किनलस खाद, पानी
बड़ा दरद भरल बा, किसान के कहानी।
कबो सुखार ,कबो डुबेले दहाड़ में,
होखे ना अनाज ,फंसी जाले मजधार में।
नाही दुख नेता सुने,नाही सरकार
उ त देत बाड़े जान।
उ त हउवे भगवान, जनि करी अपमान।

नाही कौनो शौख नाही फैशन के भूख बा,
धरती के पूत उनका माटिये में सुख बा।
फाटल बेवाय ,सड़ल पानी से गोर बा,
झुठहुँ के जय किसान,जय किसान शोर बा।
देवे के दहेज नइखे2 घर मे बेटी बा जवान ।
उ त हउवें भगवान, जनि करी अपमान।

बाल– बच्चा नाही , कइले पढ़ाई,
आइल नही पइसा बिनु, बाबू के दवाई।
लेके अनाज घुमस हाटे बाजारे,
कउड़ी के भाव मे,मांगे लोग उधारे।
धइके कपार रोअस,2 छूटल बाबूजी के प्राण ।
उ त हउवे भगवान, जनि करी अपमान।

आन , बान , शान हमरा देश के किसान ,
जनि करी अपमान,उ त हउवे भगवान।
जनि करी अपमान।

❑❑

❍ गाजियाबाद,(उ0 प्र0)

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी
डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

आजीवन : 5100/– संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।